दक्षिण अमेरिका की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Dakshin America Ki Lok Kathayen (Folkales of South America)
Cover Page picture: Christ, The Redeemer, Rio de Janeiro, Brazil
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of South America

12 Countries of South America:
(1) Argentina, (2) Bolivia, (3) Brazil, (4) Chile, (5) Colombia, (6) Ecuador, (7) Guyana, (8) Paraguay, (9) Peru, (10) Surinam, (11) Uruguay, (12) Venezuela,

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

दक्षिण अमेरिका की लोक कथाऐं 7

1 सूरज के बच्चे 9

2 लोमड़े का गर्मी का सौदा 15

3 अरमाडिलो का गीत 20

4 बड़ी आग के बाद 25

5 ब्राज़ील के बीटिल को उनका कोट कैसे मिला 30

6 चॉद की मारी 35

7 एक मछियारे के बेटे के कारनामे 43

8 झरने की कहानी 57

9 चिड़ियों का राजा 71

10 एक बड़े साइज़ के आदमी का शिष्य 77

11 कहना न मानने वाला बेटा 84

12 डोमिंगो का बिल्ला 90

13 चतुरायी की खोज 95

14 माफूमीरा की कहानी 102

15 सबसे सुन्दर राजकुमारी 110

16 एक जंगली लड़का और एक नीच बड़े साइज़ का आदमी 126

17 छोटे केंकड़े की जादुई ऑखें 141

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

दक्षिण अमेरिका की लोक कथाऐं

दुनियॉ के पश्चिमी हिस्से का, यानी कि नयी दुनियॉ का, यानी कि उत्तरी अमेरिका और दक्षिण अमेरिका महाद्वीपों का छह सौ साल से पहले दुनियॉ के नक्शे पर कहीं कोई निशान नहीं था। सबसे पहले किस्टोफर कोलम्बस ने **1492** और अपनी अगली चार यात्राओं में इन दोनों महाद्वीपों की धरती पर कदम रखा। उसके बाद तो फिर कई देशों के लोग यहॉ आ कर बसने लगे। उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में तो बहुत देशों के लोग बसते हैं पर दक्षिणी अमेरिका की सभ्यता और संस्कृति अधिकतर स्पेन और पुर्तगाल की है।

जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी और खुली थी तब तक ये दोनों महाद्वीप, यानी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दोनों महाद्वीप एक ही थे – नयी दुनियॉ या अमेरिका। पनामा कैनाल बन जाने के बाद ही ये दोनों जमीन के टुकड़े अलग अलग हो पाये – उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका। दक्षिणी अमेरिका को "लैटिन अमेरिका" भी कहते हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप में बारह देश हैं और दो टैरिटरीज़ हैं फिर भी आसानी के लिये हमने पनामा कैनाल के दक्षिण के पूरे हिस्से को दक्षिणी अमेरिका में ले लिया है।

वहॉ के लगभग सब देशों में स्पेनिश और पुर्तगाली भाषा ही बोली और समझी जाती है। सभी देशों की भाषा स्पेनिश और पुर्तगाली होने के कारण वहॉ का साहित्य अन्य अंग्रेजी बोलने वाले देशों में आसानी से प्रचलित नहीं है। यहॉ लोक कथाऐं भी बहुत कम पायी जाती हैं।[2]

दक्षिणी अमेरिका की लोक कथाओं की बहुत कम पुस्तकें मिलती हैं। हम यहॉ पर दक्षिणी अमेरिका के कुछ देशों की कुछ लोक कथाऐं इन्टरनैट की कई साइट्स[3] से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि कम से कम ये कुछ लोक कथाऐं तुम लोगों को वहॉ के जीवन के बारे में कुछ बताने में सहायक होंगी।

---

[1] Panama Canal – opened on 15 August 1914, is a man-made 48-mile (77 km) waterway in Panama that connects the Atlantic Ocean with the Pacific Ocean. The canal cuts across the Isthmus of Panama and is a key conduit for international maritime trade. There are locks at each end to lift ships up to Gatun Lake, an artificial lake created to reduce the amount of excavation work required for the canal, 85 feet (26 metres) above sea level. The original locks are 110 feet (33.5 metres) wide.

[2] Mike Lockette writes while collecting their folktales – "People haven't lived in the Galapagos Islands long enough for there to be any folk tales. However, the *Bewitched Islands* have a lot of stories about ghosts, murderers, strange inhabitants and prison colonies. Even on the mainland of Ecuador, I couldn't find any tales. When I tried to explain what I wanted, I only got blank expressions from people who never heard of any folk tales from their country. So, I went back to the beginnings of the Inca empire which stretched from Colombia, Ecuador and Peru to Bolivia, Argentina and Chile.

[3] http://www.mikelockett.com/stories.php

Some Resources on South American Folktales

Four tales are given on this page
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales.html

PLUS the following two books :-

Eells, Elsie Spicer
Fairy Tales from Brazil : how and why tales from Brazilian folklore. Chicago, Dodd, Mead and Company, Inc. 1917. (18 folktales)

Eells, Elsie Spicer
Tales From Giants From Brazil : the second book. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. (12 Folktales)

1 सूरज के बच्चे[4]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका की इनका सभ्यता[5] के लोगों की लोक कथाओं से ली गयी है।

जब सूरज देवता ने अपनी बनायी दुनियॉ की तरफ नीचे देखा तो उन्होंने नदियों में चमकता हुआ साफ पानी नहीं देखा, उन्होंने चमकीली हरी घास से ढके पहाड़ भी नहीं देखे। उनको तो केवल आदमी ही दिखायी दिये और उनको देखने से भी उनके चेहरे पर मुस्कुराहट भी नहीं आयी। क्यों?

सूरज देवता बुदबुदाये — "उफ़ ये लोग बेचारे कितने दुखी हैं। ये लोग धरती पर जंगली जानवरों की तरह घूम रहे हैं। यह तो अच्छी बात नहीं है।

---

[4] The Children of the Sun - a folktale from Incas, South America. Adopted from the Web Site : http://www.themuralman.com/ecuador/galapagos_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin
[Note of Philip Martin – People haven't lived in the Galapagos Islands long enough for there to be any folk tales. However, the Bewitched Islands have a lot of stories about ghosts, murderers, strange inhabitants and prison colonies. Even on the mainland of Ecuador, I couldn't find any tales. When I tried to explain what I wanted, I only got blank expressions from people who never heard of any folk tales from their country. So, I went back to the beginnings of the Inca Empire which stretched from Colombia, Ecuador and Peru to Bolivia, Argentina and Chile.]

[5] Inca Empire, the largest empire in pre-Columbian America, stretched about 2,500 miles long along the Andes Mountains from Columbia to Chile and reached from West to East, coastal desert Atacama to steamy Amazonian rain forest. Everything was centered in Cuzco, the modern-day Peru. It arose in 13th century.

मैंने ऐसा तो नहीं चाहा था कि ये लोग इस तरह से रहें। मुझे अपने इन लोगों को अच्छी ज़िन्दगी बिताना सिखाने के लिये कोई न कोई तरीका जरूर सोचना चाहिये।"

सूरज देवता ने दुखी हो कर अपना सिर हिलाया और फिर बोले — "मुझे इन लोगों के लिये कुछ न कुछ जरूर सोचना चाहिये। मैं क्या करूँ?"

और फिर उनको अपने आदमियों के लिये कोई तरकीब सोचने में देर नहीं लगी। थोड़ी ही देर में उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट दौड़ गयी।

उन्होंने सोचा — "मुझे इस मामले में अपने एक बेटे और एक बेटी की सहायता लेनी ही पड़ेगी।" सो उन्होंने अपनी बेटी मामा और अपने बेटे मैन्को[6] को बुलाया।

उन्होंने उनसे कहा — "मेरे बच्चों, मैंने तुम्हारे लिये एक प्लान सोचा है। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग धरती पर जाओ और वहाँ रहने वालों को यह सिखाओ कि वे अपनी ज़िन्दगी किस तरह से और अच्छी बना सकते हैं।"

तीनों ने ऊपर आसमान से नीचे धरती की तरफ देखा तो सूरज देवता बोले — "मैं इनको रोशनी और गर्मी देता हूँ। मैं इनकी रक्षा करता हूँ। मैं दिन में इनके खाने को उगाने में सहायता करता हूँ और रात में आराम देता हूँ।

[6] He called his daughter Mama and son Manco.

मैं धरती पर अपने इन बच्चों को ज़िन्दगी देने वाला हूँ पर हर दिन जब भी मैं आसमान से हो कर गुजरता हूँ तब तब मैं उनको दुखी ही देखता हूँ। इन लोगों को पता ही नहीं है कि इनको अच्छी तरह से कैसे जीना चाहिये।"

मामा और मैन्को ने पूछा — "पर हम इनकी सहायता किस तरह कर सकते हैं पिता जी?"

"मेरे बच्चों, मैं चाहता हूँ कि तुम लोग जा कर इनको पढ़ाओ। ये लोग बे पढ़े लिखे हैं। इस दुनियाँ में ठीक से जीने के लिये तुम इनको न्याय और दया सिखाओ।

इनको आपस में मिल कर रहना सीखना चाहिये बजाय इसके कि ये लोग जानवरों की तरह एक दूसरे से लड़ते रहें। जैसे मैंने तुमको सिखाया है उसी तरह से अब तुम जा कर इनको सिखाओ।"

मामा और मैन्को धरती पर जाने के लिये तैयार हो गये। जब उनके जाने की सब तैयारियाँ हो गयीं तो सूरज भगवान उनको आसमान के दरवाजे तक ले कर आये।

उन्होंने उनको एक सुनहरी डंडा दे कर कहा — "मैं तुम लोगों को यह सुनहरी डंडा दे रहा हूँ। इस डंडे को वहाँ इस्तेमाल करना जब तुमको यह मालूम करना हो कि तुमको कुज़्कू[7], यानी सूरज का शहर, कहाँ बनाना है।

[7] Cuzco - the City of the Sun. Cuzco, often spelled Cusco and pronounced as Cuzkoo, is a city in South-Eastern Peru.

जब तुम धरती पर घूम रहे होगे तो हर रात इस डंडे को धरती में गाड़ना। अगर यह डंडा धरती में गड़ जाये तो उससे तुम्हें पता चल जायेगा कि वहॉ की जमीन बहुत अच्छी है और वहीं तुमको कुज़्कू बसाना है। मैं चाहता हूँ कि वहीं मेरा शहर बनाया जाये।"

मामा और मैन्को धरती पर आये तो सबसे पहले वे टिटीकाका झील[8] के पास उतरे। मामा उस झील को देख कर चिल्लायी — "भैया देखो न, यह जगह कितनी सुन्दर है। मुझको तो लगता है कि यही वह जगह है जहॉ हमको अपना शहर बनाना चाहिये।"

पर जब मैन्को ने वह डंडा वहॉ धरती में घुसाने की कोशिश की तो वहॉ तो वह उसके अन्दर घुसा ही नहीं।

मैन्को बोला — "नहीं बहिन, यह वह जगह नहीं है। यहॉ तो हमारा यह डंडा घुस ही नहीं रहा है। हमको अभी उस जगह को देखते रहना चाहिये जहॉ यह डंडा जमीन में घुसेगा।"

हर शाम वे दोनों उस डंडे को धरती में घुसा घुसा कर देखते रहे पर वह डंडा कहीं भी नहीं घुसा। फिर वे उस झील वाली जगह छोड़ कर पहाड़ों की तरफ बढ़ गये।

जैसे जैसे वे पहाड़ पर ऊॅचे और ऊॅचे चढ़ते गये तो वहॉ रहने वाले लोग कम होते गये। पर वह डंडा कहीं भी घुस कर नहीं दिया।

[8] Lake Titicaca – is a large deep lake in the Andes Mountains on the border of Peru and Bolivia. By the volume of the water it is the largest lake on the South American continent, and the highest navigable lake in the world with the surface elevation of 12,500 ft.

एक दिन दोनों भाई बहिन लोगों की नजरों से छिपी हुई एक घाटी में आ निकले। वहॉ कोई नहीं रहता था।

उसको देख कर मामा बोली — "देखो न भैया, यह जगह भी कितनी हरी भरी है। मुझे लग रहा कि यही वह जगह होगी जहॉ हम अपना शहर बनायेंगे। ज़रा पिता जी का दिया हुआ डंडा यहॉ घुसा कर देखो तो।"

मैन्को को भी लगा कि शायद वही वह जगह होगी जहॉ हम अपना शहर बसा सकते हैं सो वह बोला — "हॉ लगता तो कुछ ऐसा ही है कि यही वह जगह है। देखो हमारे पिता जी भी हमारे ऊपर चमक रहे हैं।

मुझको लगता है कि हम उस पहाड़ी की चोटी पर शाम तक पहुॅच जायेंगे तब हम इस डंडे को वहीं गाड़ कर देखेंगे कि वहॉ यह गड़ता है या नहीं।"

शाम तक वे लोग उस पहाड़ी की चोटी पर पहुॅच गये। वहॉ की जमीन वाकई बहुत ही अच्छी थी सो जब उन्होंने अपना वह सुनहरा डंडा वहॉ की जमीन में घुसाया तो वह तुरन्त ही वहॉ अन्दर गहरे तक चला गया और न केवल वह वहॉ अन्दर चला गया बल्कि उसके अन्दर जा कर गायब भी हो गया।

मामा बोली — "हमको अपना कुज़्कू यहीं बनाना है।"

मैन्को बोला — "और फिर यहीं से हम अपने पिता की इच्छा के अनुसार लोगों पर राज करेंगे।"

फिर दोनों ने मिल कर पहाड़ और मैदान ढूँढे और आदमियों को वहाँ ला कर कुज़्कू में बसाया। वहाँ जो कोई भी मामा और मैन्को को देखता उनके पीछे चल देता।

वे ही इनका सभ्यता[9] के पहले आदमी थे। फिर जैसे जैसे उनके पिता ने उनको सिखाया था उसी तरह उन्होंने धरती के लोगों को न्याय और दया और साथ साथ रहना सिखाया।

उसके बाद जब भी सूरज देवता आसमान से हो कर जाते और अपने लोगों को नीचे धरती पर देखते तो उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट खेल जाती।

[9] Inca Civilization

2 लोमड़े का गर्मी का सौदा[10]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के अर्जेन्टीना देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक समय में अर्जेन्टीना[11] के घास के मैदान[12] में दो विस्काचा[13] रहते थे। विस्काचा चूहे जैसा एक जानवर होता है पर वह चूहे से काफी बड़ा होता है – खरगोश जितना बड़ा।

दोनों विस्काचा आपस में बड़े अच्छे दोस्त थे। वे एक साथ खेलते थे और हर काम एक साथ करते थे।

अगर उन दोनों में से किसी एक को भी कोई छोटी सी भी गिरी[14] खाने के लिये मिल जाती तो दोनों ही उसको कुतर कुतर कर तब तक एक साथ खाते रहते जब तक वह खत्म नहीं हो जाती।

---

[10] Fox's Warm Bargain – a folktale from Argentina, South America. Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold and written by Mike Lockett

[11] Argentina – a country in South America

[12] Grasslands of Argentina, known as Pampa

[13] Viscacha (pronounced as Viskaachaa) – a rodent type animal like rat endemic to Chile and Argentina. See its picture above.

[14] Translated for the word "Nut". See their picture above.

अर्जेन्टीना के हरे हरे घास के मैदानों में उनको रहने में बहुत आनन्द आता। वहॉ के दिन बहुत आरामदेह थे। उनको वहॉ खाने पीने को भी खूब मिलता था।

उन दिनों वहॉ उनको केवल एक ही परेशानी थी और वह यह कि रातों को वहॉ की हवा थोड़ी ठंडी हो जाती थी और जब वह ठंडी हवा चलती थी तो दोनों विस्काचा रात भर ठंड में कॉपते रहते।

एक दिन जब वे खेल रहे थे तो उन्होंने एक झाड़ी में किसी लाल चीज़ को देखा। जब वे उसके पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहॉ केवल एक ही चीज़ नहीं थी बल्कि वहॉ तो दो चीज़ें थीं।

वे थे लाल कम्बल के दो टुकड़े जो अर्जेन्टीना की हवा ने कहीं से उड़ा कर ला कर वहॉ पटक दिये थे। ये कम्बल के टुकड़े जहॉ वे लोग रहते थे उसी जगह के पास वाली एक झाड़ी पर चिपके हुए थे।

एक दोस्त ने दूसरे दोस्त से कहा — "यह तो हम लोगों को खजाना हाथ लग गया है। यह तो एक कम्बल है जो हमको रात में गर्मी देगा।"

दूसरा दोस्त बोला — "यह तब ज़्यादा अच्छा खजाना होता जब ये दोनों टुकड़े बजाय फटे होने के एक साथ सिले हुए होते। अभी तो ये बहुत छोटे छोटे हैं।

या तो कोई इनको यहॉ भूल गया है और या फिर उसने इनको इसलिये यहॉ फेंक दिया है क्योंकि उनका यह बड़ा टुकड़ा फट गया होगा।"

पहले दोस्त ने कहा — "चलो, इसको ठीक कर लेते हैं। अभी तो यह हम दोनों में से किसी एक को भी गर्म रखने के लिये काफी नहीं है।"

सो जब दोनों दोस्त हवा सूँघते और यह सोचते बैठे हुए थे कि आगे क्या करना है कि सीनोर लोमड़ा[15] वहॉ आया। उसकी लम्बी नाक थी, लम्बी पूँछ थी और चालाक दिमाग था।

वह आते ही बोला — "नमस्ते दोस्तों, यह यहॉ क्या है तुम्हारे पास?"

दोनों एक साथ बोले — "हमको आज एक खजाना मिला है। हमको एक कम्बल मिला है जो हम लोगों को यहॉ की ठंडी रातों में गर्म रखेगा। पर वह हममें से किसी एक के लिये भी छोटा है जब तक कि हम उसको सिल न लें।"

चालाक लोमड़ा बोला — "मेरे पास एक छोटी सी सुई और थोड़ा सा धागा है जिसे तुम लोग अपना कम्बल सिलने के लिये इस्तेमाल कर सकते हो अगर तुम मुझे ठंडी रातों में उसकी गर्मी बॉट लेने दो तो।"

[15] Senor Fox – means "Mr Fox" or "Sir Fox". See its picture above.

वे मान गये और सीनोर लोमड़े ने अपना सुई धागा उन लोगों को उधार दे दिया।

वे जब अपने कम्बल के टुकड़े सिल रहे थे तो लोमड़ा उनको ध्यान से देखता रहा। जब उनका कम्बल सिल गया तो वह लोमड़ा अपना सुई धागा ले कर वहॉ से चला गया।

दोनों दोस्त बहुत खुश थे। वे सारा दिन धूप में इधर उधर खाना ढूँढते, खाना खाते और एक साथ खेलते घूमते रहे। और फिर रात आ गयी।

घास के मैदान में ठंडी हवा चलनी शुरू हो गयी। दोनों विस्काचा दौड़े दौड़े वहॉ गये जहॉ उनका कम्बल रखा हुआ था। तभी उन्होंने देखा कि सीनोर लोमड़ा भी उधर ही चला आ रहा था।

उसने पूछा — "क्या तुमको अपना सौदा याद है?"

उसने फिर कहा — "मैंने तुमको तुम्हारा लाल कम्बल सिलने के लिये अपना सुई और धागा दिया था और तुमने कहा था कि मैं ठंडी रातों में उसकी गर्मी तुमसे बॉट सकता हूँ।"

"हॉ हॉ, बिल्कुल।" कह कर उन्होंने उसको अपने पास बुलाया और कम्बल में आ कर गर्म रहने के लिये कहा।

लोमड़ा बोला — "क्योंकि मेरे सुई धागे ने कम्बल के बीच का हिस्सा सिला था इसलिये मैं बीच में सोऊँगा।"

यह कह कर वह दोनों के बीच में लेट गया और दोनों विस्काचा कम्बल के बाहर के दोनों किनारों के नीचे लेट गये।

अब जिधर की तरफ से वे लोमड़े की तरफ थे उधर की तरफ से तो वे गर्म थे पर दूसरी तरफ से वे बहुत ठंडे थे। जबकि लोमड़े को तीनों तरफ से गर्मी मिल रही थी – ऊपर से भी और दोनों तरफ से भी।

सो ऐसा लगता है कि इस गर्मी के सौदे में केवल लोमड़े का ही फायदा हुआ क्योंकि केवल वही गर्मी में सोता रहा – कम्बल की गर्मी में भी और विस्काचाओं की गर्मी में भी। और दोनों विस्कोचा बेचारे फिर भी ठंड में ही सिकुड़ते रहे।

सो ध्यान रखना अगर कभी कोई लोमड़ा तुमसे कभी कोई सौदा करने की कोशिश करे तो। वह तुमसे गर्मी का सौदा कर लेगा और तुम ठंड में सिकुड़ते रह जाओगे।

3 अरमाडिलो का गीत[16]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के बोलीविया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक अरमाडिलो[17] था जिसको संगीत से ज़्यादा दुनियॉ में और कोई भी चीज़ प्यारी नहीं थी।

हर बार बारिश के बाद वह अपने खोल को घसीटता हुआ बड़े तालाब के पास पहुँच जाता और वहॉ बैठा बैठा मेंढकों की मीठी आवाज में उनका गाना सुनता रहता।

उनका गाना सुन कर वह भी सोचता कि काश उसको भी गाना गाना आता और वह भी गा सकता।

फिर वह तालाब के किनारे के पास पानी के पास पहुँच जाता और मेंढकों को उछलते कूदते तैरते देखता रहता जैसे कि वे उसमें नाच रहे हों। वे भी उसको बार बार अपनी संगीत भरी आवाज में पुकारते।

---

[16] Armadillo's Song – a folktale from Bolivia, South America. Adopted from the Web Site: http://americanfolklore.net/folklore/2010/07/the_armadillos_song.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler.

[17] Armadillos are mammals with a leathery armor shell. All live in South America. Armadillo is a Spanish word meaning "little armored one" and refers to the bony plates that cover their back, head, legs, and tail of most of these odd-looking creatures. Armadillos are the only living mammals that wear such shells. See its picture above.

हालॅकि उसको उनकी बोली समझ में नहीं आती थी क्योंकि वे तो केवल उस अजीब से जानवर पर हॅस रहे होते थे फिर भी जब वे बोलते तो उसको उनकी आवाज सुनने में बहुत अच्छा लगता।

पर जब भी वे मेंढक उसको देखते तो उसको देख कर उनको और भी ज़्यादा हॅसी आती।

जब वे आपस में खेलते तो गाते — "मजाक मत करो। क्योंकि वह तो बेचारा गा ही नहीं सकता।"

एक दिन हुआ यह कि एक मकड़े का परिवार अरमाडिलो के पास अपने नये घर में आ कर रहने लगा। वह उस मकड़े के परिवार को भी मेंढकों की तरह खुशी से गाते देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

अब वह उस मकड़े के घर की तरफ भी चला जाता और दिन रात उसका और उसके परिवार का गाना सुनता रहता। उनका गाना सुन कर भी वह एक आह भरता और कहता "काश मैं भी गा सकता।"

मकड़ों ने भी अपनी फटी सी आवाज में गाया — "अरे उससे मजाक मत करो क्योंकि वह बेचारा तो गा ही नहीं सकता।"

पर अरमाडिलो तो उनकी बोली समझ नहीं सकता था सो वह उनका गाना सुन कर एक आह भरता और फिर उनका गाना सुनने की इच्छा रखता।

अब एक दिन एक आदमी उधर आया जिसके पास एक पिंजरा भर कर कैनेरी चिड़ियॉ[18] थीं। वे सब भी आपस में चीं चीं चीं चीं कर रही थीं और गा रही थीं। इनके गाने मेंढकों और मकड़ों के गानों से ज़्यादा मीठे थे।

उनके गानों को सुन कर तो अरमाडिलो बिल्कुल ही खो गया। वह उन कैनेरी चिड़ियों का गाना सुनते सुनते उस आदमी के पीछे पीछे चल दिया जो उनको लिये जा रहा था।

उनके गाने को सुन कर अरमाडिलो ने एक आह भरी और बोला — "काश मैं भी इनकी तरह गा सकता।"

पिंजरे के अन्दर से कैनेरी चिड़िया अपने पंख फड़फड़ाती हॅस कर बोलीं — "मजाक मत करो अरमाडिलो। तुम तो गा ही नहीं सकते।"

बेचारा अरमाडिलो उस आदमी और पिंजरे के साथ नहीं चल पा रहा था। वह बहुत थक गया था सो वह वहीं पास में एक दरवाजे के पास थक कर गिर गया।

वह दरवाजा एक जादूगर के घर का था। जब अरमाडिलो को यह पता चला कि वह कहॉ था तो उसने उस आदमी से एक वरदान मॉगने की सोची।

[18] Canary bird – a small wild bird. See its picture above.

वह जादूगर अपने घर के बाहर ही बैठा था। वह उस जादूगर के पास गया और बड़ी नम्रता से बोला — "ओ बड़े जादूगर, यह मेरी दिली इच्छा है कि मैं ऐसे ही गाना गाना सीखूँ जैसे मेंढक गाते हैं, या फिर जैसे मकड़े गाते हैं और या फिर जैसे ये कैनेरी चिड़ियें गाती हैं।"

उस जादूगर के होठ थोड़े से मुस्कुराये क्योंकि उसने यह कभी नहीं सुना था कि अरमडिलो भी कभी गा सकते थे। पर उसको लगा कि यह जानवर वाकई गाना चाहता था। सो वह जमीन के काफी पास तक झुक गया और उस जानवर की ऑखों में देखा।

वह बोला — "ओ छोटे अरमाडिलो, मैं तुमको गाना गाना तो सिखा सकता हूँ पर तुम मुझको उसकी कीमत नहीं दे सकते क्योंकि उसका मतलब होगा तुम्हारी मौत।"

अरमाडिलो आश्चर्य से बोला — "तुम्हारा मतलब है कि जब मैं मर जाऊँगा तभी मैं गा सकूँगा?"

जादूगर बोला — "हॉ ऐसा ही कुछ है।"

अरमाडिलो बोला — "तब मैं अभी मरना चाहता हूँ। मैं गाना गाने के लिये कुछ भी कर सकता हूँ।"

उसके बाद वह जादूगर और अरमाडिलो दोनों आपस में काफी देर तक इस मामले पर बात करते रहे क्योंकि वह जादूगर उस बेचारे अरमाडिलो की जान लेना नहीं चाहता था।

पर वह जानवर तो बस इसी बात पर अड़ा हुआ था कि उसको तो गाना गाना सीखना ही है तो जादूगर ने उसको मार दिया और उसके खोल का एक बहुत ही सुन्दर बाजा बना दिया और उसको शहर के एक बहुत ही होशियार बाजा बजाने वाले को दे दिया।

अब वह बाजा बजाने वाला कभी कभी उस बाजे को उस बड़े तालाब के किनारे जा कर बजाता जहॉ वे मेंढक रहते थे। जब वह बाजा वहॉ बजाता तो वे उसकी तरफ घूर घूर कर देखते और कहते — "अरे, अरमाडिलो ने तो गाना गाना सीख लिया।"

कभी वह बाजा बजाने वाला उस बाजे को उस मकड़े के घर के पास बजाता जो अरमाडिलो के घर के पास आ कर रहने लगा था तो वह मकड़ा और उसका परिवार उसकी तरफ घूर घूर कर देखता और कहता — "ओह देखो न, अरमाडिलो ने तो गाना गाना सीख लिया है।"

वह बाजा बजाने वाला अक्सर अपने दोस्त के घर जाता जिसके पास कैनेरी चिड़ियों का पिंजरा था। उसका वह दोस्त भी एक बहुत अच्छा बाजा बजाने वाला था।

वहॉ वे दोनों अपने अपने बाजों को बजाते तो वे चिड़ियॉ अपने पंख फड़फड़ाती और चहचहाती हुई उनको देखतीं और कहतीं — "अरे देखो न, अरमाडिलो ने तो गाना गाना सीख लिया है।"

इस तरह आखिर अरमाडिलो ने गाना गाना सीख ही लिया, चाहे मर कर ही सही। उसकी आवाज वहॉ सबसे मीठी थी।

4 बड़ी आग के बाद[19]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के बोलीविया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि यूराजरे[20] में दो कबीलों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हो गयी। कुछ समय के बाद एक कबीले को लगा कि अब उनमें लड़ाई काफी हो गयी अब दोनों कबीलों में शान्ति हो जानी चाहिये।

सो जैसे ही उन्होंने शान्ति प्रस्ताव रखने की सोची कि वहॉ के साराूमा[21] नाम के एक नीच जादूगर ने उनके कान में फुसफुसा कर बताया कि दूसरा कबीला उनके साथ क्या करना चाह रहा था।

उसने उनसे कहा कि वे लोग तुम्हारे ऊपर हमला करना चाहते हैं। तुमको जो कदम उठाना है वह तुम्हें अभी उठाना चाहिये जब तक कि यह जमीन सूखे से अभी भी सूखी है। इस बीच अगर बारिश हो गयी तो तुम फिर कुछ नहीं कर पाओगे। तुम दुश्मन की जमीन पर आग लगा दो तो फिर वे तुमको कभी तंग नहीं करेंगे।

यह कह कर वह दूसरी तरफ दौड़ गया और उनसे जा कर कहा कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी जमीन पर आग लगाने की सोच रहे

[19] After the Great Fire – a folktale from Bolivia, South America. Taken from the Web Site : https://www.storiestogrowby.org/story/after-the-great-fire/

[20] Yuracare – pronounced as Yurajare. A place in Bolivia, South America. They are the Native people living near Chapare River near the Andes Mountains.

[21] Sararuma – name the evil wizard

हैं। जल्दी करो इससे पहले कि वे तुम्हारी जमीन पर आग लगा दें तुम वहॉ जा कर उनकी जमीन पर आग लगा आओ।

बस फिर क्या था बहुत जल्दी ही दोनों तरफ की जमीनों में आग लगा दी गयी और दोनों तरफ की जमीने जलने लगीं। उस आग में केवल दो लोग बचे – एक आदमी और एक औरत।

उन दोनों ने इस लड़ाई को बुरे से बुरा होते देखा था। उन्होंने दूसरी तरफ वालों को बहुत समझाया कि यह लड़ाई अच्छी नहीं है वे सुलह कर लें पर किसी ने सुना ही नहीं।

सो उन्होंने काफी दिन के लिये अपने लिये खाने का सामान लिया और दोनों जमीन के नीचे जा कर छिप गये। और इस तरह से उस भयंकर आग से बच गये। इस तरह से इस बड़ी आग के बाद धरती पर केवल वे दोनों ही बचे।

जमीन के नीचे से वे दोनों आग देखते रहे और धुँआ सूँघते रहे। कुछ दिन बाद जब आग से हुई बर्बादी कुछ कम हुई तो आदमी ने अपने उस छेद से यह देखने के लिये एक डंडी बाहर निकाली कि देखूँ तो कि अब बाहर का क्या हाल है। पर उसने तो तुरन्त ही आग पकड़ ली।

यह देख कर वह बोला — "अरे अभी तो बहुत जल्दी है।"

और यह कह कर वह फिर से अपनी जमीन के नीचे बनायी रहने की जगह चला गया।

अगले दिन उसकी पत्नी ने देखने की कोशिश की पर उसकी डंडी काली पड़ गयी। उसके बाद वे आठ दिन तक अन्दर रहे। दसवें दिन कहीं जा कर उनकी डंडी न तो जली और न ही काली पड़ी।

तब कहीं जा कर वे अपने जमीन के नीचे वाले घर में से निकल कर ऊपर जमीन पर आये। उन्होंने चारों तरफ देखा तो आदमी बोला — "अरे यहॉ तो सब जगह राख ही राख पड़ी है।"

उसकी पत्नी भी बड़बड़ायी — "उफ़ यहॉ तो हम कुछ पहचान ही नहीं पा रहे हैं।"

कहीं भी कोई भी घास या पेड़ दिखायी नहीं दे रहा था और आदमी और जानवर का तो कहीं कोई पता ही नहीं था। चारों तरफ जमीन सपाट पड़ी थी। टखने टखने तक ऊॅची राख पड़ी थी और वह राख भी तेज़ हवाओं से इधर से उधर दौड़ रही थी।

कि अचानक अपने सामने उनको वह नीच जादूगर साराूमा दिखायी दे गया। आग की लपटों की तरह उसका लाल शाल[22] उसके चारों तरफ लहरा रहा था।

उसने कुछ गुर्राते हुए कहा — "कैसा लगा तुम्हें मेरा यह खेल? अब तुम दोनों भी जल्दी ही मरोगे।"

आदमी बोला — "हमको मरने की जरूरत नहीं है।"

[22] Translated for the word "Cloak". See the picture above. It may be short ot long.

औरत बोली — "हॉ हमको मरने की जरूरत नहीं है हम लोग ज़िन्दा रहेंगे।"

वह फिर गुर्रा कर बोला "अगर तुम ज़िन्दा रहे तो यह तो तुम्हारे लिये और भी बुरा होगा क्योंकि फिर तो तुम लोग बड़ी दर्दनाक हालत में ज़िन्दा रहोगे और इस राख भरी जमीन पर भूख से मरोगे।"

पत्नी अपनी जेब में बीजों को महसूस करती हुई बोली — "यह ठीक है कि अभी सूखा है पर बाद में जब बारिश पड़ेगी तब हम पेड़ लगायेंगे।"

अचानक सारारूमा सिकुड़ने लगा और जैसे ही वह साइज़ में छोटा होने लगा राख में से घास के नये पत्ते निकलने लगे।

उसने अपने हाथ फेंकते हुए कहा — "तुम ऐसा क्यों समझते हो कि तुम लोग दूसरे लोगों से अलग हो? जैसे कि और लोग इस लड़ाई की बर्बादी में मरे हैं उसी तरह से तुम लोग भी इस लड़ाई की बर्बादी में मर कर ही रहोगे।"

आदमी बोला — "यह तो हम नहीं कह सकते कि आगे क्या होगा पर हम ज़िन्दा रहने की कोशिश करेंगे।"

तब तक पेड़ भी हरे हो कर बढ़ने लगे थे। सारारूमा अब एक बच्चे के साइज़ का रह गया था। वह गुस्से में चिल्लाया — "केवल तुम्हीं लोग हो जो ज़िन्दा रह गये हो बाकी सब मर गये।"

आदमी बोला — "तुम देखना समय बदलेगा चीज़ें बदलेंगीं।"

औरत बोली — "हमारे बच्चे होंगे।"

उसी समय जानवरों ने भी राख में से अपना मुँह बाहर निकालना शुरू कर दिया।

अचानक साराऊमा का शाल आखिरी बार उसके शरीर से लिपटा और वह एक धूल का बवंडर बन कर वहाँ से उड़ गया।

5 ब्राज़ील के बीटिल को उनका कोट कैसे मिला[23]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक छोटी कत्थई बीटिल एक पत्थर की दीवार के नीचे से हो कर जा रही थी कि उसको एक भूरा चूहा मिल गया। वह चूहा उसी पत्थर की दीवार में बने एक छेद में से निकल कर बाहर भाग रहा था।

वह उस बीटिल के पास से निकल कर बागीचे के आखीर तक भाग गया पर कुछ सोच कर वह फिर पीछे लौटा तब तक बीटिल तो केवल एक फुट ही आगे बढ़ी थी और वह चूहा तब तक दीवार के आखीर के कोने से हो कर बीटिल के पास तक दौड़ आया था।

आते ही वह बोला — "ओह मेरे भगवान तुम कितना धीरे चलती हो बीटिल रानी। तुम तो दुनियॉ में कहीं जा ही नहीं सकतीं।

[23] How Brazilian Beetles Got Their Coat – a folktale from Brazil, South America.
Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=234
Adopted, retold and written by Mike Lockettr.
Adapted from Fairy Tales from Brazil, "How the Brazilian Beetles Got Their Gorgeous Coats" by Elsie Spicer Eells, 1917 - republished by Dodd and Mead and Co. 1944.

देखो न मैं तुम्हारे मुकाबले में कितना तेज़ भागता हूँ। जितनी देर में मैं यहाँ से बागीचे के आखीर तक गया और वापस भी आ गया और तुम तो अभी तक केवल एक फुट ही आगे बढ़ पायीं।"

कह कर वह चूहा फिर से दीवार के दूसरे कोने तक भाग गया और फिर से वापस भी आ गया।

"तुम तो बहुत ही धीमे चलती हो। बहुत धीमे, बहुत धीमे, बहुत धीमे। क्या तुम यह नहीं चाहतीं कि तुम भी मेरी तरह से इतनी ही तेज़ भागो?"

बीटिल बोली — "हाँ मैं मानती हूँ कि तुम बहुत तेज़ भागते हो।"

असल में बीटिल इस बात की डींग नहीं हाँकना चाहती थी कि वह क्या क्या कर सकती है। वह हमेशा ही दूसरों के साथ बहुत नम्र रहती थी सो वह चूहे से कुछ नहीं बोली और दीवार के सहारे सहारे चलती रही।

उसी समय एक हरा तोता वहीं पास के एक पेड़ की शाख पर बैठा था। वह उन दोनों के बीच हुई बातें सुन रहा था।

वह चूहे से बोला — "क्या तुम बीटिल के साथ दौड़ना चाहोगे चूहे राजा? जो भी इस दौड़ में जीतेगा मैं उसको एक बहुत ही चमकीले रंग का कोट दूँगा। तुम लोग जिस रंग का कोट चाहोगे मैं तुमको उसी रंग का कोट दूँगा।"

चूहे को तो यकीन था कि इस दौड़ में वही जीतेगा सो वह बोला — "ठीक है तो तुम मेरे लिये धारी वाला कोट बना दो जैसा चीते का होता है।" यह उसने ऐसे कहा जैसे उसने वह दौड़ जीत ही ली हो।

बीटिल बोली — "मुझको तो बहुत ही सुन्दर रंगों का कोट चाहिये।"

यह सुन कर चूहा बड़ी ज़ोर से हॅसा और बोला — "तुम यह दौड़ कभी नहीं जीत सकतीं बीटिल रानी। यह इनाम तो मेरा है।"

तोता दौड़ देखने के लिये उड़ कर पास के एक पाम के पेड़ पर जा बैठा। दौड़ शुरू करने के लिये वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया "एक, दो, तीन" तो चूहा तो तुरन्त ही दौड़ गया।

वह अपनी सबसे तेज़ गति से दौड़ रहा था। उसने एक बार सोचा भी कि "मैं इतना तेज़ क्यों दौड़ रहा हूॅ। बीटिल तो बहुत धीमे चलती है और मैं तो बहुत तेज़ दौड़ता हूॅ। उसके जीतने का तो कोई मौका ही नहीं है।"

फिर भी वह अपनी सबसे तेज़ गति से दौड़ता हुआ उस पाम के पेड़ के नीचे आ गया जिस पेड़ पर तोता बैठा हुआ था।

पर यह क्या। उसने देखा कि तोते के बराबर में तो बीटिल बैठी हुई थी।

चूहा चिल्लाया — "अरे तुमने मुझे दौड़ में कैसे हरा दिया। और तुम पेड़ पर पहुॅचीं कैसे?"

अब बीटिल ने अपने पंख फैलाये और चूहे को दिखा कर बोली — "यह तो किसी ने नहीं कहा था कि धरती पर ही दौड़ना है सो मैं उड़ कर यहाँ आ गयी।"

चूहा बोला — "अरे यह तो मुझे पता ही नहीं था कि तुम उड़ भी सकती हो।"

बीटिल बोली — "पर तुमने मुझसे पूछा ही नहीं कि मैं क्या क्या कर सकती हूँ। तुमने तो बस मेरी चाल देख कर ही मेरी बेइज़्ज़ती कर दी कि मैं बहुत धीरे चलती हूँ।"

तोता बोला — "चूहे राजा कभी किसी को उसकी शक्ल से मत जाँचो। अगर किसी को जानना है तो पहले उसके बारे में जानो कि उसके पास क्या क्या ताकतें हैं।"

उसके बाद तोते ने बीटिल को बहुत सारे रंगों वाला एक बहुत ही चमकीला कोट दिया। सो बहुत जल्दी ही ब्राज़ील की वह बीटिल अपने हरे और सुनहरी रंग के कोट में सब जगह दिखायी देने लगी।

यहाँ आ कर यह कहानी खत्म हो जानी चाहिये थी पर अभी यह कहानी खत्म नहीं हुई। बहुत साल तक ब्राज़ील की ये बीटिल अपने हरे और सुनहरी रंग के कोट का आनन्द लेती रहीं।

पर एक दिन एक छोटी बीटिल ने हल्के नीले आसमान की तरफ देखा तो बोली — "मैं तो ऐसे नीले कोट के लिये अपना यह हरा और सुनहरी कोट बड़ी खुशी से छोड़ सकती हूँ।"

इत्तफाक की बात कि यह कहते ही उसकी यह इच्छा पूरी हो गयी। तुरन्त ही ब्राज़ील की बड़ी बीटिल तो अपने हरे और सुनहरे रंग के कोट में दिखायी देती रहीं पर छोटी बीटिल अपने हलके नीले कोट में दिखायी देने लगीं।

हरी और सुनहरी रंग की बीटिल के कोट बहुत सख्त थे सो उन कोटों के गहने भी बन सकते थे जबकि हलके नीले कोट बहुत ही मुलायम थे सो जैसे ही लोग उनको उठाते थे तो उनके वे कोट टूट फूट जाते थे।

इसके अलावा हरे और सुनहरे रंग की बीटिल हमेशा बड़ी होती थी जबकि हलके नीले रंग की बीटिल हमेशा बहुत छोटी होती थीं।

जब ब्राज़ील के लोगों ने अपना झंडा बनाया तो उसमे उन्होंने एक हरा वर्ग बनाया जैसा कि हरी बीटिल का होता है। उसके बीच में इन्होंने सुनहरी रंग की ईंट की एक शक्ल बनायी। यह सुनहरी रंग ऐसा लगता है जैसे हरी बीटिल पर सुनहरी रंग हो।

उस ईंट के बीच में उन्होंने फिर एक गोला खींचा जिसका रंग हलका नीला है – जैसा कि नीली बीटिल के कोट का रंग होता है।

फिर उन्होंने उस नीले रंग में चॉदी के रंग के सितारे बनाये और उस नीले गोले के बीच में उसके चारों तरफ एक सफेद धारी का गोला बनाया।

इस तरह से उन्होंने उस बड़ी और छोटी बीटिल दोनों के रंगों को अपने झंडे पर जगह दे दी।

6 चॉद की मारी[24]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के पैरैगुए देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि पैरैगुए नाम के देश में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था इरूप। इरूप[25] किसी से प्यार करने लगी थी। पर वह लड़का उसका पड़ोसी नहीं था और न ही वह किसी राज्य के राजकुमार के प्रेम में फॅसी थी।

इरूप का सपना तो इन सबसे ऊपर कुछ और ही था। सचमुच में ही उसका सपना इन सबसे बहुत ऊपर था। वह तो चॉद से प्यार करने लगी थी।

जब कोई सुन नहीं रहा होता तो वह फुसफुसाती — "ओह, इसकी रोशनी मेरे शरीर को कितना चमकाती है। मुझे मालूम है कि वह केवल मेरे लिये ही इतना चमकीला चमकता है।"

हर शाम वह लड़की चॉद की तरफ उसका रास्ता देखती कि वह आसमान में किस रास्ते से जाता है। फिर उसकी शान्त चॉदनी

---

[24] Moonstruck - a folktale from Paraguay, South America. Adopted from the Web Site : http://www.themuralman.com/paraguay/asuncion_folktale.html
Collected and retold by Phillip Martin
[Note from Phillip Martin – If you are looking for something that ends with "and they all lived happily ever after", go to a different story. The Guaraní, the indigenous people of Paraguay, didn't tell those kinds of stories. In their stories I found, nobody lived happily ever after and this is no exception.]

[25] Irupe – name of the girl

में इरूप उसको देखते देखते सो जाती। सपने में वह देखती कि शायद सचमुच ही वह किसी दिन अपने प्यार से जरूर मिलेगी।

हालॉकि बहुत सारे नौजवान उससे शादी करना चाहते थे पर इरूप को उनसे कुछ लेना देना नहीं था।

उसका दिल तो बस चॉद का था सो वे नौजवान अपना टूटा दिल ले कर वापस चले जाते। और टूपा, गुआरानी लोगों का दुनियॉ बनाने वाला देवता[26], धीरे से ना में अपना सिर हिलाता।

एक दिन पूरे चॉद की रात को इरूप से रहा नहीं गया। वह चॉद से रो कर बोली — "मेरे प्रिय, अगर तुम नीचे नहीं आ सकते तो फिर मैं ऊपर आती हूॅ।"

और यही उसने करने की कोशिश भी की। उसने अपने बागीचे में एक सबसे ऊॅचा पेड़ ढूॅढा और धीरे धीरे उस पर चढ़ने लगी। हालॉकि यह उसके लिये एक बहुत मुश्किल काम था पर फिर भी क्योंकि यह उसका अपना काम था जो उसको करना ही था इसलिये वह उसको करने चल दी।

वह उस पेड़ की चोटी तक पहुॅचना चाहती थी और अपनी बॉहें आसमान की तरफ बढ़ाना चाहती थी। वहॉ पहुॅच कर वह रोते हुए कहती — "प्रिय, मैं यहॉ हूॅ इस पेड़ की चोटी पर। नीचे धरती पर आओ और मुझसे शादी कर लो।"

[26] Tupa – the Guarani God of Creation. Considered to be the Creator of the Universe, especially of light. He lives in the Sun.

पर चॉद तो अपना आसमान छोड़ कर नीचे नहीं आया। यह तो एक ऐसा प्यार था जो अपनी मंजिल पर पहुॅचने वाला नहीं था।

हालॉकि वह लड़की सुबह होने पर पेड़ से उतर आयी पर वह चॉद के न आने से नाउम्मीद नहीं हुई। उसको पूरा विश्वास था कि एक दिन वह अपने प्रिय से जरूर मिलेगी। वह रोती रोती सोने चली गयी और टूपा ना में अपना सिर हिलाता रहा।

अगली सुबह इरूप को कम से कम एक बात का तो बिल्कुल ही यकीन था "अगर उसका चॉद नीचे नहीं आयेगा तो वह यह समझ ले कि अब वह बहुत मुश्किल में है।" और उसको खुद को भी यह मालूम था कि ऐसी हालत में उसको क्या करना है।

अबकी बार वह एक घाटी में से हो कर पहाड़ पर चढ़ने के लिये चल दी। उसके काम के लिये तो वही पहाड़ ठीक था जिसकी सबसे ऊॅची चोटी हो क्योंकि तभी तो वह चॉद के सबसे ज़्यादा पास तक पहुॅच पायेगी।

उसकी यह यात्रा भी उसके लिये बहुत मुश्किल थी। उस यात्रा में उसका सारा दिन लग गया।

पर जब चॉद छिपने लगा तो इरूप ने अपनी बॉहें ऊपर उठायीं और रो कर कहा — "प्रिय, मैं यहॉ हूॅ, इस ऊॅचे पहाड़ पर। आओ और मुझसे शादी कर लो वरना मैं मर जाऊॅगी।"

पर एक बार फिर से चॉद ने आसमान नहीं छोड़ा। वह तो बस उससे दूर ही जाता जा रहा था। अब उसका तो ऐसा प्यार ही ऐसा

था जो पूरा नहीं हो सकता था। अगली सुबह के सबेरे वाले समय में वह ठंड से बचने के लिये कुछ चट्टानों के पीछे बैठ गयी।

जब सूरज की धूप से पहाड़ की चोटी गर्म होने लगी तो इरूप अपने घर लौट आयी। लौटते समय जब भी इरूप उस पथरीले रास्ते पर लुढ़कते लुढ़कते बचती तो टूपा अपना सिर ना में हिलाता रहा।

अगर इरूप अब कुछ थी तो बस एक प्रेम में पागल और जिद्दी लड़की। और हालॉकि चॉद उसके लिये नीचे नहीं आया था पर फिर भी उसको उस तक पहुॅचने का अपना रास्ता तो ढूॅढना ही था।

उसको अपने दिल में मालूम था कि "कुछ तो है जो चॉद को मेरे पास तक नहीं पहुॅचने दे रहा है। पर मुझे तो अपना प्यार पाने के लिये वहॉ तक पहुॅचना ही है।"

अगले दिन जब इरूप ने मैदानों के पार तक देखा तो उसके दिल में एक विचार उठा कि उसको क्या करना चाहिये।

उसने सोचा — "हर रात मेरा प्यार आसमान की यात्रा धरती के ऊपर[27] से शुरू करता है। मुझे उससे मिलने के लिये वहीं जाना चाहिये। आखिर हम लोग वहॉ एक साथ तो होंगे।"

अगर उसने किसी और से पूछा होता तो उसने उसे बता दिया होता कि वह कभी भी "धरती के उस ऊपर वाली जगह" पहुॅच ही नहीं सकती थी चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न चलती चली जाये।

[27] Translated for the word "Horizon" – Kshitij in Hindi where the sky and earth meet.

क्योंकि वह जगह तो उसको हमेशा बस बहुत दूर से ही दिखायी देती रहेगी क्योंकि वह जगह तो कहीं है ही नहीं।

पर अगर वह किसी से पूछती भी और वह यह उसको बताता भी तो भी क्या वह उसकी कभी सुनती? वह उसकी सुनती ही नहीं इसलिये उसका यह बताना भी बेकार जाता।

अगले दिन उसने थोड़ा सा खाना लिया और फिर चॉद से मिलने के लिये चल दी। बहुत लम्बा सफर था।

इरूप अपने गॉव से जितनी ज़्यादा दूर चलती गयी सड़कें उतनी ही खराब होती गयीं। वह बेचारी छोटी लड़की इतना मुश्किल सफर करने के लिये तैयार हो कर नहीं आयी थी।

तीसरे पहर की गर्मी में उसका बचा हुआ सारा खाना भी खत्म हो गया और धरती के ऊपर वाली जगह का तो अभी तक कुछ पता ही नहीं था। वह बेचारी सारा दिन चलती रही।

जब आसमान थोड़ा काला होने को आया तब वह अपने छाले पड़े पैरों पर बड़ी मुश्किल से खड़ी हो सकती थी। पर तभी उसने देखा कि चॉद तो धरती से ऊपर आसमान की तरफ बढ़ता ही जा रहा है।

वह जितनी सीधी खड़ी हो सकती थी खड़ी हुई और ऊपर हाथ उठा कर रो कर बोली — "मैं यहॉ हूॅ प्रिय, जहॉ धरती और आसमान मिलते हैं। आओ, तुम मुझसे मिलने के लिये ऊपर से नीचे आओ।"

पर एक बार फिर चॉद ने आसमान नहीं छोड़ा। यह तो ऐसा प्यार था जो कभी पूरा हो ही नहीं सकता था।

सुबह सवेरे के समय इरूप जब ज़रा सी खड़ी होने के लायक हो सकी तो वह गर्मी से बचने के लिये सड़क के पास किसी जगह रुक गयी।

चॉद इरूप से मिलने के लिये एक बार फिर नहीं आया था और टूपा ने एक बार फिर अपना सिर धीरे से ना में हिलाया और बुदबुदाया "बेचारी इरूप"।

उस लड़की के लिये तो घर वापस जाने का सफर भी बहुत लम्बा और दिल तोड़ देने वाला था। उसके पैरों में पड़े छाले उसको तेज़ नहीं चलने दे रहे थे।

इरूप के लिये इससे भी ज़्यादा दर्द भरी बात यह थी कि तीसरी बार भी उसका प्यार उससे मिलने नहीं आया था। शाम हो आयी थी, सूरज डूबने वाला था पर वह अभी घर से बहुत दूर थी।

चलते चलते रास्ते में एक झील पड़ी तो इरूप ने सोचा कि वह उसके पानी में अपने पैर ठंडे कर ले। पर जैसे ही वह लड़की झील के किनारे अपने पैर पानी में लटकाने के लिये बैठी तो उसकी तो सॉस ही रुक गयी।

उसने उसमें जो कुछ देखा उसको पक्का करने के लिये उसने वहॉ फिर से देखा – झील के नीले ठंडे पानी में तो वाकई चॉद दिखायी दे रहा था।

पर इरूप बेचारी को क्या मालूम था कि वह चॉद नहीं बल्कि उसकी परछाईं थी। और वह चॉद की परछाईं तो उसके इतना पास थी कि उसको लगा कि वह उसको आसानी से पकड़ सकती थी।

उसने सोचा — "आखिर मेरा प्यार मेरे पास आ ही गया। अब हम हमेशा के लिये शादी कर लेंगे।"

और बिना किसी हिचक के इरूप ने अपने प्यार से मिलने के लिये उस झील में छलॉग लगा दी। पानी उसके चारों तरफ लिपट गया और वह फिर कभी ऊपर नहीं आयी।

पर चॉद की बेरुखी तो देखो कि आखिरी बार भी चॉद ने आसमान में से अपनी जगह नहीं छोड़ी। उसका प्यार तो ऐसा था जो कभी पूरा होने वाला नहीं था।

सुबह सवेरे के समय में टूपा ने फिर से अपना सिर ना में हिलाया और बुदबुदाया "बेचारी इरूप"।

उस प्यार की याद में जो कभी पूरा नहीं हो सका टूपा ने इरूप को एक इरूप[28] में बदल दिया।

इरूप की बड़ी बड़ी गोल गोल पत्तियॉ बिल्कुल चॉद की शक्ल की थीं जिसको इरूप इतना पसन्द करती थी। उसका फूल हमेशा चॉद को उसके पूरे रास्ते देखता रहता।

[28] Irupe means a large water Lily – maybe Kamalinee as it blooms seeing the Moon and follows Moon's path throughout the night. In the morning when Moon disappears it also closes down its petals.

इरूप के फूल यह काम हमेशा के लिये करते रहेंगे क्योंकि इरूप चॉद को प्यार करना नहीं छोड़ेगी और चॉद उससे मिलने के लिये कभी अपनी जगह नहीं छोड़ेगा। और इसलिये वह कभी उससे मिलने भी न आ सकेगा।

7 एक मछियारे के बेटे के कारनामे[29]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिण अमेरिका के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है। यह एक ऐसे बच्चे की कहानी है जिसको नदी में रहने वाले एक बड़े साइज़ का आदमी ने उसके पिता से एक सौदे में ले लिया था।

बहुत पुरानी बात है कि एक आदमी अपनी पत्नी के साथ एक नदी के किनारे ताड़ के पेड़ों की छॉव में एक मिट्टी की बनी झोंपड़ी में रहता था।

उन दोनों के कई बच्चे थे। वे नहीं जानते थे कि वे उनको कैसे सॅभालें। उनकी उस छोटी से झोंपड़ी में हमेशा भीड़ लगी रहती। आदमी को केवल इन सबका खाना जुटाने के लिये ही सुबह से ले कर शाम तक बहुत काम करना पड़ता।

एक दिन उनका सातवॉ बेटा अपने पिता से बोला — "पिता जी कल जब मैं नदी के किनारे खेल रहा था तो मुझे एक छोटा सा पिल्ला[30] मिला। मैं हमेशा से एक पिल्ला पालना चाहता था। क्या मैं उसे घर ले आऊॅ?"

---

[29] The Adventures of a Fisherman's Son – a folktale from Brazil, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_30.html
Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[30] Translated for the word "Puppy"

पिता को अपने परिवार के लिये ही खाना जुटाने में बहुत परेशानी होती थी फिर वह इस पिल्ले को कहॉ से खिलायेगा। इसके अलावा उसकी झोंपड़ी में उसी के अपने परिवार के लिये रहने की जगह नहीं थी फिर वह इस पिल्ले को कहॉ रखेगा। यही सोच कर वह अपने बच्चे की बात सुन कर दुखी था।

पर बच्चे की इच्छा को देखते हुए उसने उसको दुखी मन से उस पिल्ले को घर लाने की इजाज़त दे दी।

यही सब सोचते सोचते उस दिन बड़े भारी दिल से वह नदी पर मछली पकड़ने गया। उसने नदी में मछली पकड़ने के लिये अपना जाल फेंका पर सब बेकार। उस दिन उसके जाल में एक भी मछली नहीं फॅसी।

उसने नदी के दूसरी तरफ भी जाल फेंका पर वहॉ भी जाल फेंकने से कोई खास फायदा नहीं हुआ। उधर भी उसके जाल में एक छोटी सी मछली भी नहीं फॅसी।

अचानक उसने एक आवाज सुनी जो उसे नदी की तली से आती लग रही थी। वह आवाज बहुत गहरी थी।

वह आवाज कह रही थी — "जब तुम घर पहुॅचोगे तो अगर तुम मुझे वह दोगे जो तुमको अभी नया नया मिला है तो मैं तुम्हें "एक मछियारे की खुशकिस्मती" दूॅगा। उससे तुम वे सब तरह की मछलियॉ पकड़ सकोगे जो भी तुम पकड़ना चाहोगे।"

उस मछियारे को अपने सातवें बेटे की बात याद आयी जो उसने उससे सुबह ही कही थी।

उसने सोचा "नयी चीज़ तो जो जब मैं अपने घर पहुँचूँगा और मैं अपने घर में पाऊँगा वह तो वह पिल्ला ही होगा जो मेरा सातवाँ बेटा घर ले कर आया होगा।

यह तो उस पिल्ले को घर में लाने से बचने का एक बहुत ही अच्छा तरीका है जिसे मैं अपने घर में रखना ही नहीं चाहता था।"

सो उसने उस आवाज की बात मान ली और उससे हाँ कर दी। उसी आवाज ने फिर कहा — "तुमको हमारे इस सौदे के ऊपर अपने खून से सील लगानी पड़ेगी।"

आदमी ने अपने तेज़ चाकू से अपनी उँगली ज़रा सी काटी उसको दबा कर कुछ बूँद खून निकाला और नदी में डाल दिया।

उस गहरी आवाज ने फिर से कहा — "अगर तुम अपनी इस कसम को तोड़ोगे तो नदी के बड़े साइज़ के आदमी[31] का शाप तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के ऊपर हमेशा हमेशा के लिये पड़ेगा।"

उसके बाद मछियारे ने वहाँ अपना मछली पकड़ने वाला जाल फेंका जहाँ उसने इस आदमी को बताया था तो उसका जाल तो तुरन्त ही इतनी सारी मछलियों से भर गया कि उसको तो उसे पानी में से बाहर निकालना मुश्किल हो गया।

[31] Translated for the words "Giant of the River"

उसने उस जाल को पानी में से बाहर निकालने की तीन बार कोशिश की पर वह इतना भारी था कि उसको लग रहा था कि वह तो बस टूट ही जायेगा।

आदमी बोला — "यह तो बहुत ही अच्छा सौदा था। अब तो मेरे पास मेरे परिवार के खाने के लिये बहुत सारा खाना है और जो बचेगा उसे मैं बेच दूँगा।"

इसी खुशी के साथ मछियारा वे इतनी सारी मछलियॉ ले कर घर पहुँचा तो उसके बच्चों में से एक बच्चा उससे मिलने आया और खुशी से बोला — "पिता जी बताइये तो आज हमारे घर में क्या नया है जो जब नहीं था जब आप यहॉ से गये थे?"

पिता बोला — "एक नया पिल्ला?"

"ओह नहीं पिता जी। आप बिल्कुल भी ठीक से नहीं बता पाये। हमारा एक छोटा भाई।"

यह सुन कर तो वह मछियारा फूट फूट कर रो पड़ा — "उफ़ यह मैंने क्या किया। अब मैं क्या करूँ? उफ़ अब मैं क्या करूँ? मैं तो नदी के उस बड़े साइज़ के आदमी से अपना वायदा तोड़ भी नहीं सकता।"

मछियारे की पत्नी ने जब इस सौदे के बारे में सुना जो उसके पति ने नदी के बड़े साइज़ के आदमी के साथ किया था तो उसका तो दिल ही टूट गया।

उसने बेचारी ने बहुत सोचा बहुत सोचा पर वह इस सौदे से बचने का कोई तरीका नहीं सोच पायी। उसने अपने उस छोटे से बच्चे को रोते हुए गुड बाई कहा, अपना आशीर्वाद दिया और उसे मछियारे की गोद में दे दिया।

मछियारा उसको ले कर नदी की तरफ गया और वहॉ पहुॅच कर उसे नदी में उसी जगह फेंक दिया जहॉ से वह गहरी आवाज आ रही थी। नदी की गहराइयों में पड़ा बड़े साइज़ का आदमी तो उस नये पैदा हए बच्चे का इन्तजार ही कर रहा था।

जैसे ही मछियारे ने बच्चे को नदी के पानी में फेंका उसने उसे अपने हाथों में लपक लिया और उसके अपने सोने चॉदी और सीपी के बने महल में ले गया जिसमें हीरों से जड़ी सजावट की चीज़ें लगी हुई थीं।

वहॉ वह बच्चा उनकी पूरी देखभाल में पलने लगा। समय गुजरता रहा और बच्चा बड़ा होता रहा। अब वह बड़ा लड़का हो गया था। वह अब पन्द्रह साल का सुन्दर लड़का हो गया था। वह लम्बा था। उसकी ऑखें काली और नदी की तरह गहरी थीं। उसके बाल नदी की गहराइयों की तरह ही गहरे थे।

हालॉकि उसके ये सारे साल बहुत आराम में गुजरे थे पर उसने कभी कोई आदमी नहीं देखा था। उसने तो नदी का वह बड़े साइज़ का आदमी भी नहीं देखा था जो उसको वहॉ ले कर आया था और

उसको पाल रहा था। उसको तो बस उसकी आवाज ही सुनायी देती थी जिसमें वह महल में हुक्म चलाता था।

एक दिन नदी के बड़े साइज़ के आदमी की आवाज ने कहा — "मुझे बहुत लम्बी यात्रा पर जाना है। मैं तुम्हारे पास महल के सारे दरवाजों की चाभियॉ छोड़ जाता हूँ पर किसी के साथ तुम कोई गड़बड़ी नहीं करना। अगर तुम करोगे तो तुमको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

उसके बाद कई दिन बीत गये। उसके बाद उसको नदी के बड़े साइज़ की आवाज सुनायी नहीं पड़ी। उस आवाज के बिना उसे सारे महल में बहुत सूना सूना लगता था। वहॉ सब कुछ बहुत शान्त और अकेला था।

आखिर पन्द्रह दिन के बाद उसने बड़े साइज़ के आदमी की दी हुई चाभियों में से एक चाभी निकाली और उसको महल के उस दरवाजे में लगा कर देखा जिस दरवाजे में भी वह लग गयी। उस दरवाजे से हो कर वह महल के एक ऐसे कमरे में पहुँच गया जिसमें वह पहले कभी नहीं आया था।

उस कमरे में एक बहुत बड़ा शेर था। वह शेर बहुत मोटा था और खूब खाया पिया था। पर उस समय उसके खाने के लिये वहॉ भूसे के सिवा और कुछ नहीं था। लड़के ने वहॉ किसी को नहीं छेड़ा और दरवाजा बन्द कर के बाहर आ गया।

उसके बाद पन्द्रह दिन और बीत गये। लड़के ने फिर से एक चाभी ली और उसने महल का एक और दरवाजा खोला। वह इस दरवाजे से भी पहले कभी नहीं गया था। यह दरवाजा भी एक कमरे में खुलता था। इस कमरे में बहुत सारे कवच[32] और तलवार आदि रखे हुए थे।

वहॉ कटारें थीं। चाकू थे। तलवारें थीं। बहुत तरीके के कवच थे जिनको उस लड़के ने कभी देखा भी नहीं था। वह उनके बारे में कुछ जानता भी नहीं था। उसे उन चीज़ों को देखने की इच्छा भी हुई पर उसने उनमें से किसी चीज़ को छेड़ा नहीं।

अगले दिन उसने एक कमरा और खोला जिसमें बहुत सारे घोड़े रखे हुए थे। इस बार एक काले रंग का घोड़ा उससे बोला — "हमको इस मॉस की जगह भूसा खाना बहुत अच्छा लगता है जो शायद गलती से हमारे पास छोड़ दिया गया है। लगता है शेर के पास हमारा भूसा होगा।

मेहरबानी कर के यह मॉस शेर को दे दो और उससे हमारा भूसा हमें ला कर दे दो। अगर जैसा मैं तुमसे कह रहा हूॅ तुम वैसा ही करोगे तो मैं हमेशा हमेशा के लिये तुम्हारा नौकर बन जाऊॅगा।"

लड़का वहॉ से वह मॉस उठा कर शेर के पास ले गया। शेर तो अपने सामने भूसे की जगह उस मॉस को देख कर बहुत खुश हो गया। लड़के ने वहॉ से भूसा उठाया और घोड़ों के पास ले गया।

[32] Translated for the word "Armor". It is normally worn for protection in wars.

पर तभी उसको याद आया कि आवाज ने तो उससे कहा था कि वह वहॉ किसी चीज़ को न छेड़े। "अब तो इस काम के लिये मेरी जान ले ली जायेगी।" यह सोच कर तो वह रोने और सुबकने लगा।

वहॉ के घोड़ों को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ।

वह काला घोड़ा बोला — "मैंने तुमको इस मुसीबत में डाला है तो अब मैं ही तुमको यहॉ से बाहर निकालूँगा। बस तुम मुझ पर यहॉ से बाहर जाने के लिये भरोसा रखना।"

काले घोड़े ने उससे कहा कि वह वहॉ से कुछ और कपड़े ले ले एक तलवार ले ले और एक बन्दूक ले ले और उसकी पीठ पर चढ़ जाये।

वह आगे बोला — "मैं यहॉ इस नदी की गहरायी में इतने दिनों तक रहा हूँ इसलिये मेरी चाल इस नदी से भी ज़्यादा तेज़ है। अगर पहले मुझे अपने भागने के बारे में कोई शक था भी तो क्योंकि अब मैंने यह भूसा खा लिया है तो मुझे पूरा यकीन है कि मैं अब दुनियॉ की किसी भी नदी से बहुत तेज़ भाग सकूँगा।"

और यह सच था। जब नदी का बड़े साइज़ का आदमी घर वापस आया और उसे पता चला कि लड़के ने उसकी चीज़ों के साथ कुछ छेड़छाड़ की है तो वह उसके पीछे जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग लिया।

पर वह काला घोड़ा उस लड़के को उस बड़े साइज़ के आदमी की पहुँच से जल्दी ही बहुत दूर ले गया। वे दोनों तब तक भागते रहे जब तक वे एक राज्य में नहीं आ गये।

उस राज्य के राजा के तीन बहुत सुन्दर बेटियाँ थीं। लड़के ने तुरन्त ही इस राजा के पास नौकरी करनी चाही।

राजा बोला — "मैं नहीं जानता कि तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो क्योंकि तुम्हारे हाथ तो इतने कोमल और गोरे हैं कि मैं सोच ही नहीं पा रहा हूँ कि मैं तुम्हें क्या काम दूँ।

शायद तुम मेरी तीन बेटियों के लिये रोज सुबह मेरे बागीचे से फूलों का एक एक गुलदस्ता ला कर दे दो।"

लड़के की आँखें नदी की गहरायी की तरह गहरी और काली थीं सो अगली सुबह जब वह राजकुमारियों के लिये राजा के बागीचे से तीन फूलों के गुलदस्ते ले कर उनके पास गया तो राजा की सबसे छोटी बेटी तुरन्त ही उससे प्यार करने लगी।

उसकी दोनों बड़ी बहिनें उस पर हँसने लगीं तो उसने कहा — "मुझे कोई चिन्ता नहीं कि तुम लोग क्या कहती हो। वह उन राजकुमारों में से किसी भी राजकुमार से बहुत सुन्दर है जिन्होंने हमारे छज्जों के नीचे प्रेम गीत गाये हैं।"

उसी रात पड़ोसी राज्यों से दो राजकुमार उन तीनों राजकुमारियों के छज्जे के नीचे प्रेम गीत गाने आये। राजा की दोनों बड़ी बेटियाँ इस पर बहुत खुश थीं।

पर सबसे छोटी राजकुमारी का प्रेम तो उसके दिल में और उसकी ऑखों में था इसलिये उन दोनों राजकुमारों ने उसी की बहुत तारीफ की।

नदी वाले लड़के ने भी उन दोनों राजकुमारों के प्रेम गीत सुने। उसने सोचा "काश मैं भी इन दोनों राजकुमारों के जैसा होता और मैं भी इनके जैसा गीत गा सकता।"

तभी उसने अपनी परछॉई बागीचे में लगे फव्वारे के पानी में देखी तो उसने देखा कि वह भी काफी कुछ उनके जैसा ही लग रहा था। उसने सोचा कि वह भी उन राजकुमारियों के छज्जों के नीचे गीत गायेगा।

पर उसको तो यही पता नहीं था कि वह गा सकता था या नहीं। पर सच तो यह था कि उसकी आवाज में नदी की बहने की आवाज का संगीत था। सो वह वहॉ गाने पहुॅच गया। जब उन दोनों राजकुमारों ने उसका गाना सुना तो उनका गाना रुक गया। उसका गाना तो उनके गाने से कहीं अच्छा था।

तीनों राजकुमारियों को तो यह पता ही नहीं था कि वह गाना कौन गा रहा है पर सबसे छोटी राजकुमारी को पता चल गया कि वह गाना कौन गा रहा है।

अगले दिन टूनमिन्ट[33] था। नदी के लड़के ने तो पहले कभी कोई भी और किसी भी किस्म का टूनमिन्ट देखा नहीं था सो वह

[33] Tournament

नहीं जानता था कि उसे क्या करना है। पर कुछ पल उसे देखने के बाद ही उसने सोच लिया कि वह भी उसमें हिस्सा लेगा।

वह अपने उस काले घोड़े को लेने गया जो उसे नदी की गहराइयों से निकाल कर बाहर ले कर आया था और वे हथियार लाने गया जो वह अपने साथ ले कर आया था।

उसने अपने साथ लाये कपड़े पहने, अपने काले घोड़े पर सवार हुआ, अपनी तलवार उठायी और टूनमैन्ट मे हिस्सा लेने जा पहुँचा। वह एक ऐसे घोड़े और ऐसे हथियारों को ले कर टूनमैन्ट के मैदान में पहुँचा तो वहाँ बैठा हर आदमी यही सोचने लगा कि यह कौन है।

सिवाय सबसे छोटी राजकुमारी के उसको कोई नहीं पहचान पाया। और जैसे ही उसने उसे देखा तो उसने अपने सिर से अपना पीला रिबन निकाल कर दे दिया।

अगले दिन जिन लोगों ने टूनमैन्ट में हिस्सा लिया था वे सब उस जंगली जानवर को ढूँढने के लिये चले जो अक्सर शहर में लोगों को परेशान करने आ जाता था।

पर उनमें से किसी को भी वह जानवर नहीं मिला। बाद में उन सबको पता चला कि केवल नदी के लड़के ने ही उस जंगली जानवर को मार दिया था।

जब वे इस खबर के साथ राजमहल लौटे कि वह जानवर मारा जा चुका है तो राजा ने कहा कि कल हम एक बहुत बड़ा उत्सव

मनायेंगे जैसा इस महल में पहले कभी नहीं मनाया गया होगा। यहाँ जितने भी लोग इस टूर्नामेन्ट में हिस्सा लेने आये हैं वे सब कल चिड़ियें मारने जायेंगे जो हमारी मेज की शोभा बढ़ायेंगीं।

सो अगले दिन सारे लोग चिड़िया मारने चले। पर वह केवल नदी का लड़का ही था जिसने चिड़ियें मारीं। और दूसरा कोई भी चिड़िया नहीं मार सका। यह देख कर वे दो राजकुमार उम्मीदवार बहुत निराश हुए। वे सबसे छोटी राजकुमारी के उम्मीदवार थे।

उन्होंने आपस में एक सौदा किया — "हम इस अजनबी को अपनी इज़्ज़त इस तरह से नहीं ले जाने देंगे। सो उत्सव के समय तुम कहना कि तुमने जंगली जानवर मारा और मैं कहूँगा कि मैंने चिड़ियें मारीं।"

सो उस रात जब उत्सव मनाया गया तो एक राजकुमार राजा के सामने जा कर खड़ा हुआ और उसने उसे अपनी जंगली जानवर को मारने की कहानी बतायी। फिर दूसरा राजकुमार खड़ा हुआ और उसने उसे अपनी चिड़ियें मारने की कहानी सुनायी।

पर वहाँ बैठे सब कुलीन लोग यह जानते थे कि वे दोनों ही कहानियाँ झूठी थीं। उन्होंने उस उम्मीदवार को ढूँढने के लिये वहाँ चारों तरफ देखा जिसने यह सब किया था तो वह तो उनको वहाँ कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

क्यों? क्योंकि उस नदी के लड़के ने अपने बागीचे के नौकर वाले कपड़े पहन रखे थे और वह उस दावत वाले कमरे में दूसरे

नौकरों के साथ नीचे की तरफ खड़ा हुआ था। इसलिये उसको कोई पहचान ही नहीं सका।

जब राजा ने उन दोनों राजकुमारों की कहानियॉ सुनी तो वह उनके काम से बहुत खुश हुआ और बोला — "जिस राजकुमार ने जंगली जानवर मारा है वह मेरी एक बेटी से शादी करेगा और जिस राजकुमार ने चिड़ियें मारी हैं वह मेरी दूसरी बेटी से शादी करेगा।"

सबसे छोटी राजकुमारी ने नदी वाले लड़के को नौकरों के बीच खड़ा देखा तो वह उसकी ऑखों में देख कर मुस्कुरायी।

वह लड़का राजा के सामने आया और राजा को प्रणाम किया और बोला — "ओ राजा, ये कहानियॉ जो अभी आपने सुनी हैं वे दोनों झूठी हैं। जैसा कि यहॉ बैठे ये सारे कुलीन लोग आपको गवाही दे सकते हैं।

वह मैं था जिसने जंगली जानवर मारा और वह भी मैं ही था जिसने चिड़ियों को मारा। इसलिये आपकी एक बेटी मेरी है।"

वहॉ बैठे सारे कुलीन लोगों ने उस लड़के को उसके बागीचे के कपड़े पहने होने के बावजूद उस रूप में भी पहचान लिया।

वे सब एक साथ बोले — "हॉ यही वह लड़का है। यह सच बोल रहा है। यही हम सब में वह शानदार बहादुर लड़का है जिसने जंगली जानवर और चिड़ियों को मारा है। इनाम इसी को मिलना चाहिये।"

यह सुन कर सबसे छोटी राजकुमारी का दिल खुशी से भर गया। अगले दिन ही उन दोनों की शादी हो गयी।

नदी के बड़े शरीर वाले आदमी को भी इस बात का पता चला तो उसने हीरे और मोती का एक हार राजकुमारी और उस लड़के के लिये शादी की भेंट में भेजा जिसको वह अपने महल में लाया था।

अफसोस कि मछियारे और उसकी पत्नी को यह कभी पता नहीं चल सका कि उनका बेटा कितना खुशकिस्मत था।

8 झरने की कहानी[34]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के पैरैगुए देश में कही सुनी जाती है।

बूढ़ा सरदार अगुआरा[35] जानता था कि वह एक खुशकिस्मत आदमी था। और दूसरे पिताओं की तरह वह यह भी जानता था कि उसकी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की थी।

बहुत सारी जातियों के नौजवान उसकी बेटी येती[36] का हाथ मॉगने के लिये आये। पड़ोस के सरदारों ने उससे शादी करने के लिये बहुत सारी जायदाद और पैसा देने के लिये भी कहा पर उन सबको वापस भेज दिया गया।

[34] The Legend of Waterfall - a folktale from Paraguay, South America. Adopted from the Web Site : http://www.themuralman.com/paraguay/santa_maria_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin
[Note from Phillip Martin – The Guaraní, the indigenous people of Paraguay, didn't tell those kinds of stories in which people lived happily thereafter. In their stories I found, nobody lived happily ever after and this is no exception. Nobody everlived happily thereafter in any of their stories I located. Never. Not even once. That included Romeo and Juliet, or in this case, Cavureí and Yeteí. Even though this tale is written with all the respect found in "The Princess Bride", you have been warned.]
[Another Note from Philip Martin - if you didn't like how Romeo and Juliet ended, well . . . don't be surprised if you don't like what happens in this tale. The Guaraní of old, the indigenous people of Paraguay, must have had a very difficult life. That included Romeo and Juliet, or in this case, Cavureí and Yeteí. Even though this tale is written with all the respect found in "The Princess Bride" (film), you have been warned.]
[My Note – it seems like an Indian film story.]
[35] Aguara – name of the tribal Chief of the people of Paraguay
[36] Yetei – name of the girl

जब येती पैदा हुई थी तो उस जाति के जादू टोना करने वाले एक जादूगर[37] ने उसके बारे में यह कहा था कि उसका प्यार उसको नीचे गिरा देगा और उसकी मौत की वजह बनेगा।

इसलिये आये हुए उम्मीदवारों में से किसी को भी येती से बात करने तक का भी मौका नहीं दिया गया। पर वह बूढ़ा सरदार बेचारा और करता भी। इस सबको करने के लिये उसकी अपनी वजह थी।

बस सरदार को तो उन सबसे इतना ही कहने की जरूरत थी कि उसकी बेटी ने अपनी ज़िन्दगी टूपा[38] के नाम लिख दी है और सारे लड़के उसकी ज़िन्दगी से बिल्कुल दूर कर दिये गये। कहानी खत्म? सरदार अगुआरा ने तो यह कहानी ऐसे ही लिखने की सोचा था।

वह अपनी बेटी पर निगाह रखने की कितनी भी कोशिश करता पर वह हर पल और हर दिन तो उस पर इस तरह निगाह नहीं रख सकता था।

एक बदकिस्मत शाम को जब येती जंगल में घूम रही थी तो एक चीता[39] अचानक उसके रास्ते में आ गया। दूसरे लोग और नौजवान तो उससे केवल शादी ही करना चाहते थे पर इस चीते ने तो उसको खुद को खाने की सोचा।

[37] Translated for the word “Sorcerer”
[38] Tupa – the God of Creation
[39] Translated for the word “Jaguar”. See its picture above.

उसको देखते ही येती बहुत ज़ोर से चीख पड़ी और उसकी चीख सारे जंगल में गूँज गयी पर वह अपने घर से बहुत दूर थी इसलिये उसका पिता उसकी वह चीख नहीं सुन सका।

वह चीता धीरे धीरे उसके पास तक आ गया और फिर तो सब कुछ बहुत जल्दी हो गया। चीता उस लड़की के ऊपर कूदा ही था कि तभी रास्ते के किनारे किनारे जो झाड़ियॉ लगी हुई थीं उनके बीच से रास्ता बनाता हुआ एक भाला आया और उसने उस बड़े से चीते को मार दिया।

येती ने उन झाड़ियों के पीछे दो बहुत ही सुन्दर काली ऑखें देखीं। ऐसी आखें उसने पहले कभी नहीं देखी थीं। वे कैवूरी[40] की ऑखें थीं। कैवूरी किसी दूसरे कबीले का बहुत ही निडर बहादुर और ताकतवर शिकारी था।

उसने लड़की की तरफ देखा और जो कुछ भी उसके दिमाग में सबसे पहले आया वह वही बोला — "देखो डरो नहीं, मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

यह सोचते हुए कि उसने उस चीते से उसकी अभी अभी जान बचायी है ये उसके लिये कोई सबसे अच्छे शब्द नहीं थे पर कैवूरी को जवान लड़कियों के साथ बात करने की आदत नहीं थी न इसी लिये उसके मुँह से यही शब्द निकल पाये। ऐसा क्यों?

[40] Cavurei – the name of the hunter

येती की ही तरह से जब कैवूरी पैदा हुआ था तो उस कबीले के एक जादू टोना जानने वाले ने भी उसके पिता सरदार जुरूमी[41] से कैवूरी के बारे में यही कहा था कि उसका प्यार ही उसको नीचे गिरायेगा और उसके लिये उसकी मौत बन कर आयेगा।

इसलिये हालॉकि कैवूरी बहुत ही निडर बहादुर ताकतवर और एक शानदार लड़ने वाला था फिर भी उसके पिता ने उसको उन बहुत सारी लड़कियों से दूर रखा हुआ था जो उससे शादी करना चाहती थीं।

पर किस्मत की बात, दोनों ही सरदार वहॉ नहीं थे जहॉ उनके बच्चे मिले। जैसे ही उन दोनों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों ने ही अपने अपने दिलों में एक दूसरे के लिये कुछ खास महसूस किया।

यह पहली नजर का प्यार था। उस लड़के ने भी इतने सुन्दर बाल और किसी की पलकों के इतने सुन्दर बाल कभी नहीं देखे थे। और उस लड़की ने कभी किसी नौजवान का इतना सुन्दर मजबूत शरीर और इतनी काली ऑखें नहीं देखी थीं।

येती जब उसकी तरफ देखते हुए होश में आयी तो बोली — "मेरे पिता तुमको मेरी जान बचाने के लिये बहुत बड़ा इनाम देंगे।"

कैवूरी बोला — "अच्छा? कौन हैं तुम्हारे पिता जी?"

येती मुस्कुरा कर बोली — "मेरे पिता सरदार अगुआरा हैं और वह तुमको बहुत प्यार करेंगे।"

---

[41] Chief Jurumi – name of the Chief of another Clan

इस बार उसके दिल ने कोई अजीब सी बात महसूस नहीं की बल्कि एक ठंडी लहर उसकी रीढ़ की हड्डी से हो कर गुजर गयी। क्योंकि उसके सामने तो उसके कबीले के दुश्मन कबीले के सरदार की बेटी खड़ी थी।

कैवूरी बोला — "मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के सामने नहीं ले जा सकता। वह मुझे देखते ही मार देंगे क्योंकि मैं सरदार जुरूमी का बेटा हूँ – उनके सबसे बड़े दुश्मन का बेटा।

इसके अलावा मुझे कोई इनाम भी नहीं चाहिये। मेरे लिये तुमसे मिलना ही काफी है। पर मुझे लगता है कि तुमने मेरा दिल चुरा लिया है।"

येती बोली — "अगर तुम मुझे मेरे गॉव तक नहीं ले जाओगे तो क्या मेहरबानी कर के तुम मुझे जंगल की हद तक छोड़ दोगे? मेरे पैर में चोट लग गयी है और मैं बहुत तेज़ नहीं चल सकती।"

"हॉ वहॉ तक तो मैं तुमको ले जा ही सकता हूँ। चलो, मैं तुमको वहॉ तक ले चलता हूँ।" और कैवूरी येती को उठा कर जंगल की हद तक ले चला। हर कदम पर उसका प्यार येती के लिये बढ़ता ही जा रहा था।

जब वे दोनों जंगल की हद के पास पहुँचे तो कैवूरी ने येती को अपना प्यार जता ही दिया। वह बोला —"मैं अपने पिता से कहूँगा कि वह गुस्से को एक तरफ उठा कर रख दें ताकि हम लोग एक साथ रह सकें।

अब समय आ गया है कि हमारे कबीलों की यह दुश्मनी खत्म हो जानी चाहिये और हम लोगों को मिलजुल कर रहना चाहिये। हम लोगों के मिलने से दोनों कबीलों के एक होने का समय शुरू होगा।"

येती ने हॉ में हॉ मिलायी — "हॉ यह तो ठीक है।"

और इस समझौते पर दोनों के चुम्बन की मुहर लग गयी।

इस जवान जोड़े के लिये तो उनके इस चुम्बन ने उनकी दुनियॉ ही हिला दी थी। इससे केवल उनकी अपनी दुनियॉ ही नहीं बल्कि यह धरती भी हिल गयी थी।

दोनों के लिये उनकी ज़िन्दगी बहुत ही खुशी से गुजर सकती थी पर टूपा इस सबसे बिल्कुल भी खुश नहीं था। उसको उन जादू टोना करने वालों की कही हुई बात का पता था। उसको तो यह भी पता था कि आगे क्या होने वाला है।

मौत, उदासी और बर्बादी कभी किसी को अच्छे नहीं लगते पर उस समय उन दोनों नौजवानों ने इस सबके बारे में सोचा ही नहीं।

कैवूरी बोला — "कल सुबह ही मैं अपने पिता से कहूँगा कि वह तुम्हारे पिता के पास अपना एक दूत भेजें। वह हमारे लोगों में शान्ति और एक साथ मिल कर रहने का ऐलान करेगा।"

पर दूत होने के बारे में तो तुम जानते ही हो न। पुराने समय में दूत का काम हमेशा ही सबसे सुरक्षित काम नहीं था, हालॉकि ऐसा होना चाहिये था पर ऐसा था नहीं। लोग हर समय ही यह नहीं

कहते थे कि "यह दूत है इसे मत मारो।" सो कई बार दूत मारे भी जाते थे।

हालॉकि हमें मालूम है कि वे बेचारे तो अपना काम कर रहे हैं पर फिर भी ऐसा होता था, और फिर ऐसा ही हुआ। सरदार अगुआरा ने सरदार जुरूमी के दूत को मार दिया।

अब कोई शान्ति नहीं थी, अब कोई एक साथ मिल कर रहने की बात नहीं थी और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अब कोई शादी नहीं थी।

एक मरे हुए दूत ने सरदार अगुआरा के विचारों को बिना किसी शक के बता दिया था कि वह अपनी बेटी की शादी कैवूरी से नहीं करना चाहता था। बस सब कुछ खत्म।

गुआरानी देश[42] में कुछ भी अच्छा नहीं था। कोई भी देख सकता था कि विरोधी घटनाएँ किस तरह एक के ऊपर एक जमा होती जा रही थीं।

दो सरदार थे जो अपने घमंड में चूर थे। दो जादू टोना करने वाले थे जिन्होंने उदासी, मौत और बर्बादी का ऐलान कर रखा था। दो प्यार करने वाले थे जिनके सितारे खराब थे। और इन सबके ऊपर था वह मरा हुआ दूत।

[42] Guarani Land where Guarani people lived.

सो सब कुछ बहुत ही खराब था। और यह तो तुम्हें याद ही होगा कि उन जादू टोना करने वालों ने उदासी, मौत और बर्बादी बता रखी थी।

दूत को मारने के बाद सरदार अगुआरा ने अपनी बेटी को एक पहरे वाले घर में रख दिया। उसका तो अपनी बेटी से कोई बात करने का भी मूड नहीं था। और कुछ ऐसा भी नहीं लगता था कि किसी और को भी उससे बात करने का कोई मौका मिल सकता था।

येती बहुत रोयी, बहुत चिल्लायी, दरवाजे में बहुत घूँसे मारे पर किसी से कुछ काम नहीं चला। अगर पहरेदारों ने कुछ सुना भी तो वे कुछ नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके किसी भी काम से उनका सरदार नाराज हो सकता था और वे उसको नाराज नहीं कर सकते थे।

येती जमीन पर गिर पड़ी और टूपा को याद करने लगी कि वही उसको कोई रास्ता दिखाये। टूपा ने तो कुछ भी नहीं कहा पर येती को अपने नीचे जमीन कुछ कॉपती सी लगी।

इस बीच वहॉ से कुछ दूर एक गॉव में सरदार जुरूमी कुछ और ही सोच रहा था। जिन दूतों के शरीर के हिस्से काट दिये गये थे उनको देख कर वह खुश नहीं था क्योंकि इससे लड़ाई होने की उम्मीद ज़्यादा थी और लड़ाई के लिये तो बहुत तैयारी करनी पड़ती है।

खुशकिस्मती से अगर कोई सरदार हो तो उसको काम तो बहुत ही कम करना पड़ता है क्योंकि काम करने के लिये और बहुत सारे लोग होते हैं पर फिर भी देखना तो पड़ता ही है।

स्त्रियॉ रात को आग जलाती हैं। छोटी लड़कियॉ तीरों को जहर में बुझाती हैं। आदमी लोग अपने चाकुओं, कुल्हाड़ियों और भालों पर धार रख कर उनको तेज़ करते हैं।

छोटे लड़के अपने चेहरे लड़ाई के रंग से रॅगते हैं और हमेशा ऐसे दिखायी देते हैं जैसे बहुत काम कर रहे हों ताकि वे कहीं लड़ाई वाली किसी मुश्किल में न पड़ जायें।

दोनों तरफ लड़ाई की तैयारियॉ होने लगीं तो आसमान भी काला पड़ने लगा। उन दोनों जादू टोना करने वालों में से एक जादू टोना करने वाले ने धीरे से कहा — "टूपा को अपने आदमियों की लड़ाई अच्छी नहीं लगती।" पर यह बात उसने ज़ोर से नहीं कही।

वह यह बात ज़ोर से कह ही नहीं सकता था क्योंकि जब तुमने एक बार उदासी, मौत और बर्बादी का ऐलान कर दिया तो सचमुच की उदासी, मौत और बर्बादी आने पर तुम अपनी वह बात नहीं बदल सकते। उसके लिये बहत देर हो चुकी होती है।

अब तो आग जलाने का, तीरों को जहरीला बनाने का, हथियारों को तेज़ करने का समय था। बस सब जगह मारो मारो मारो की ही आवाज सुनायी पड़ेगी।

जब दोनों तरफ के लोग लड़ाई के लिये इकट्ठा हो गये तब सब को यही लग रहा था कि बस अब दिन अच्छे नहीं हैं। शायद उनको इस बारे में दोबारा सोचना चाहिये। पर नहीं, उन्होंने भी यह नहीं सोचा।

जब तुम्हारे पैरों के नीचे से जमीन खिसकने लगे तो अक्लमन्दी इसी में है कि अपनी हिफाजत के लिये भाग लो। पर यहॉ यह भी नहीं हुआ।

आसमान जो थोड़ा गहरे रंग का हो गया था अब काला होने लगा मानो गुस्से से भरी भीड़ से भी आगे निकल जाना चाहता हो। बादल गरजने लगे, बिजली कड़कने लगी पर किसी ने उसकी तरफ भी कोई ध्यान नहीं दिया।

उन लोगों का दिमाग बदलने के लिये टूपा के हाथ में जो कुछ भी था उसने करने की कोशिश की पर वह उनका दिमाग नहीं बदल सका।

सब दिशाओं में तीर चलने लगे। जहरीले तीरों का जो काम था वह उन्होंने बहुत अच्छी तरह से किया। लोग उनसे मरने लगे। भाले इधर उधर चलने लगे और कुल्हाड़ियॉ लोगों को काटने लगीं।

कैवूरी अपने लोगों को सॅभाले हुए था। वह इधर उधर लोगों को मार रहा था। उसके केवल तीन काम थे – अपने पिता के दूत की मौत का बदला लेना, अपने प्यार को पाना और ससुर जी के आगे आने वाली समस्याओं को रोकना।

इधर येती अपने उस पहरे वाले घर में बिल्कुल भी खुश नहीं थी। सो जैसे बहुत समय से कहानियों में और लड़कियॉ करती रही हैं वह अपनी पिछली खिड़की से अपना प्यार ढूँढने निकल पड़ी।

पर उसकी बदकिस्मती से उसका प्यार तो लड़ाई के मैदान में था जिसके चारों तरफ खून ही खून था, मौत ही मौत थी, बर्बादी ही बर्बादी थी। फिर भी येती अपने प्यार में अन्धी हो कर लड़ाई के मैदान की तरफ चल दी।

अब तुम सोच सकते हो कि उसका पिता उसकी इस बात से कितना खुश हुआ होगा।

येती लड़ाई के मैदान में जा कर एक बड़े से पत्थर पर बैठ गयी। वहॉ से उसको लड़ाई के मैदान का सब कुछ साफ साफ दिखायी दे रहा था पर कोई भी सुन्दर लड़की उस सबको नहीं देख सकती थी – चारों तरफ तीर, भाले, कुल्हाड़ी, कटे सिर, खून आदि फैले पड़े थे।

जहर अपना काम बड़े अच्छे से कर रहा था। जहर भरे तीरों से चारों तरफ लोग मर मर कर गिर रहे थे। उस सबको देख कर येती की ऑखों में ऑसू आ गये। ऐसा लगता है कि ऑसू बहा कर शायद उसने कुछ अच्छा ही किया।

जब येती के ऑसू नीचे गिर रहे थे तो टूपा ने उसके उन ऑसुओं का एक नाला बना दिया। वह जितना ज़्यादा रो रही थी वह नाला उतना ही बड़ा होता जा रहा था।

येती के पास तो रोने के लिये बहुत चीज़ें थीं, जैसे उसके दॉये हाथ को बहादुर और साहसी कैवूरी था। तभी उसने देखा कि कैवूरी के हाथ में कुल्हाड़ी थी और वह उसके पिता की तरफ बढ़ा चला जा रहा था। कैवूरी कुल्हाड़ी चलाने में बहुत अच्छा था।

अपने ससुर के मामले को निबटा कर वह अपने प्यार की तरफ बढ़ा।

अब यह तो मुझे पता नहीं कि क्या कैवूरी को यह उम्मीद थी कि जिसने अभी अभी उसके पिता का खून किया है उसको देख कर उसका प्यार अभी भी अपने होश में होगा या नहीं पर उसके पास यह सब देखने का मौका ही नहीं था। वह तो अपने प्यार के पीछे पागल था।

सरदार तो शायद मर गया था पर फिर भी अभी और बहुत सारे तीर चलाने वाले मौजूद थे। उन्होंने बहुत सारे तीर चला दिये और वे सब निशाने पर लगे।

येती और ज़ोर से रो पड़ी।

इस तरह हमको पता है कि कम से कम एक जादू टोना करने वाला तो सही था। हर जगह उदासी, मौत और बर्बादी ही दिखायी दे रही थी।

दुखी दिल से सरदार जुरूमी ने अपने बेटे के टूटे हुए शरीर को उठाया और उसको येती के पैरों के पास रख दिया। येती उससे

लिपटती हुई उसके ऊपर गिर पड़ी और और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

अब तुम सोच सकते हो कि इससे ज़्यादा बुरा और क्या होगा। पर तुमको दूसरे जादू टोना करने वाले की बात भी याद है न?

येती मर गयी। क्या? तुमको और ज़्यादा विस्तार से जानना है? तो सुनो। सरदार जुरूमी कभी भी एक अच्छा ससुर नहीं बना।

जब येती अपने कैवूरी के शरीर के ऊपर बेहोश हो गयी तो उस कमीने सरदार जुरूमी ने एक चाकू निकाला और... ।

बस इतना ही कहना काफी है।

धरती कॉप उठी और सबको बहरा करने वाली बिजली की कड़क पूरे जंगल में गूँज गयी। पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े टूट गये। बड़े बड़े पेड़ उखड़ कर गिर पड़े। कोई चीज़ ज़ोर से जमीन से टकरायी और धरती हिल गयी।

इस सबसे यह साफ जाहिर होता था कि टूपा के लिये यह सब काफी था। तभी धरती फटी और उसमें एक बहुत बड़ी दरार पैदा हुई और वहॉ जो कुछ भी था वह दरार उस सबको निगल गयी। इनमें वे दोनों जादू टोना जानने वाले भी थे जिन्होंने यह सब बताया था।

येती के बारे में तो तुमको मालूम ही है कि उसका क्या हुआ। उसके ऑसुओं से बना वह नाला उस दरार के ऊपर से बह कर नीचे गिर गया जिससे वहॉ एक बहुत सुन्दर झरना बन गया।

टूपा ने उस झरने को एक बहुत ही ताकतवर प्यार के टोटके का आशीर्वाद दिया। उस दिन से बहुत सारी स्त्रियॉ उस झरने का पानी पीने वहॉ जाती है और जो स्त्रियॉ उस पानी को पीती हैं उनका विश्वास है कि उस पानी को पीने से उनको उनका प्यार मिल जाता है और फिर वह उनके पास ही रहता है।

तुम सोच सकते हो कि बस अब तो कहानी खत्म हो गयी पर इस कहानी के साथ ऐसा नहीं है यह तो अभी और भी है। क्योंकि टूपा ने ऐसा नहीं किया कि "इसके बाद वे खुशी खुशी रहे।"

नहीं, यह कहानी ऐसे खत्म नहीं होती। क्या तुम्हें मालूम है कि उन आदमियों का क्या हुआ जो जब धरती फट गयी तो उससे बनी उस गहरी खाई में गिर पड़े थे? वे मरे नहीं थे।

उनको उस खाई में बहुत बहुत बहुत समय तक वहीं घूमते रहने की बद्दुआ मिली थी – लड़ते हुए, घाव खाते हुए, इधर से उधर घूमते हुए और दुख सहते हुए। मुझे लगता है कि उन दोनों जादू टोना जानने वालों की भी शायद यही हालत हुई होगी।

9 चिड़ियों का राजा[43]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के सुरीनाम देश में कही सुनी जाती है।

यह बहुत पहले की बात है कि एक बार बहुत सारी चिड़ियॉ एक बड़ी मीटिंग के लिये इकट्ठा हुईं। उस मीटिंग में सब साइज़, शक्ल और रंग की चिड़ियें थीं – बहुत छोटी, बड़ी, बहुत बड़ी और बहुत बहुत बहुत बड़ी। काली, पीली, भूरी, कत्थई, सफेद आदि आदि रंगों की।

उनमें से कुछ चिड़ियें बीज खाती थीं, कुछ कीड़े मकोड़े खाती थीं, कुछ छोटे जानवर खाती थीं, कुछ मछली खाती थीं और कुछ दूसरी चिड़ियें ऐसी भी थीं जो कुछ दूसरी ही चीज़ें खाती थीं।

उनमें से कुछ गमी के मौसम की चिड़ियें थीं, कुछ ठंडे मौसम की चिड़ियें थी। कुछ ऐसी चिड़ियें थीं जो केवल एक जगह ही रहती थीं और कुछ ऐसी चिड़ियें थीं जो मौसम के साथ साथ कभी यहॉ और कभी वहॉ रहती थीं।

---

[43] The King of the Birds – a folktale from Surinam, South America. Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=86
Retold and written by Mike Lockett.
[My Note: A similar folktale “Tink-Tinkje” is found in South Africa also. Read it in “Dakshin Africa Ki Lok Kathayen” by Sushma Gupta in Hindi language.]

सारी चिड़ियों के पंख थे पर फिर भी कुछ आसमान में उड़ती थीं जबकि कुछ जमीन के पास रहना पसन्द करती थीं। आसमान में उड़ने वालों में भी कुछ चिड़ियें नीची उड़ती थीं और कुछ बहुत ऊँची। कुछ चिड़ियें दूर तक उड़ सकती थीं जबकि कुछ बहुत छोटी उड़ान भरती थीं।

आवाजों के मामले में कुछ चिड़ियें चिल्लाती थीं, कुछ चीं चीं करती थीं, कुछ गाती थीं और कुछ बहुत कठोर आवाज में बोलती थीं पर इस समय सब एक साथ बोल रही थीं।

वे सब बात करना चाह रही थीं और उनमें से कोई भी किसी की भी सुनने को तैयार नहीं था कि तभी "गरज" की एक आवाज सुनायी दी। शेर की गरज ने सबको चुप कर दिया था।

शेर सब जंगली जानवरों का राजा था और वह सब जानवरों पर राज करता था। पर उसको यह भी साफ साफ पता था कि वह आसमान पर किसी तरह भी राज नहीं कर सकता था क्योंकि वह उड़ नहीं सकता था। इसी लिये उसने आज चिड़ियों की यह मीटिंग बुलायी थी।

इस मीटिंग में वह चिड़ियों का राजा चुनना चाहता था। यह विचार ही उन चिड़ियों के लिये एक साथ बात करने का मौका बन गया था।

शेर चिड़ियों से बोला — "तुम लोगों को कोई तरीका निकालना चाहिये जिससे तुम लोग अपना राजा चुन सको।" फिर उसने सलाह दी — "शायद कोई मुकाबला कर के.... ।"

नाइटिन्गेल चिड़िया[44] बोली — "हॉ यह तो है। हम कोई मुकाबला रख सकते हैं जैसे कि सबसे अच्छा कौन गा सकता है। पर अगर पहले मैंने गाया तो सारी चिड़ियॉ मुझे ही अपना राजा बनाना चाहेंगी। इस तरह से यह मुकाबला ठीक नहीं रहेगा और मैं अपने सारे दोस्तों को खो दूँगी।"

बाज़[45] चुप बैठा रहा। वह भी चिड़ियों का राजा बनना चाहता था। वह जानता था कि अगर यह मुकाबला हुआ कि कौन सबसे ऊँचा उड़ सकता है। और सबसे ऊँचा उड़ने में तो वह यकीनन जीत ही जायेगा और राजा बन जायेगा।

पर यह सब उसने चिड़ियों से नहीं कहा क्योंकि वह भी अपने दोस्तों से बना कर रखना चाहता था।

पर उसने अपने पास बैठे एक बहुत छोटे से कुनीबर[46] चिड़े से कहा — "भगवान ने हम सबको पंख दिये हैं। शायद हमारा राजा वह होना चाहिये जो सबसे ऊँचा उड़ सकता हो ताकि वह सबसे ऊँचा उड़ कर अपने पूरे राज्य को देख सके।"

---

[44] Nightingale Bird

[45] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

[46] Kunibre bird – a very little bird

यह सुन कर वह छोटा सा कुनीबर चिड़ा तुरन्त ही सब चिड़ियों के बीच में पहुँच गया और बोला — "मेरे साथी चिड़ो, भगवान ने हम सबको पंख दिये हैं। पर हमारा राजा वही होना चाहिये जो सबसे ऊँचा उड़ सके ताकि वह सबसे ऊँचा उड़ कर अपने पूरे राज्य की देखभाल कर सके।"

जो कुछ उसने सब चिड़ियों से कहा वह बाज़ को बहुत अच्छा लगा।

वे चिड़ियाँ भी जो उड़ना नहीं जानती थीं इस बात पर राजी हो गयीं कि उनका राजा ऐसा ही होना चाहिये जो इतना ऊँचा उड़ सके कि वह अपने सारे राज्य पर नजर रख सके।

और एक आवाज में बोलीं — "हाँ, हमारा राजा वही होना चाहिये जो सबसे ऊँचा उड़ सके।"

पर किसी ने कुनीबर को अपनी जगह छोड़ कर वहाँ से बाज़ जहाँ बैठा था वहाँ जाते नहीं देखा। और न ही किसी ने उसको बाज़ की पीठ पर चढ़ते देखा। पर वह तो बाज़ की पीठ पर चढ़ा बैठा था।

बाज़ यह सोच सोच कर बहुत खुश था कि अब वह राजा हो जायेगा और इस खुशी में उसको अपनी पीठ पर बैठा हुआ कुनीबर चिड़े का बोझ भी बिल्कुल भी पता नहीं चला क्योंकि वह तो घरों में आने वाली चिड़िया से भी बहुत हलका था।

उधर कुनीबर चिड़े ने बाज़ के पंख कस कर पकड़ रखे थे।

बस इसी मुकाबले में हिस्सा लेने के लिये सब चिड़ियों ने अपने अपने पंख फड़फड़ाये और आसमान की तरफ उड़ चलीं। बाज़ भी उड़ चला। बाज़ जल्दी ही जंगल के सब पेड़ों के ऊपर पहुँच गया।

वहाँ उसने एक चक्कर लगाया ताकि दूसरी चिड़ियों को भी उड़ने का समय मिल सके। हर बार जब दूसरी चिड़ियें उसके पास तक आ जातीं तो वह चक्कर काटता हुआ और ऊपर तक उड़ जाता।

अब वह इतना ऊँचा पहुँच गया था कि वहाँ तक अब कोई चिड़िया नहीं पहुँच पा रही थी। उसकी तो खुशी का पारावार न रहा जब नीचे से उसने सारी चिड़ियों को यह कहते सुना — "बाज़ ही हमारा राजा होना चाहिये।"

अब सब चिड़ियों ने नीचे जमीन पर उतरना शुरू कर दिया। बाज़ सबसे आखीर में नीचे उतरा और एक शाख पर आ कर बैठ गया।

जैसे ही बाज़ शाख पर बैठा सब चिड़ियों ने देखा कि कुनीबर चिड़ा बाज़ की पीठ से उतरा और हवा में उड़ कर सब चिड़ियों के बीच में जा कर बैठ गया। वह वहाँ कुछ बोला नहीं बस मुस्कुराने लगा।

एक चिड़िया बोली — "बाज़ सबसे ऊँचा उड़ा था वही हमारा राजा होना चाहिये।"

लेकिन तभी दूसरी चिड़िया ने उनको याद दिलाया कि मुकाबला यह नहीं था कि कौन सबसे ऊँचा उड़ता है पर मुकाबला यह था कि आसमान में सबसे ऊँचा कौन जा सकता है। कुनीबर आसमान में सबसे ऊँचा चला गया था और उसको तो उड़ना भी नहीं पड़ा।

उसने अपना दिमाग इस्तेमाल किया और बाज़ को उड़ने दिया। कुनीबर क्योंकि बाज़ की पीठ पर था इसलिये वह बाज़ से ऊँचा था।"

बाज़ ने भी माना कि होशियार कुनीबर उससे ऊँचा था। इस तरह से होशियार कुनीबर सब चिड़ियों का राजा बन गया। सच है होशियारी बड़ी चीज़ है।

10 एक बड़े साइज़ के आदमी का शिष्य[47]

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप की यह लोक कथा हमने उसके ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि जंगल के किनारे पर एक लड़का रहता था जिसका नाम मनोइल[48] था। वह अपने माता पिता के साथ रहता था। उसके माता पिता इतने गरीब थे कि वे उसको पढ़ने के लिये स्कूल नहीं भेज सकते थे।

अब वह क्योंकि स्कूल नहीं जाता था तो वह सारा सारा दिन खेलता ही रहता था। कभी मैदानों में कभी नदी के किनारे कभी जंगल के किनारे जहॉ बड़े साइज़ का आदमी[49] रहता था।

एक दिन जब मनोइल खेलने के लिये जंगल की तरफ गया हुआ था तो उसको वह बड़े साइज़ का आदमी मिल गया।

बड़े साइज़ का आदमी जंगल में क्योंकि अकेला रहता था तो उसको वहॉ बड़ा अकेलापन लगता था। मनोइल के देख कर उसको लगा कि उसके पास भी मनोइल जैसा एक लड़का हो तो कितना अच्छा हो।

---

[47] A Giant's Pupil – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_33.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[48] Manoel – the name of the boy

[49] Translated for the word "Giant"

सो जैसे ही उसने मनोइल को देखा तो वह तो उसको बहुत ही अच्छा लगा। बस फिर क्या था उस दिन के बाद से वे दोनों रोज ही साथ साथ रहने लगे।

बड़े साइज़ के आदमी ने मनोइल को जंगल के बहुत सारे भेद[50] बताये। उसने उसको हवा बारिश गरज और बिजली के भी भेद बताये। फिर उसने उसको जंगली जानवरों चिड़ियों और सॉपों के बारे में भी बहुत कुछ बताया।

इस तरह से उस बड़े साइज़ के आदमी के साथ सीखते सीखते मनोइल एक बहुत ही अक्लमन्द लड़का बन गया। उसके माता पिता को उसकी अक्लमन्दी पर बड़ा घमंड होने लगा यहॉ तक कि उसके गुरू बड़े साइज़ के आदमी को भी।

एक दिन राजा का एक दूत घोड़े पर चढ़ कर राजा की बेटी का सन्देश ले कर राज्य में आया कि राजा की बेटी सुन्दर राजकुमारी केवल उसी से शादी करेगी जो उससे कोई ऐसी पहेली पूछेगा जिसका वह जवाब नहीं दे सकेगी।

वे सब राजकुमार जिन्होंने उसके छज्जे के नीचे प्रेम के गीत गाये थे वे सब बेवकूफ थे। राजकुमारी तो किसी ऐसे आदमी से शादी करना चाहती थी जो उससे ज़्यादा अक्लमन्द हो।

जब मनोइल ने राजकुमारी का यह सन्देश सुना तो उसने अपने माता पिता से कहा — "पिता जी मैं राजकुमारी से एक पहेली पूछने

[50] Translated for the word "Secret"

के लिये उसके महल जा रहा हू। मुझे पूरा यकीन है कि वह मेरी पहेली नहीं बूझ पायेगी।"

उसकी मॉ ने कहा — "हमें मालूम है बेटा कि तुम एक बहुत ही होशियार और चतुर लड़के हो पर वहॉ महल में तो बहुत सारे सुन्दर राजकुमार और कुलीन लोग होंगे जो राजकुमारी से अपनी अपनी पहेलियॉ पूछ रहे होंगे। बेटे तब क्या होगा जब राजकुमारी एक मैले से कपड़े पहने हुए लड़के की पहेली सुनेगी ही नहीं।"

मनोइल बोला — "मॉ तुम चिन्ता न करो मैं उसको अपनी पहेली सुना कर ही रहूॅगा।"

मनोइल के पिता ने पूछा — "तुम उससे कौन सी पहेली पूछोगे बेटा?"

लड़का बोला — "मैंने उसके बारे में अभी कुछ सोचा नहीं है पिता जी। जब मैं महल जा रहा होऊॅगा तब मैं अपनी पहेली बनाऊॅगा। और मैं वहॉ तुरन्त ही जाना चाहता हूॅ।"

दयालु बड़े साइज़ के आदमी को जो अब तक मनोइल का दोस्त बन चुका था जब इसका पता चला तो उसने मनोइल को आशीर्वाद दिया और उसकी खुशकिस्मती के लिये प्रार्थना की।

लड़के की मॉ ने उसके लिये उसके साथ ले जाने के लिये खाना बनाया। उसका पिता घर के दरवाजे के बाहर बैठ कर अपने सब पड़ोसियों से यह डींग हॉकने लगा कि उसका बेटा राजा की बेटी से शादी करने जा रहा है।

मनोइल ने अपनी मॉ से अपना खाना लिया और यात्रा में अपने साथ के लिये अपना कुत्ता साथ ले लिया ओर राजा के महल की तरफ चल दिया।

मनोइल चलता रहा चलता रहा। उसने जंगल पार किये नदी पार की। आखिर उसकी मॉ का दिया हुआ खाना खत्म हो गया।

जब उसको फिर भूख लगी तो रास्ते में पड़े एक शहर में उसने अपने आखिरी पैसे से कुछ रोटी खरीदी। उसको ले कर वह उसे खाने के लिये जंगल की तरफ चलता चला गया।

पर उसको खुद खाने से पहले उसने उसका एक टुकड़ा तोड़ कर अपने कुत्ते को खिलायी। उसको खा कर उसका कुत्ता तुरन्त ही मर गया क्योंकि वह रोटी जहरीली थी।

मनोइल को अपने कुत्ते का इस तरह मरता देख कर रोना आ गया सो वह वहीं रास्ते में रुक गया। तभी उसने देखा कि तीन बाज़[51] उड़ते हुए वहॉ आये और उसके कुत्ते को खा गये। अब क्योंकि कुत्ता जहर खाने से मरा था तो वे भी उसके कुत्ते को खाते ही मर गये।

उसी समय लड़के ने कुछ आवाजें सुनीं तो उसने देखा कि सात घुड़सवार उधर चले आ रहे थे। ये लोग डाकू थे और हालॉकि उनकी जेबों में बहुत सोना था पर उनके पास खाना नहीं था।

[51] Translated for the word “Hawk”. See its picture above.

उन्होंने जब तीन बाज़ मरे पड़े देखे तो उन डाकुओं के कप्तान ने कहा — "हमें बहुत भूख लगी है। हम लोग यह मरे हुए बाज़ तो खा ही सकते हैं।"

सो उन डाकुओं ने लालची तरीके से वे तीनों बाज़ उठा लिये और उनको जल्दी जल्दी खाने लगे। उन बाज़ों को खाते ही वे भी मर गये क्योंकि वे बाज़ भी जहरीले हो चुके थे।

मनोइल ने सोचा "तीन बाज़ों ने मेरे कुत्ते को चुराया तो वे मेरे हो गये। और जब सात डाकुओं ने मेरे तीन बाज़ चुराये तो वे डाकू मेरे हो गये।"

यह कहते हुए उसने सातों डाकुओं की जेबों से सारा सोना निकाला और उन डाकुओं के कप्तान के कपड़े पहन लिये क्योंकि उन सबमें उसी के कपड़े सबसे अच्छे थे। फिर वह उसी कप्तान के घोड़े पर चढ़ा क्योंकि उन सबमें उसी का घोड़ा सबसे अच्छा था।

इस तरह वह उनके कपड़े पहन कर और उनके घोड़े पर सवार हो कर राजा के महल को चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद उसको प्यास लगी तो उसने पानी ढूँढने की कोशिश की पर उसको कहीं पानी नहीं मिला तो उसने अपने घोड़े को बहुत तेज़ भगा दिया। इससे उसे पसीना आ गया सो उसी के पसीने से उसने अपनी प्यास बुझायी।

वह फिर महल की तरफ चल पड़ा। डाकुओं के कप्तान के कपड़े पहन कर और उसके बढ़िया घोड़े पर सवार हो कर महल में

घुसने में उसको कोई परेशानी नहीं हुई। उसको अपनी पहेली बूझने के लिये तुरन्त ही राजकुमारी के सामने ले जाया गया।

राजकुमारी ने मनोइल की ऑखों में जंगल के बहुत सारे भेदों को देखा जो उसको उस बड़े शरीर वाले आदमी ने सिखाये थे।

राजकुमारी ने सोचा "हूँ, तो यह नौजवान मुझसे एक पहेली पूछने आया है। इसकी पहेली तो सुनने के लायक होनी चाहिये।"

अब तक पड़ोसी राज्यों के जितने भी राजकुमारों और कुलीन लोगों ने उससे पहेलियॉ पूछी थीं वे सब पहेलियॉ बेवकूफी से भरी हुई थीं। वह उन सबसे ऊब चुकी थी। वह हमेशा ही उनकी पहेलियॉ उनके पहेलियॉ पूरी तरह से कहने से पहले ही बूझ देती थी।

लड़के को देख कर वह बोली — "पूछो तुम कौन सी पहेली पूछना चाहते हो?"

लड़का बोला —

मैं घर से जेब भर कर चला पर वह बहुत जल्दी ही खाली हो गयी
पर वह फिर भर गयी
मैं घर से एक साथी के साथ चला था मेरी भरी हुई जेब ने मेरे साथी को मार दिया
मेरे मरे हुए साथी ने तीन को मारा तीन ने सात को मारा
उन सातों में से मैंने सबसे अच्छे को चुना
मैंने वह पानी पिया जो ऊपर से नहीं गिरा था
और मैं दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी के सामने खड़ा हूँ

राजकुमारी ने उसकी पहेली बहुत ध्यान से सुनी। फिर बोली — "इसे ज़रा दोबारा कहो।" मनोइल ने अपनी पहेली दोहरा दी।

राजकुमारी ने सोचा और सोचा पर वह उसका कोई हल नहीं सोच सकी। और केवल वही नहीं महल में कोई और भी उस्सकी पहेली को हल नहीं कर सका।

तो राजकुमारी ने उसी को अपनी पहेली का हल बताने के लिये कहा। जब मनोइल ने अपनी पहेली का हल बताया तो वह बोली — "लगता है कि "नोसा सिन्होरा"[52] ने खुद ने तुम्हें मेरे पास भेजा होगा। क्योंकि मैं कभी किसी बेवकूफ आदमी को तो अपना पति स्वीकार कर ही नहीं सकती थी।"

[52] Nossa Senhora – maybe she or he is some kind of god or goddess in Brazilian culture.

11 कहना न मानने वाला बेटा[53]

दक्षिण अमेरिका की यह लोक कथा वहॉ की माया सभ्यता के लोगों में कही सुनी जाती है। माया सभ्यता वहॉ की बहुत पुरानी सभ्यता है।

एक बार की बात है कि एक लड़का था जो बहुत ही अक्खड़ किस्म का था। वह अपनी मॉ का कहना भी नहीं मानता था।

वह बिना खाना खाये ही बाहर घूमने चला जाता था। फिर वह रात को बहुत बहुत देर तक घर भी वापस नहीं लौटता था। जब तक वह घर वापस लौटता तब तक उसकी मॉ बेचारी उसकी चिन्ता करती रहती थी।

उसकी मॉ उससे पूछती "तू अब तक बाहर क्या कर रहा था। बहुत देर हो चुकी है मैं तो अब सोने जा रही हूॅ। मैं तो बस तेरा इन्तजार ही कर रही थी।

तू तो किसी की तरफ ध्यान ही नही देता। अब मैं तुझे तेरे गौडफादर[54] के पास भेजूॅगी। क्योंकि मैं जो कुछ भी तुझसे कहती हूॅ उसको तो तू सुनता ही नहीं है।"

---

[53] The Disobedient Son – a folktale from Maya people, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_1.html

[54] A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity

सो उसकी मॉ उसके गौडफादर पादरी के पास गयी और बोली — "गौडफादर मैं आपके इस गौडसन का क्या करूॅ। यह तो बहुत ही बदमाश है और मेरा कहा बिल्कुल ही नहीं मानता।

आप पादरी हैं आप ही अपने इस गौडसन को कुछ समझा सकते हैं। मैं उसका कुछ नहीं कर सकती। आपका यह गौडसन तो बहुत ही बड़ा गधा है। आप उसको अपने पास रख लीजिये और देखिये अगर वह कुछ ठीक से बरताव करना सीख जाये तो।"

"ठीक है गौडमदर[55]। तुम उसको मेरे पास भेज देना। मैं देखता हूॅ। उसको वह सब क्यों नहीं करना चाहिये जो मैं उससे कहूॅ। मैं तो सचमुच में पादरी हूॅ।

मैं अपने गौडसन को काम करना सिखाऊॅगा। मेरा गौडसन मेरा कहना जरूर मानेगा। तुम चिन्ता न करो मेरा गौडसन मेरा कहना जरूर मानेगा। तुम उसको मेरे पास ले आना।"

सो उस स्त्री ने अपने बेटे से कहा — "मेरे बेटे तू अपने गौडफादर के पास जा वही तुझे सिखायेगा। क्योंकि तू मेरा कहा तो मानता नहीं तो तू वहीं जा और वहीं काम कर।"

"ठीक है मॉ। मैं अपने गौडफादर के पास जाता हूॅ। क्योंकि मैं तुम्हारे किसी काम का नहीं तो मैं अपने गौदफादर के पास जाता हूॅ और वहीं काम करूॅगा।"

[55] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

और वह लड़का अपने गौडफादर के पास चला गया। वहाँ जा कर वह उनसे बोला — "गौडफादर मैं आपके पास आ गया हूँ अब आप मुझे बतायें कि मुझे क्या करना है।"

"ठीक है। अब तुम्हें मेरे पास काम करना है।"

"ठीक है गौडफादर। मैं आपके पास काम करूँगा। मैं वही करूँगा जो आप मुझसे करने के लिये कहेंगे। आप कुछ भी कहें मैं वही करूँगा।"

"ठीक। अब तुम वह सुनो जो तुमसे मैं कह रहा हूँ। सुबह सवेरे जल्दी ही तीन बजे उठ कर तुम सारी जगह साफ करोगे। और इसके लिये मैं तुम्हें नहीं जगाऊँगा। मैं बस तुमसे अभी ही कह रहा हूँ। यह काम तुम अपने आप ही करना।"

लड़का बोला — "ठीक है।"

सो सुबह सवेरे ही वह लड़का उठा और सफाई करने लगा। जब उस लड़के ने सफाई खत्म कर ली तो वह यह पादरी से कहने गया — "गौडफादर मैंने चर्च की सफाई खत्म कर ली है मैं आपसे यही कहने आया हूँ।"

"बहुत अच्छे। मुझे बहुत खुशी है कि तुमने सफाई खत्म कर ली है। अब तुम आराम करो।"

एक दिन और बीत गया और फिर गौडफादर ने उसको दूसरा काम दे दिया।

एक दिन गौडफादर ने अपने गौडसन ने कहा — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि कल सुबह तुम्हें क्या करना है। तुमको कल सुबह छह बजे उठ कर तीन बार घंटा बजाना है। और जब तुम यह कर लो तो मुझे आ कर बताना। फिर मैं चर्च में मास[56] पढ़ने जाऊँगा।"

लड़का बोला "ठीक है।"

जब अगला दिन खत्म हो गया तो वह लड़का घंटा बजाने गया ओर घंटा बजा कर वह पादरी के पास गया और बोला — "गौडफादर मैंने घंटा तीन बार बजा दिया है। अब उठने का और मास पढ़ने का समय हो गया।"

"बहुत अच्छे।" और एक दिन और निकल गया।

पादरी एक दिन फिर बोला — "आज मैं तुम्हें फिर बताने जा रहा हूँ कि कल तुम्हें क्या करना है। कल सुबह तीन बजे घंटा फिर से तीन बार बजाना।"

"ठीक है।"

अगले दिन उस लड़के को याद रहा कि सुबह तीन बजे उसे घंटा बजाना है सो वह उठा और घंटा बजाने गया पर पादरी ने इस बार उसका यह इम्तिहान लिया था। सो उसने उस घंटे के पास आदमी का एक ढाँचा[57] रख दिया।

[56] Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.
[57] Translated for the word "Skeleton". See its picture above.

वह लड़का जब सुबह तीन बजे घंटा बजाने गया तो रास्ते में उसको एक आदमी का ढॉचा मिला। लडके ने ढॉचे से कहा — "मेरे रास्ते से हट मैं घंटा बजाने जा रहा हूँ क्योंकि मेरे गौडफादर ने मुझसे घंटा बजाने के लिये कहा है। तू मेरे रास्ते में मत आ नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा।

पर वह तो ढॉचा था वह तो उसके रास्ते से न हटा, न वह हिला और न ही उसने कोई जवाब दिया।

लड़का फिर बोला — "या तो मुझे जवाब दे नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा। मैं तुझसे एक बार और पूछूँगा और अगर तूने मुझे तीसरी बार भी जवाब नहीं दिया तो मैं तेरे टुकड़े टुकड़े कर दूँगा। क्या तू यही चाहता है?"

इसके बाद भी वह ढॉचा न तो उसके रास्ते से हटा, न हिला और न ही उसने कोई जवाब दिया।

वह लड़का फिर बोला — "इस बार मैं तुझसे आखिरी बार पूछ रहा हूँ। अगर तूने इस बार भी जवाब नहीं दिया तो मैं तुझे मार ही दूँगा। क्या तू इसी लिये यहॉ मेरे रास्ते में खड़ा है?

अब तू न तो मुझे कोई जवाब दे रहा है और न यहॉ से हट रहा है तो बस तू यह जान ले कि अब तू मरेगा। मैं तुझे यहॉ से नीचे फेंक दूँगा।"

यह कह कर उसने वह ढॉचा वहॉ से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही ढॉचा टूट गया। उसने तीन बार अपना घंटा बजाया और

अपने गौडफादर के सोने के कमरे की तरफ उसको जगाने के लिये उसका दरवाजा खटखटाया।

पादरी अन्दर से बोला — "क्या है?"

लड़का बोला — "गौडफादर उठिये मैंने घंटा बजा दिया है।"

पादरी ने जब यह सुना तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला — "ओह तूने घंटा बजा दिया?"

लड़का बोला — "जी गौडफादर मैंने घंटा बजा दिया।"

"तुझे वहॉ कोई चीज़ दिखायी नहीं दी?"

"जी गौडफादर दिखायी दी।"

"तूने क्या देखा?"

"कोई चीज़ थी जो मेरे रास्ते में खड़ी थी। वह मुझे घंटा बजाने नहीं जाने दे रही थी।"

"तो फिर तूने क्या किया? तू उससे डरा नहीं?"

"नहीं गौडफादर।"

"तो फिर तूने क्या किया?"

"मैंने धक्का दे कर उसे नीचे फेंक दिया और उसे तोड़ दिया।"

12 डोमिंगो का बिल्ला[58]

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप की यह लोक कथा उसके ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जो बहुत बहुत बहुत ही गरीब था। वह इतना गरीब था कि उसको अपना पेट भरने के लिये अपने घर की कोई न कोई चीज़ बेचनी पड़ती थी।

ऐसा करते करते एक दिन ऐसा भी आया जब उसके घर की सारी चीज़ें बिक गयीं बस एक बिल्ला रह गया उसके पास।

उसको अपने बिल्ले से पहुत प्यार था। वह उससे बोला — "ओ बिल्ले, चाहे कुछ भी हो जाये पर मैं तुझको अपने से कभी अलग नहीं करूँगा। तुझको बेचने से तो मैं भूखा रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

बिल्ला बोला — "ओ मेरे अच्छे मालिक। भगवान आपको शान्ति दे। जब तक आपके पास मैं हूँ आप भूखे नहीं मरेंगे। मैं आपको और अपने आपको दोनों को अमीर बनाने के लिये दुनियॉ में बाहर जा रहा हूँ।"

---

[58] Domingo's Cat – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_34.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

कह कर वह बिल्ला जंगल की तरफ भाग गया। वहॉ जा कर वह एक जगह खोदता रहा खोदता रहा। जितनी बार भी उसने वहॉ जमीन खोदी उसमें से चॉदी के सिक्के निकले।

बिल्ले ने उनमें से बहुत सारे सिक्के उठाये और उनको अपने मालिक के पास ले गया ताकि वह उनसे खाना खरीद सके। बाकी बचे हुए सिक्के वह राजा के पास ले गया और उसको दे आया।

अगले दिन बिल्ला फिर जंगल गया और वहॉ उसने सोने के सिक्के खोदे और उनको राजा को दे आया। उसके अगले दिन वह फिर जंगल गया वहॉ उसने अबकी बार हीरे खोदे और उनको राजा के पास ले गया।

तो राजा ने पूछा — "ये कीमती भेंटें तुम्हें कौन दे रहा है और इतनी बढ़िया भेंटें मुझे कौन भेज रहा है।"

बिल्ला बोला — "यह मेरे मालिक डोमिंगो हैं जो इतनी कीमती भेंटें आपको भेज रहे हैं।"

अब राजा के एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। डोमिंगो की भेजी हुई भेंटें देख कर राजा ने सोचा कि यह डोमिंगो तो लगता है कि राज्य का कोई सबसे अमीर आदमी है। सो उसने निश्चय किया कि वव्ह अपनी बेटी की शादी उससे तुरन्त ही कर देगा। उसने बिल्ले की सहायता से शादी का इन्तजाम कर लिया।

जब बिल्ले ने डोमिंगो का बताया कि वह उसकी शादी राजा की बेटी से तय कर आया है तो डोमिंगो बोला पर मेरे पास तो शादी में

पहनने के लिये कपड़े तक नहीं हैं मैं राजा की बेटी से शादी कैसे कर सकता हूँ।

बिल्ला बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो मैं सब सँभाल लूँगा।"

बिल्ला राजा के पास गया और बोला — "राजा साहब। हमारे साथ एक बहुत ही खराब घटना घट गयी है। जिस दर्जी के पास हमारे मालिक डोमिंगो के शादी के कपड़े सिल रहे थे उसकी दूकान में आग लग गयी है और वह दर्जी और उसके सब नौकर उसमें जल कर मर गये हैं।

यहाँ तक कि मेरे मालिक के सब कपड़े भी उस आग में जल गये हैं। दूसरे दर्जी से सिलवाने में तो समय लगेगा। योर मैजेस्टी के पास कुछ कपड़े तो होंगे जो वह उनको शादी के लिये उधार दे सकें।"

राजा ने यह सुन कर बहुत दुख प्रगट किया और अपने पास से कीमती से कीमती कपड़े निकाल कर उसके पहनने के लिये भेज दिये। इस तरह डोमिंगो राजा के कीमती कपड़ों में तैयार हो कर शादी के लिये गया।

शादी के बाद डोमिंगो बिल्ले से बोला — "पर मेरे पास तो राजकुमारी को ले जा कर ठहराने के लिये कोई ढंग का घर भी नहीं है। मैं उसको कहाँ ले कर जाऊँगा।"

बिल्ला बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं देखता हूँ।"

बिल्ला फिर से जंगल चला गया। वहाँ जंगल में एक बहुत बड़ा किला था जिसमें एक बड़े साइज़ का आदमी[59] रहता था।

बिल्ला सीधा उस बड़े साइज़ के आदमी के पास गया और बोला — "ओ बड़े साइज़ के आदमी, मैं तुम्हारा किला अपने मालिक डोमिंगो के लिये उधार लेना चाहता हूँ। क्या तुम मेहरबानी कर के मुझे इसे कुछ देर के लिये उधार दोगे?"

यह सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी तो बहुत गुस्सा हो गया और अपनी सबसे भयानक आवाज में चिल्ला कर बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। मैं तुमको अपना यह किला तुम्हारे मालिक डोमिंगो या किसी और के लिये किसी भी हालत में बिल्कुल उधार नहीं दूँगा।"

बिल्ला बोला — "ठीक है मत दो।" कह कर उसने बड़े साइज़ के आदमी को पलक झपकते ही एक मॉस के टुकड़े में बदल दिया और खा गया। अब वह सारा किला उसका था और खाली था।

बड़े साइज़ के आदमी का महल तो बहुत ही बढ़िया था। उसमें एक कमरा चॉदी की चीज़ों से सजा था। एक दूसरा कमरा सोने की चीज़ों से सजा था। और एक तीसरा कमरा हीरों की चीज़ों से सजा था।

उसके बागीचे के दरवाजे के पास एक बहुत सुन्दर नदी बहती थी।

[59] Translated for the word "Giant"

यह इन्तजाम कर के वह तुरन्त ही अपने मालिक डोमिंगो के पास भाग गया और बोला — "मालिक आपका महल तैयार है। चलें।"

वह डोमिंगो और उसकी दुलहिन को उसी नदी में एक शाही नाव में बिठा कर उस महल में ले कर आया। जब डोमिंगो अपनी दुलहिन के साथ उस महल तक आया तो उसने देखा कि बिल्ला तो उस महल की एक खिड़की में बैठा हुआ गा रहा था।

वे खुशी खुशी अपने महल में घुसे और वहॉ रहने लगे।

इसके बाद उन्होंने उस बिल्ले को फिर कभी नहीं देखा। वह जंगल में चला गया और वहीं गायब हो गया। शायद वह वहॉ से किसी और गरीब आदमी को अमीर बनाने चला गया होगा।

यह भी हो सकता है कि वह वहॉ से वह कभी तुम्हारे सामने आ जाये। कौन जाने। और अगर आ जाये तो बस उसे जाने मत देना।

13 चतुरायी की खोज[60]

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप की यह लोक कथा उसके ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जिसके एक बहुत ही बेवकूफ बेटा था। उसके पिता ने उसको कई साल तक स्कूल भेजा ताकि वह कुछ सीख सके पर उसके सब मास्टरों ने उसके पढ़ने की उम्मीद छोड़ दी कि वह तो बहुत ही बेवकूफ था उसको किसी तरह भी नहीं पढ़ाया जा सकता था।

उन्होंने सबने एक आवाज में कहा — "इस लड़के को किताबों से कुछ भी सिखाने की तो कोशिश भी करना बेकार है। इसको सिखाना पढ़ाना तो हमारा कीमती वक्त भी बर्बाद करना है।"

आखिर राजा ने अपने राज्य के सभी अक्लमन्द लोगों को बुलाया और उनसे सलाह मॉगी कि राजकुमार को अक्लमन्दी सिखाने के लिये उसको क्या करना चाहिये।

वे सब एक साल और एक दिन तक सोचते रहे। उन अक्लमन्द लोगों की एक राय यह थी कि राजकुमार को किसी यात्रा पर भेज दिया जाये जिसमें वह कई देशों में जाये। हो सकता है कि

[60] The Quest of Cleverness – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_32.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

इस यात्रा से वह कुछ सीख पाये जो उसके मास्टर लोग उसको किताबों से न सिखा पा रहे हों।

यह सुन कर राजा ने उसकी यात्रा का इन्तजाम किया। उसको बहुत अच्छे कपड़े दिये। सवारी के लिये एक बहुत ही शानदार काला घोड़ा दिया और एक बड़ा सा थैला भर कर पैसे दिये।

इस तरह से एक सुबह राजकुमार पूरी तरीके से अपनी यात्रा के लिये तैयार हो कर अपने पिता राजा और अपने राज्य के सब अक्लमन्दों का आशीर्वाद ले कर अपनी यात्रा पर चल दिया।

उसने एक देश में एक चीज़ सीखी। दूसरे देश में दूसरी चीज़ सीखी। कोई ऐसा देश या राज्य नहीं था, छोटा या बड़ा, गरीब या अमीर, जिसने राजकुमार को कुछ न कुछ न सिखाया हो। और वह राजकुमार जो किताबों से सीखने में इतना बेवकूफ था अपनी यात्रा में खुले दिमाग से कुछ न कुछ सीखता चला गया।

काफी इधर उधर घूमने के बाद राजकुमार एक शहर में आया जहॉ एक गाने वाली चिड़िया नीलाम हो रही थी। उसने पूछा कि इस गाने वाली चिड़िया की क्या खासियत है।

बेचने वाले ने जवाब दिया कि यह चिड़िया अपने मालिक के हुक्म पर एक ऐसा गाना गाती है जो सुनने वाले को सुला देता है। राजकुमार ने सोचा कि यह चिड़िया तो खरीदने लायक है। सो उसने वह चिड़िया खरीद ली।

फिर उसने देखा कि एक बीटिल नीलाम हो रही थी। राजकुमार ने पूछा कि इस बीटिल की क्या खासियत है तो बेचने वाले ने जवाब दिया कि यह बीटिल किसी भी दीवार में छेद करने की ताकत रखती है। सो राजकुमार ने वह बीटिल भी खरीद ली।

उसके बाद एक तितली बेचने के लिये रखी गयी। राजकुमार ने पूछा कि इस तितली की क्या खासियत है तो जवाब मिला कि यह तितली अपने पंखों पर उतना बोझा उठा कर ले जा सकती है जितना कि इसके पंखों पर रखा जा सकता है।

राजकुमार ने सोचा कि वह तितली भी खरीदने लायक है सो उसने उसको भी खरीद लिया।

अब राजकुमार अपनी चिड़िया बीटिल और तितली के साथ अपनी यात्रा पर और आगे चल दिया। चलते चलते वह एक जंगल में आ गया पर वहॉ आ कर वह उस जंगल में रास्ता भूल गया और खो गया।

उस जंगल में पेड़ पौधे इतने सारे थे कि उसको कहीं रास्ता ही दिखायी नहीं दे रहा था।

सो वहॉ जो कोई भी उसको सबसे ऊॅचा पेड़ मिला वह उसी पेड़ पर चढ़ गया। वहॉ से उसको एक ऐसी चीज़ दिखायी दी जो एक पहाड़ की तरह दिखायी दे रही थी पर जब वह उसके पास पहुॅचा

तो उसने देखा कि वह तो एक दीवार थी जो बड़े साइज़ के लोगों[61] के देश के चारों तरफ बनी हुई थी।

उस दीवार पर एक बहुत बड़ा बड़े शरीर वाला आदमी खड़ा था जिसका सिर बादलों तक पहुँच रहा था। वह उस शहर का चौकीदार था।

बस राजकुमार ने अपनी चिड़िया को हुक्म दिया कि वह गाना गाना गाये। तो चिड़िया ने एक ऐसा गाना गाया कि वह चौकीदार तुरन्त ही सो गया।

फिर उसने अपनी बीटिल को भेजा तो उसने उस दीवार में एक छेद कर दिया। इसी छेद से हो कर राजकुमार उस बड़े साइज़ वाले लोगों की दुनियॉ में दाखिल हुआ तो वह एक तहखाने में आ निकला।

वहॉ पहुँच कर पहला आदमी जो राजकुमार ने देखा वह थी एक बहुत ही प्यारी सी राजकुमारी जो वहॉ कैद थी।

बीटिल ने उस दीवार में जो वहॉ छेद बनाया था उससे सीधा रास्ता उस तहखाने को जाता था जहॉ वह राजकुमारी कैद थी इसी लिये वह तहखाने में आ निकला था और उसने सबसे पहले राजकुमारी को ही देखा।।

[61] Translated for the word “Giants”

राजकुमार ने अपनी यात्रा में बहुत सारी बातें सीखी थीं। उन बातों में एक बात यह भी थी कि "जब भी कभी कोई सुन्दर लड़की दुखी हो तो उसका दुख जरूर दूर करो।"

सो उसने राजकुमारी से पूछा कि वह उसको वहॉ से कैसे बचा सकता है। राजकुमारी बोली — "तुम मुझे यहॉ से कभी नहीं छुड़ा सकते। क्योंकि इस महल के दरवाजे पर एक बड़े साइज़ का आदमी खड़ा है जो कभी नहीं सोता।"

राजकुमार बोला — "तुम उसकी चिन्ता न करो उसको तो मैं सुला दूँगा।"

उसी पल वह बड़े शरीर वाला आदमी उस तहखाने में आया जिसने उस राजकुमारी को कैद कर रखा था क्योंकि उसने वहॉ बात करने की कुछ आवाजें सुनी।

तभी राजकुमार ने अपनी गाने वाली चिड़िया से कहा — "गा मेरी चिड़िया गा।"

राजकुमार के यह कहते ही चिड़िया ने गाना शुरू कर दिया और चिड़िया के गाना शुरू करते ही वह बड़े साइज़ का आदमी भी सो गया। हालॉकि उस बड़े साइज़ के आदमी ने सारी ज़िन्दगी कभी अपनी पलक भी नहीं झपकायी थी पर फिर भी वह उस चिड़िया का गाना सुनते ही सो गया।

तब राजकुमार ने राजकुमारी से कहा — "मेरी इस बीटिल ने इस बड़े साइज़ के आदमी के शहर के चारों तरफ बनी बड़ी दीवार

को काट कर मेरे यहाँ आने के लिये रास्ता बनाया था। सो यहाँ से भागने के लिये हमको अब उस बड़ी दीवार के ऊपर चढ़ना नहीं पड़ेगा। हम लोग उसी छेद से हो कर यहाँ से भाग सकते हैं।"

राजकुमारी तुरन्त बोली — "और उस चौकीदार का क्या जो उस दीवार पर खड़ा है और जिसका सिर बादलों तक पहुँचता है।"

"मेरी इस गाने वाली चिड़िया ने उसको भी सुला दिया है। अगर हम जल्दी से यहाँ से भाग निकलेंगे तो शायद तब तक वह सोता ही रहेगा जागेगा भी नहीं।"

राजकुमारी बोली — "मैं तो यहाँ इस तहखाने में इतने दिनों तक कैद रही हूँ कि मैं तो यह भी भूल गयी हूँ कि कैसे चला जाता है।"

राजकुमार बोला — "तुम चिन्ता न करो। मेरी तितली तुमको अपने पंखों पर बिठा कर तुम्हें यहाँ से ले चलेगी।"

कह कर उसने राजकुमारी को अपनी तितली के पंखों पर बिठा दिया और उसको ले कर वह बड़े साइज़ के लोगों के राज्य से तुरन्त ही भाग लिया।

जब उन्होंने उस दीवार वाले बड़े साइज़ के आदमी की तरफ देखा तो वह वहाँ जँभाइयाँ ले रहा था।

उसको इस तरह से जँभाइयाँ लेते देख कर राजकुमार बोला — "यह तो अभी एक घंटा और सोता रहेगा।"

राजकुमार राजकुमारी गाने वाली चिड़िया दीवार काटने वाली बीटिल और बोझा ले कर उड़ने वाली तितली ले कर अपने पिता के राज्य वापस आ गया।

उसके पिता ओर दूसरे लोगों ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया। अक्लमन्द लोगों ने जब राजकुमार की यात्रा का हाल सुना तो कहा — "अब हमारे राज्य के राजकुमार को कोई भी बेवकूफ नहीं कहेगा।

गाने वाली चिड़िया दीवार काटने वाली बीटिल और बोझा ले कर उड़ने वाली तितली के साथ अब राजकुमार वहॉ का सबसे अक्लमन्द राजा बन गया था।

14 माफूमीरा की कहानी[62]

यह दंत कथा दक्षिण अमेरिका के ब्राज़ील देश में कही जाने वाली एक पुर्तगाली कहानी है।

जंगल में बहुत अन्दर जा कर एक प्रकार का सबसे लम्बा पेड़ था। उसकी पत्तियों भरी मोटी बड़ी लम्बी शाखाऐं आसमान तक जाती थीं और लोगों को आक्सीजन देती थीं। उसका तना बहुत ही चौड़ा था और ऐसे बहुत सारे बड़े बड़े पेड़ उस जंगल में सैंकड़ों सालों से खड़े थे। ये ताकतवर पेड़ वहॉ माफूमीरा कहलाते थे।

ऐसी बहुत सारी कहानियॉ हैं जो यह बताती हैं कि इन पेड़ों की आत्मा होती है जो जंगल की रक्षा करती है। ऐसी ही एक कहानी एक अडाओ[63] नाम के आदमी ने सुनायी।

बहुत समय पहले अडाओ और उसके दो दोस्तों ने यह तय किया कि वे अपनी कमाई जंगल के पेड़ काट कर और उसकी लकड़ी को वहीं के किसानों और मकान बनाने वालों को बेच कर के करेंगे।

[62] The Legend of Mafumeira – a Portugese legend from Brazil, South America.
Taken from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/324/preview
[63] Adao – name of this storyteller

सो तीनों दोस्त जंगल गये और वहॉ जा कर उन्होंने अपने रहने के लिये एक केबिन[64] बनाया और एक सुबह अपना पहला पेड़ काटने पहुॅचे।

एक पेड़ से उन तीनों दोस्तों को इतनी सारी लकड़ी मिल जाती थी जिसको बेचने से वे एक महीने के रहने का ईमानदारी का पैसा कमा लेते। किसान भी खुश थे और मकान बनाने वाले भी।

वे एक पेड़ काटते थे और दो पेड़ लगाते थे जिससे वे आगे चल कर बहुत बड़े बड़े माफूमीरा पेड़ बन जायें।

अडाओ जब भी कोई पेड़ लगाता तभी यह कहता — "इस तरह से हम जंगल को खुश और तन्दुरुस्त रख पा रहे हैं। अगर हम जंगल की देखभाल करेंगे तो जंगल भी हमारी देखभाल करेगा।"

इस तरह से अडाओ और उसके दोनों दोस्त जंगल में खुशी खुशी रह रहे थे। उनको अपना सादा सा केबिन और अपने मजदूर दोनों बहुत अच्छे लगते थे।

वे हमेशा एक महीने में केवल एक ही माफूमीरा का पेड़ काटते थे और जंगल की इज़्ज़त करने के लिये दो पेड़ लगा देते थे। पर अडाओ को पता ही नहीं चला कि कब वहॉ की चीज़ें बदलने लगीं।

अडाओ के दोस्तों ने पेड़ों की तरफ किसी दूसरी ही नजर से देखना शुरू कर दिया।

[64] Wooden house. See its picture above

एक ने पूछा — "हम एक महीने में केवल एक ही पेड़ क्यों काटते हैं जबकि हम कई पेड़ काट सकते हैं।"

दूसरा बोला — "अगर हम एक से ज़्यादा पेड़ काटें तो हम काफी पैसा कमा सकते हैं।"

अडाओ को अपने दोस्तों के मुँह से यह सुन कर बहुत दुख होता था क्योंकि वह जंगल की बहुत इज़्ज़त करता था अपनी जरूरत से ज़्यादा पेड़ नहीं काटना चाहता था। पर उसके दोस्त सुन ही नहीं रहे थे।

सो उन्होंने अपनी अपनी बचत इकट्ठी की और उससे एक बड़ा ट्रैक्टर और कुछ और लकड़ी काटने वाले औजार खरीद लिये। अपने नये औजार ले कर वे जंगल की तरफ चले और वहाँ जा कर एक पेड़ के बाद दूसरा पेड़ काटना शुरू कर दिया।

बड़े बड़े ताकतवर पेड़ एक के बाद एक नीचे गिरने शुरू हो गये। सारा जंगल माफूमीरा के पेड़ों के नीचे गिरने की आवाज से भर गया और उसके साथ भर गया अडाओ का दिल दुख से।

जब उससे नहीं रहा गया तो उसने कहा — "दोस्तों यह सब तुम लोग क्या कर रहे हो। हमको इस तरह से जंगल की बेइज़्ज़ती नहीं करनी चाहिये।"

पर उसके वे दोनों दोस्त तो सुन ही नहीं रहे थे। बल्कि उन्होंने उन पेड़ों को काट कर और उनके तख्ते बना बना कर एक के बाद

एक अपने ट्रैक्टर में भर लिये। वे इस समय केवल पैसे के बारे में ही सोच रहे थे उनको जंगल की बिल्कुल चिन्ता नहीं थी।

अडाओ के दोनों दोस्त पेड़ काटने में इतने होशियार हो गये थे कि अब वे पेड़ इतनी जल्दी जल्दी काट रहे थे कि अडाओ अब समय से उनकी जगह दूसरे नये पेड़ भी नहीं लगा पा रहा था।

उसको मालूम था कि उसके दोस्त गलत काम कर रहे थे पर वह उनको रोक भी नहीं पा रहा था क्योंकि लालच ने उनकी ऑखों पर पट्टी बॉध रखी थी।

उसको लग रहा था कि जंगल को नष्ट होने से बचाने की बस केवल उसी की इच्छा थी उसके दोस्तों की नहीं। और इस सबसे उसका दिल बहुत दुखी था।

पर वह अकेला नहीं था। माफूमीरा की आत्मा यह सब देख रही थी और सुन रही थी। और वह आत्मा इस बात से बहुत नाराज थी कि पेड़ इस बेइज़्ज़ती के साथ काटे जा रहे थे।

उस रात जब अडाओ अपने केबिन में अपने पलंग पर लेटा हुआ था उसने जंगल में उन ताकतवर पेड़ों के हिलने डुलने की आवाज सुनी। और साथ में उसको यह भी यकीन था कि उसको वहॉ किसी के होने का भी एहसास हुआ जैसे उसके चारों तरफ कोई हो। उस रात हवा में उसको फुसफुसाते हुए शब्द सुनायी पड़े।

"तुम जंगल के साथ इस तरीके का व्यवहार नहीं कर सकते। तुमको इसकी सजा जरूर मिलेगी। मैं माफूमीरा की आत्मा हूँ और मैं यहाँ यहाँ के पेड़ों और जानवरों की रक्षा के लिये हूँ।"

अगले दिन वैसा नहीं हो पाया जैसा प्लान किया गया था। अडाओ के दोनों दोस्त अगली सुबह पेट के दर्द के साथ उठे और उसमें उनको कोई भी दवा फायदा नहीं कर रही थी।

इतनी तकलीफ होने के बावजूद लालच उनको उनके पलंग से खींच कर उठा कर ले गया। उन्होंने लकड़ी काटने के औजार उठाये और उस दिन के काम की तैयारी की। पर जब वे ट्रैक्टर चलाने बैठे तो ट्रैक्टर ही नहीं चला।

एक बोला — "मुझे ट्रैक्टर की चिन्ता नहीं है। न चलता है तो न चले। मैं फिर भी पेड़ काटने जाऊँगा।"

दूसरा बोला — "मुझे भी अपने पेट के दर्द की चिन्ता नहीं है।" उसने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और अपने पास वाला माफूमीरा का पेड़ काटने चल दिया।

बेचारे अडाओ ने उन दोनों से बहुत प्रार्थना की कि वे जो करने जा रहे हैं वह न करें बल्कि अपना सारा दिन जंगल में पौधे लगाने में लगायें पर दोनों में से कोई नहीं सुन रहा था।

सो वे पेड़ काटने चल दिये। जैसे ही उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी उठायी जंगल में बहुत तेज़ हवा चली। उस हवा से माफूमीरा के पेड़

हिलने लगे चटकने लगे और जैसे कराहने लगे। बहुत जल्दी ही बारिश पड़ने लगी।

हवा और बारिश ने उनका सारा केबिन तोड़ फोड़ दिया ट्रैक्टर उलटा कर दिया। एक दोस्त के हाथ से उसकी कुल्हाड़ी गिर गयी जिससे उसकी टॉग बुरी तरह से जख्मी हो गयी।

हवा तेज़ और और तेज़ होती गयी। जिससे उनके केबिन का कुछ भी नहीं बचा सिवाय कुछ टूटे फूटे तख्तों के। उनका ट्रैक्टर भी बह गया क्योंकि पास की एक नदी में बाढ़ आ गयी थी।

अब कहीं जा कर अडाओ के दोस्तों को कुछ होश आया और वे डर गये। वे चिल्लाये "अब हमको यहॉ से भागना चाहिये। इस जंगल ने तो हमारे सारे औजार बर्बाद कर दिये। अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं रह गया है। अब हम क्या करेंगे।"

अडाओ के दोनों दोस्त वहॉ से जितनी तेज़ भाग सकते थे भाग लिये और फिर कभी वापस नहीं लौटे।

अपनी ज़िन्दगी की चिन्ता करते हुए भी अडाओ वहीं रुका रहा जहॉ था। हवाऐं उसको धक्का देती रहीं बारिश उसके ऊपर पड़ती रही उसके कपड़े भिगोती रही जब तक कि उसको ठंड नहीं लगी।

वह ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "मैं यह जंगल छोड़ कर नहीं जाऊॅगा। मैं यहीं ठहरूॅगा और जंगल में उन पेड़ों के बदले में नये पेड़ लगाऊॅगा जिनको मेरे दोनों लालची दोस्तों ने काट दिये हैं। मैं

यह काम मरते दम तक करूँगा और मेरा दिमाग कोई नहीं बदल सकता।"

उसके ऐसा कहते ही हवाऐं रुक गयीं और बारिश भी अचानक रुक गयी। बादल छँट गये और धूप निकल आयी। धूप ने जंगल की सारी जमीन सुखा दी।

अडाओ बहुत कृतज्ञ था कि तूफान थम गया था और जैसे ही वह अपने आपमें लौटा और अपने कपड़े सुखाये वह जमीन में नये पेड़ लगाने चला गया।

वह सारा दिन गाते गाते मेहनत से काम करता रहा। उसने बहुत सारे पेड़ लगाये और हर बार जब भी वह नया पेड़ लगाता था तो बस वह यही प्रार्थना करता था कि उसका लगाया वह पेड़ कल को एक बड़े मजबूत माफूमीरा के पेड़ में बड़ा हो जाये।

सारा दिन और सारी रात अडाओ जंगल में नये पेड़ लगाने का काम करता रहा जब तक कि वह बिल्कुल थक नहीं गया और उसे भूख नहीं लग आयी। वह थोड़ा डर भी गया क्योंकि वह थक कर बिल्कुल चूर हो चुका था। अब उसे खाने और सोने की जरूरत थी।

खाने और घर की चिन्ता में उसे याद आया कि उसका तो केबिन भी तूफान में बिल्कुल टूट फूट चुका था। वह उस साफ जगह से अपने केबिन की जगह लौटा तो यह देख कर दंग रह गया

कि उसका केबिन तो बिल्कुल साबुत का साबुत खड़ा था जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो।

एक छोटी सी आग अँगीठी में जल रही थी और मेज पर खाना रखा था।

जब अडाओ ने अपना केबिन ऐसा देखा तब उसको पता चला कि वह तूफान माफूमीरा की आत्मा का पैदा किया हुआ था। वह दयालु आदमी खाना खाने बैठ गया। यह सब देख कर उसकी आँखों में आँसू आ गये। उन आँसू भरी आँखों से वह आग की तरफ देखता रहा।

उसने कसम खायी कि जब तक वह ज़िन्दा है तब तक वह उस जंगल में नये पेड़ लगाता ही रहेगा। इसके अलावा वह हर महीने केवल एक ही पेड़ काटेगा क्योंकि उसको बस इतना ही चाहिये था। और यही उसने किया भी।

लोगों का कहना है कि अडाओ सौ साल तक जिया और उसी जंगल में अपनी आखिरी साँस ली। लोगों का यह भी कहना है कि उसकी आत्मा माफूमीरा की आत्मा में जा कर मिल गयी जैसे और लोगों की मिलती है जो जंगल में मरते हैं।

ये आत्माऐं जंगल की उन लोगों से रक्षा करती हैं जो जंगल के पेड़ों और जानवरों की बेइज़्ज़ती करते हैं। यही माफूमीरा की कहानी है और इसी लिये जंगलों की इज़्ज़त करनी चाहिये और उन्हें सुरक्षित रखना चाहिये।

15 सबसे सुन्दर राजकुमारी[65]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था। एक बार वह बहुत बीमार पड़ गया तो उसकी इच्छा हुई कि वह एक बड़े खरगोश का पानी[66] पिये।

उसके एक अकेला बेटा था सो वह अपने पिता के लिये एक बड़ा खरगोश ढूँढने के लिये निकला। जब राजकुमार उसको ढूँढने के लिये जंगल की तरफ सड़क पर जा रहा था तो सड़क पर लगी हैज[67] के पास से एक बड़ी खरगोश भागी और उसका रास्ता काट कर जंगल की तरफ भाग गयी।

राजकुमार ने उसका पीछा किया। वह बड़ी खरगोश तो बहुत ही तेज़ भागने वाली थी फिर भी वह उसके पीछे जंगल में भागा

---

[65] The Most Beautiful Princess – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_26.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[66] Translated for the words "Broth of Hare" – broth is the water in which some meat or vegetables are boiled and then that water is strained. This watere is called broth. Thus the broth may be nonvegetarian as well as vegetarian. Hare is a rabbit like animal but it is a bit bigger than that – see its picture above.

[67] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc – see its picture above.

चला गया कि अचानक वह बड़ी खरगोश जमीन में बने एक छेद में घुस गयी।

राजकुमार उसको देखता रहा और उसके पीछे पीछे ही भागता रहा कि उसको लगा कि वह तो एक बहुत बड़ी गुफा में है। उस गुफा में पीछे की तरफ एक बहुत ही बड़ा बड़े साइज़ का आदमी[68] है। इतना बड़े साइज़ का आदमी तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। उसको देख कर राजकुमार डर गया।

बड़े साइज़ का आदमी अपनी इतनी जंगली गहरी आवाज में बोला कि उसकी आवाज तो सारी गुफा में कई बार गूँज गयी — "ओहो। तो तुम क्या समझते हो कि तुम मेरी बड़े खरगोश को पकड़ लोगे? देखो बजाय इसके कि तुम उसे पकड़ो मैंने तुम्हें पकड़ लिया है।"

कहते हुए बड़े साइज़ के आदमी ने अपना बड़ा सा हाथ बढ़ा कर राजकुमार को पकड़ लिया और धीरे से उसको एक बक्से में फेंक दिया जो उसी गुफा के एक कोने में रखा हुआ था।

फिर उसने उस बक्से का ढक्कन बन्द किया और एक बड़ी से चाभी से उसका ताला भी लगा दिया।

राजकुमार को अब उस बक्से में बहुत ही ज़रा सी हवा मिल रही थी जो उस बक्से के ढक्कन के एक बहुत ही छोटे से छेद में से

[68] Translated for the word "Giant"

आ रही थी। अपनी इस हालत से राजकुमार को लगा कि वह अब ज़्यादा देर तक ज़िन्दा नहीं बचेगा।

घंटों गुजर गये। कभी तो राजकुमार सो गया पर अक्सर वह लेटा हुआ अपने बीमार पिता के बारे में सोचता रहा और यह सोचता रहा कि वह वहॉ से कैसे निकल सकता है और फिर कैसे अपने पिता के पास वापस जा सकता है।

अचानक उसने ताले के छेद में चाभी घूमने की आवाज सुनी। उसने देखा कि बक्से का ढक्कन खुला और उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी है जैसी उसने कभी दुनियॉ में तो देखना तो दूर सपने में भी नहीं देखी थी।

वह मुस्कुरा कर बोली — "मैं ही वह बड़ी खरगोश हूॅ जिसका पीछा करते हुए तुम इस गुफा तक आये थे। मैं एक राजकुमारी हूॅ जिस पर जादू डाल दिया गया है। हालॉकि दिन में मुझे एक बड़ी खरगोश बन जाना पड़ता है पर रात में मैं अपने रूप में इस गुफा में घूमने के लिये आजाद हूॅ।

तुम इस मुसीबत में केवल इसी लिये पड़े क्योंकि तुमने मेरा पीछा किया और मुझे तुम्हारे लिये इस बात का बहुत दुख है। पर अब मैं तुमको इस बक्से से बाहर निकाल रही हूॅ।"

राजकुमार बोला — "तुम इतनी सुन्दर हो कि मै यहॉ हमेशा के लिये रह सकता हूॅ और तुम्हारी ऑखों में देखता रह सकता हूॅ।"

राजकुमारी फिर मुस्कुरायी और बोली — "पर दिन में तो तुम एक बड़ी खरगोश को ही देखोगे। और रात तो हमेशा रहती नहीं।

इसके अलावा वह बड़े साइज़ का आदमी कभी भी यहाँ वापस आ सकता है। अभी तो वह केवल शिकार खेलने गया है क्योंकि उसको लगता है कि तुम उसके शाम के खाने के लिये काफी नहीं हो।

तुम बेवकूफ न बनो। मैं तुमको इस गुफा से बाहर जाने का रास्ता बताती हूँ। बस फिर तुम जल्दी जल्दी अपने घर भाग जाना।"

राजकुमार ने उसको उसकी मेहरबानी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसकी सलाह के अनुसार ही काम किया। राजकुमारी ने उसको गुफा से बाहर जाने का रास्ता दिखा दिया और वह उसी रास्ते से जल्दी जल्दी अपने घर दौड़ गया।

पर जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसका पिता तो मर चुका था। सारे महल में शोक छाया हुआ था।

राजकुमार को इतना ज़्यादा दुख हुआ कि उसको लगा कि वह तो अब उस महल में रह ही नहीं पायेगा। अपने पिता के दफ़न के बाद वह एक खानाबदोश की तरह से घूमने चल दिया।

चलते चलते राजकुमार एक नदी के पास पहुँचा। वहाँ उसने एक मछियारे से अपने कपड़े बदल लिये जो उसी नदी के किनारे पर

मछलियॉ पकड़ रहा था। क्योंकि वह एक राजकुमार की तरह से पहचाना नहीं जाना चाहता था।

अब वह एक मछियारा लग रहा था। इसी शक्ल में वह एक राज्य से दूसरे राज्य में घूमता रहा। वह अपने खाने के लिये मछली पकड़ लेता था और इसी से अपना काम चलाता था।

इस बीच उसने देखा कि उसका मछली पकड़ने वाला जाल जो उस मछियारे ने उसको अपने कपड़ों के साथ दिया था वह जाल तो बहुत ही आश्चर्यजनक जाल था। समुद्र की सबसे बड़ी मछली भी उस जाल को नहीं तोड़ सकती थी।

वह बोला "लगता है कि इस जाल को तो नौसा सिन्होरा[69] का आशीर्वाद मिला हुआ है।"

अपने घूमने के दौरान वह एक शहर में आया जहॉ एक उत्सव मनाया जा रहा था। वहॉ का महल बहुत सारे चमकीले रंगों की झंडियों से सजाया गया था।

हर शाम को राजा का दूत सवार हो कर शहर की सड़कों पर यह कहता घूमता "हमारे राज्य की राजकुमारी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है। हमारे राज्य की राजकुमारी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है।"

[69] Nossa Senhora – some kind of goddess of Brazilians

राजकुमार को अभी भी वह राजकुमारी याद थी जिसने उसको उस बड़े साइज़ वाले आदमी की गुफा में रखे बक्से में से बाहर निकाला था।

उस दूत की बात को सुन कर राजकुमर ने सोचा कि यह राजकुमारी उस राजकुमारी से ज़्यादा सुन्दर नहीं हो सकती। मुझे उसे अपनी ऑख से देख कर ही यह पता करना पड़ेगा कि वह दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है या नहीं।

सो राजकुमार उस राजकुमारी को देखने के लिये महल के दरवाजे तक गया। जल्दी ही वह महल के छज्जे पर आ गयी और छज्जे पर लगे बारजे[70] से नीचे झॉकने लगी।

वह बहुत सुन्दर थी पर उसकी नाक थोड़ी सी टेढ़ी थी। गुफा की राजकुमारी से उसकी तुलना बिल्कुल भी नहीं की जा सकती थी।

मछियारे के वेश में जो राजकुमार था वह बोला — "यह राजकुमारी किसी भी तरह से दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। मैं एक राजकुमारी को जानता हूँ जो इससे कहीं ज़्यादा सुन्दर है।"

[70] Translated for the word "Railing used for a Balcony". See its picture above.

जो लोग उसके पास खड़े थे उन्होंने जब यह सुना तो उन्होंने उसका कहा शाही चौकीदारों को बताया। शाही चौकीदारों ने उसको बड़ी बेदर्दी से पकड़ा और राजा के पास ले गये।

राजा बोला — "तो तुम वह मछियारे हो जो यह कहते हो कि मेरी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। तुमने कहा मैंने सुना कि तुम एक ऐसी राजकुमारी को जानते हो जो इससे ज़्यादा सुन्दर है।

मैं एक न्यायप्रिय राजा हूॅ नहीं तो यह कहने पर मैं तुमको तुरन्त ही मार देने का हुक्म दे देता पर न्यायप्रिय होने के नाते मैं ऐसा नहीं करूॅगा। मैं तुमको जो कुछ तुमने कहा है उसको साबित करने का एक मौका देता हूॅ।

अगर तुम अपने कहे को साबित न कर सके और उस राजकुमारी को मुझे न दिखा सके जो मेरे दरबार की नजर में मेरी बेटी से ज़्यादा सुन्दर है तो तुम अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो बैठोगे।

याद रखना कि उसकी सुन्दरता को साबित करने के लिये उसे तुम्हें यहॉ मेरे दरबार में लाना पड़ेगा।"

राजकुमार बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद योर मैजेस्टी। अगर आप मुझे इस शर्त को पूरा करने के लिये दो हफ्ते देंगे और अगर आप उस रात को उत्सव मनाने का वायदा करें तो मैं अपके दरबार के सामने दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी लाने की कोशिश करूॅगा।"

मछियारे की बात सुन कर राजा तो आश्चर्यचकित रह गया। उसको तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उस जैसा मछियारा बहुत सारी राजकुमारियों को जानता भी होगा। फिर भी उसने उसको वहॉ से जाने और राजकुमारी को लाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार जल्दी से अपने घर लौटा और एक बार फिर से जंगल की ओर उसी रास्ते पर चल दिया जिस पर एक बार पहले वह अपने बीमार पिता के लिये बड़ी खरगोश ढूँढने गया था।

उसे जल्दी ही वह जगह मिल गयी जहॉ उस बड़ी खरगोश ने उसका रास्ता काटा था। फिर उसने उस रास्ते को भी याद करने की कोशिश की जिस पर चल कर वह उसका पीछा करते करते जंगल में अन्दर तक चला गया था।

जब वह जंगल में गया तो उसको लगा कि वहॉ तो बाढ़ आयी थी। पानी ने वे सब निशान मिटा दिये थे जहॉ गुफा का रास्ता था।

जहॉ भी उसको लगा कि वहॉ गुफा हो सकती थी वहॉ वहॉ उसने खोदा भी पर उसको वहॉ कोई भी ऐसी जगह नहीं मिली जो किसी गुफा के घुसने की जगह हो सकती थी।

तब उसने पास में ही एक नयी जगह खोदा तो उसको एक रास्ता मिला जिसके शुरू में ही एक बहुत बड़ा दरवाजा था। गुफा के अन्दर जाने का रास्ता उस दरवाजे के पीछे था।

राजकुमार ने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस दरवाजे को खटखटाया तो वह दरवाजा बहुत ही ज़रा सा खुला और उसमें से एक छोटी सी बुढ़िया का चेहरा दिखायी दिया।

वह बुढ़िया बोली — "मैं राजकुमारी की आमा[71] हूँ। मुझे लगता है कि तुम वही राजकुमार हो जिससे वह उसके ऊपर जो मुसीबतें टूट पड़ी हैं उनसे उसको आजाद करवाने की उम्मीद कर रही है।"

यह सुन कर राजकुमार तो परेशान हो गया और बोला — "क्या हो गया मेरी राजकुमारी को जिसने मेरी जान बचायी। मैं सचमुच में राजकुमार हूँ पर मुझे आश्चर्य है कि आपने मुझे एक मछियारे की पोशाक में भी पहचान लिया।"

बुढ़िया आमा बोली — "राजकुमारी ने मुझे बताया था कि मैं तुमको तुम्हारी ऑखों में मुस्कुराहट देख कर तुम्हें पहचान लूँगी। मैंने तुम्हारे कपड़ों की तरफ तो देखा ही नहीं। हालॉकि तुम्हारा चेहरा उदास है पर तुम्हारी ऑखों में मुस्कुराहट है। आओ गुफा में आ जाओ और फिर मैं तुम्हें बताती हूँ कि क्या हुआ।"

यह सुन कर राजकुमार अन्दर चला गया। उसके गुफा में जाते ही बुढ़िया ने गुफा का दरवाजा बन्द कर दिया।

[71] Ama – maybe Ama (Amma) means "Mother" or "Nanny" or "Caretaker"

बुढ़िया बोली — "तुम्हारे जाने के बाद जैसे ही वह बड़े शरीर वाला आदमी वापस लौटा वह राजकुमारी पर बहुत नाराज हुआ क्योंकि उसने तुमको यहॉ से बच कर भाग जाने में सहायता की थी।

उसने उसको बड़ी बेरहमी से पकड़ा और जिस बक्से में तुम बन्द थे उसी बक्से में उसने तुम्हारी जगह उसको बन्द कर दिया।

जब राजकुमारी ने तुमको बक्से में से बाहर निकाला था उसने उस बक्से की चाभी उसी समय फेंक दी थी। बड़े साइज़ के आदमी ने उसको ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह उसको कहीं नहीं मिली।

इससे वह और भी ज़्यादा गुस्सा हो गया। अब क्योंकि वह उस बक्से को बन्द नहीं कर सकता है तो सारा दिन वह उस बक्से के ऊपर बैठा रहता है जब तक राजकुमारी बड़ी खरगोश के रूप में रहती है।

रात को जब वह वहॉ से चला जाता है तो वह गुफा के दरवाजे के चारों तरफ एक बहती हुई नदी बनाता है और गुफा के दरवाजे पर पहरा देने के लिये एक मछली तैनात कर देता है।

यह मछली ऊपर नीचे तैरती रहती है और राजकुमारी को बहुत बुरे बुरे नामों से पुकारती रहती है कि जब वह अपने रूप में भी होती है तो उन बुरे नामों को सहन न करने की वजह से तभी भी वह बक्से में ही बन्द रहती है और अपने कानों में रुई ठूँसे रहती है।

तुम यहॉ अच्छे समय पर आये हो। बड़े साइज़ का आदमी अभी अभी गुफा के बाहर गया है। जैसे ही तुम गुफा के अन्दर घुसे होगे तो गुफा के बाहर पानी ऊपर चढ़ गया होगा क्योंकि मुझे मछली की आवाज सुनायी पड़ रही है।"

यहॉ तक कि जब बुढ़िया बोल रही थी राजकुमार भी मछली की आवाज सुन पा रहा था। वह राजकुमारी के लिये इतने बुरे बुरे शब्द बोल रही थी कि राजकुमार खुश था कि राजकुमारी अपने कानों में रुई लगाये हुए बक्से में बन्द बैठी थी।

वह आमा से बोला — "आप भी राजकुमारी के साथ जा कर बक्से में ही बैठ जाइये। मैं बहुत अच्छा तैराक हूॅ। मैं जा कर गुफा का दरवाजा खोलता हूॅ और बाहर तैर जाता हूॅ।

बक्सा लकड़ी का बना हुआ है सो वह पानी के ऊपर तैर जायेगा। आप दोनों बक्से के अन्दर होंगी सो आप लोग भी सुरक्षित रूप से पानी के ऊपर तैर जायेंगी।"

बुढ़िया आमा ने कुछ शक से पूछा — "पर तुम इस मछली से बच कर कैसे तैरोगे?"

राजकुमार बोला — "उसके लिये आप चिन्ता न करें। मेरे पास मछली पकड़ने वाला एक जाल है जो इतना मजबूत है कि सबसे बड़ी और सबसे भयानक ताकतवर मछली भी उस जाल को नहीं तोड़ सकती। मैं उस जाल में उस मछली को पकड़ लूॅगा। आप बस थोड़ा इन्तजार करें और देखें कि क्या होता है।

इस बीच आप राजकुमारी के कानों से रुई निकाल लें और उसको बता दें कि मैं आ गया हूँ। अब वह डरे नहीं और कुछ देर तक के लिये बस उसी बक्से में बन्द रहे।"

राजकुमार के कहने के अनुसार बुढ़िया आमा उस बक्से में बन्द हो गयी और राजकुमार ने गुफा का दरवाजा खोल दिया।

मछली राजकुमार की तरफ भयानक रूप से दौड़ी पर राजकुमार ने उसको अपने मजबूत जाल में तुरन्त ही पकड़ लिया। जाल में मजबूती के साथ पकड़ कर राजकुमार पानी की सतह के ऊपर तैर गया और नदी के किनारे तक पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने मछली को मार दिया उसकी खाल निकाल कर अपनी जेब में रख ली।

जैसा कि राजकुमार ने कहा था इतने में बक्सा भी तैरता हुआ ऊपर आ गया। राजकुमार ने उसके ऊपर भी अपना जाल डाल कर उसको किनारे पर खींच लिया। बुढ़िया आमा और सुन्दर राजकुमारी दोनों उस बक्से में से बाहर निकल आयीं।

राजकुमारी इतनी सुन्दर थी कि राजकुमार तो उसके सामने अपने घुटनों पर गिर पड़ा। राजकुमारी की सुन्दरता ने राजकुमार की आँखें चौंधिया रखी थीं।

राजकुमारी बोली — "इस सारे समय मुझे मालूम था कि तुम जरूर आओगे। मुझे यह भी मालूम था कि तुम मुझको मेरी मुश्किलों

से जरूर आजाद कराओगे पर तुमको यहॉ आने में बहुत देर हो गयी।"

तब राजकुमार ने उसको अपनी कहानी बतायी कि उसके संग क्या हुआ था। फिर वह बोला — "तुमने बड़े साइज़ के आदमी से मेरी ज़िन्दगी बचायी। मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बचाने के काम आ सका। पर अब मैं तुमसे फिर से अपनी ज़िन्दगी बचाने की प्रार्थना करता हूँ।"

तब उसने उसको उत्सव की बात बतायी तो राजकुमारी बोली मैं तुम्हारे साथ उस उत्सव में जरूर जाऊँगी। यह तो मेरे लिये बहुत अच्छी बात है कि वह उत्सव रात को है।

राजकुमारी और उसकी आमा राजकुमार के साथ उस राज्य की ओर तुरन्त ही चल दीं जिस राज्य का राजा यह दावा करता था कि उसकी बेटी ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है।

जिस रात वे वहॉ पहुँचे वही रात उत्सव की रात थी। वहॉ के राजा को विश्वास था कि या तो राजकुमार उस राजकुमारी को ले कर ही नही आ पायेगा या फिर वह राजकुमारी ही इतनी सुन्दर नहीं होगी जितनी सुन्दर उसकी अपनी बेटी थी सो उसने अपनी सारी फौज को इस बात के लिये तैयार कर रखा था कि जैसे ही राजकुमार आये वे उसका गला काट दें।

किसी को यह विश्वास ही नहीं था कि एक मछियारा किसी राजकुमारी को भी ले कर वहॉ आ सकता है किसी सुन्दर राजकुमारी की बात तो छोड़ो।

राजकुमार ने राजकुमारी को बक्से में छिपाया हुआ था और उसकी आमा उस बक्से को अपने सिर रख कर ला रही थी। जब वह गरीब मछियारा आमा के साथ राजा के सामने जा कर खड़ा हुआ तो राजा के दरबार में एक बहुत ज़ोर का ठहाका गूँज गया।

"हमको तो पता था कि यह मछियारा कभी भी एक राजकुमारी को अपने साथ नहीं ला सकेगा और वह भी हमारी राजकुमारी से ज़्यादा सुन्दर राजकुमारी को। देखो तो वह उसकी जगह किसको ले कर आया है।"

और यह कह कर तो वे लोग इतना हॅसे इतना हॅसे कि उनसे खड़ा भी नहीं हुआ गया।

राजा के सिपाही मछियारे को मारने के लिये उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़े तो राजकुमार गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी कर के मुझे कुछ पल का समय तो दीजिये।"

सुन कर राजा ने अपना सिर हॉ में हिलाया कि उसको अभी न पकड़ा जाये।

राजकुमार ने मछियारे के कोट की जेब में हाथ डाला और उस बड़ी मछली की चॉदी की खाल निकाली जो उसने बड़े साइज़ के आदमी की गुफा के दरवाजे पर बहती हुई नदी में पकड़ी थी। उस

खाल के टुकड़ों से तो बहुत सुन्दर रुपहला बादल सारे कमरे में भर गया।

पर राजा को तो अभी भी कोई राजकुमारी दिखायी नहीं दी तो उसने फिर अपने सिपाहियों को इशारा किया कि वे मछियारे को पकड़ लें।

वे फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़े तो राजकुमार फिर से गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी कर के मुझे दो पल और दीजिये।" सो राजा फिर रुक गया।

उसके बाद उसने अपनी जेब से मछली की सुनहरी खाल के टुकड़े निकाले तो वहॉ का कमरा बहुत सुन्दर सुनहरी बादल से भर गया।

"बस एक मिनट और।" और फिर उसने अपनी जेब से जवाहरात जड़ी मछली की खाल के टुकड़े निकाले तो उस कमरे में चमकते हुए जवाहरातों का बादल भर गया। सब लोग यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये पर राजकुमारी अभी भी कहीं नहीं थी।

जैसे ही ये सब बादल साफ हो गये तो वहॉ बुढ़िया आमा और मछियारे के बीच में दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी खड़ी थी। ऐसी सुन्दर राजकुमारी जैसी किसी ने न पहले कभी सचमुच में देखी थी और न किसी ने सपने में देखी थी।

यह देख कर राजा के सिपाही पीछे हट गये। राजा और उसके दरबारी सब फर्श की तरफ देखने लगे।

राजा बोला — "ओ मछियारे तुम अपनी शर्त जीत गये। मेरी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। मैं देख रहा हूॅ कि मेरी बेटी की नाक थोड़ी सी टेढ़ी है।"

राजकुमार राजकुमारी और बुढ़िया आमा राजकुमार के राज्य वापस चले गये। वहॉ जा कर राजकुमार और राजकुमारी की शादी हो गयी। शादी की बहुत बड़ी दावत हुई।

उसी पल से जबसे राजकुमारी के शरीर पर उन मछलियों की खाल के टुकड़े पड़े उस पर पड़ा जादू टूट गया और उसके बाद वह फिर कभी बड़ी खरगोश नहीं बनी।

वह और राजकुमार खुशी खुशी बहुत दिनों तक साथ साथ रहे। बड़े साइज़ के लोगों ने भी उनको फिर कभी परेशान नहीं किया हालॉकि वे भी उस जंगल से फिर हमेशा के लिये दूर ही रहे।

16 एक जंगली लड़का और एक नीच बड़े साइज़ का आदमी[72]

एक बार की बात है कि एक आदमी अपनी पत्नी और अपने एक बहुत छोटे बच्चे को ले कर जंगल में रहने चला गया। उन्होंने अपना घर वहीं बना लिया।

वहॉ उन्होंने अपने हाथ से अपना मिट्टी का घर बनाया और जंगल से घास ले कर उस पर छत डाल ली। खाने के लिये वे जंगल के फल चुन लाते थे और कुछ जंगली जानवर मार लेते थे। वे लोग वहॉ साधुओं की तरह रहते थे। यानी वे वहॉ अकेले ही रहते थे उनका किसी से मिलना जुलना भी नहीं था।

बच्चा धीरे धीरे बड़ा होता रहा। जब वह अच्छा मजबूत बड़ा लड़का हो गया तो उसने अपने पिता से जंगल की बहुत सारी बातें सीखीं। वह अब अक्लमन्द भी हो गया था और ताकतवर भी

वह अपनी मॉ से अपने पुराने समय के बारे में सुनता रहता था जब वे जंगल में आने से पहले बड़े शहर में रहते थे। उसको ये ही कहानियॉ ही सुनने में सबसे अच्छी लगती थीं।

---

[72] The Forest Lad and the Wicked Giant – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_28.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

अक्सर जब उसका पिता जंगल में शिकार के लिये जाता था तो वह लड़का अपने पिता से मिन्नतें कर के अपनी मॉ के पास घर रह जाता। उसके पिता के बाहर चले जाने के बाद उसकी मॉ अपनी झोंपड़ी के सामने जमीन पर बैठ जाती और उसको अपनी पुरानी बातें सुनाती रहती।

एक दिन जब लड़के का पिता अपने शिकार पर से वापस लौटा तो उस लड़के ने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं यहॉ जंगल में अकेले रहते रहते थक गया हूॅ। चलिये शहर में रहने वापस शहर चलते हैं।"

उसका पिता बोला — "लगता है कि तेरी मॉ तुझे वहॉ की कहानियॉ सुनाती रही है। मै देखता हूॅ कि वह तुझे आगे से शहर की कोई बात न बताये।

हमने शहर अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये छोड़ा था। आगे से ख्याल रखना कि मैं तेरे मुॅह से शहर वापस जाने के बारे में एक शब्द भी न सुनूॅ।"

उसके बाद से जब भी पिता शिकार के लिये जाता वह तो उसको अपने साथ ले जाता सो अब उसके पास कोई मौका नहीं था जब वह शहर की वे कहानियॉ सुनता जिनको वह अपनी मॉ के मुॅह से सुनना पसन्द करता था।

फिर भी उसकी मॉ ने उसे जो कुछ भी शहर के बारे में सुनाया था वह सब उसके दिमाग में छिपा पड़ा था।

इसके अलावा रात को जब भी जंगल में भयानक तूफान आता या फिर जंगली जानवर अपनी भयानक आवाजों से उसको सोने नहीं देते तो वह झोंपड़ी के फर्श पर अपनी चटाई पर पड़ा पड़ा जागता रहता और शहर की उन कहानियों के बारे में सोचता रहताा जो उसको उसकी मॉ ने सुनायी थीं।

कुछ समय बाद एक दिन उसके पिता को बुखार आया और उसी में वह मर गया।

अब वह लड़का और उसकी मॉ जंगल में अकेले रह गये तो लड़के ने मॉ से कहा कि चलो मॉ हम लोग शहर अपने घर वापस चलते हैं। हमको अब यहॉ जंगल में अकेले नहीं रहना चाहिये।

मुझे अपनी ज़िन्दगी शहर में अपने तरीके से जीनी चाहिये जैसा कि तुमने मुझे बताया – उत्सव, नाच, बड़े बड़े टूनमैन्ट, लड़कियों के घरों के छज्जों के नीचे रात को गाना।

लड़के की शहर जाने की जिद इतनी ज़्यादा और जल्दी जाने की थी कि उसकी मॉ उसको मना नहीं कर सकी। हालॉकि मॉ भी दिल से शहर वापस जाना नहीं चाहती थी पर फिर भी वह अपने बच्चे की जिद के सामने झुक गयी।

उन्होंने अपना सामान बॉधा जो केवल एक घोड़ा और एक तलवार थे और शहर चल दिये।

जब लड़का और उसकी मॉ शहर पहुॅचे तो रात हो रही थी। वे लोग एक सड़क से दूसरी सड़क पर घूमते रहे पर वहॉ उनको कोई आदमी नजर नहीं आया।

उन्होंने सारे घरों के दरवाजे खटखटाये पर उनके अन्दर से किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। आखिर वे उस सड़क पर पहुॅच गये जिस पर उनका पुराना मकान था।

लड़का तो उस मकान को देख कर बहुत खुश हो गया कि उसका मकान कितना बड़ा और सुन्दर था। लड़के ने सोचा "कोई आश्चर्य नहीं कि मेरी मॉ इतने सुन्दर मकान में जरूर लौटना चाहती होगी। वह उस जंगल की छोटी सी झोंपड़ी में रही भी कैसे होगी।"

उस सुन्दर घर के दरवाजे खुले पड़े थे। लड़का और उसकी मॉ उस घर में घुसे और एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम घूम कर उसे देखा। सब कुछ वहॉ वैसा ही पड़ा था जैसा वे लोग उसको छोड़ कर गये थे।

मॉ ने अपनी सारी चीज़ें पहचान लीं। वे सब वहॉ वैसी ही थीं जैसी वह उनको छोड़ कर गयी थी। घर में केवल एक कमरा था जो बन्द था और वह अन्दर से बन्द था। लड़का और उसकी मॉ उस रात अपने घर में सोये।

सुबह वे फिर शहर की सूनी सड़कों पर घूमे पर वहॉ उनको न तो कोई दिखायी ही दिया और ना ही किसी की आवाज ही सुनायी दी। वह शहर तो मरे हुओं का सा शहर लग रहा था।

कुछ देर बाद उनको भूख लग आयी। अब शहर के अन्दर तो कोई था नहीं जिससे वे कोई खाने का सामान खरीदते सो जैसे कि उस लड़के को अपनी सारी ज़िन्दगी आदत पड़ी हुई थी वह खाना ढूँढने के लिये शहर के बाहर जंगल चला गया।

मॉ अपने पुराने घर में अपने बेटे का इन्तजार करने के लिये लौट आयी। जैसे ही वह ऊपर गयी तो उसने वह बन्द कमरा खुला हुआ देखा। उस कमरे में एक बड़े साइज़ का आदमी[73] खड़ा था।

यह तो इतने बड़े साइज़ का आदमी था कि उसने इससे पहले इतने बड़ा बड़े साइज़ का आदमी कभी देखा ही नहीं था। उसके घर के कमरे बहुत ऊँचे ऊँचे थे फिर भी वह बड़े साइज़ का आदमी उनमें बहुत झुक कर खड़ा हो पा रहा था।

वह बड़े साइज़ का आदमी इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी आवाज से सारा घर हिल गया — "तुम कौन हो और यहॉ मेरे घर में क्या कर रही हो?"

लड़के की मॉ जो इतने साल जंगल में रही थी इतनी आसानी से डर जाने वाली नहीं थी सो वह भी उस बड़े साइज़ के आदमी पर अपनी सबसे तेज़ आवाज में चिल्लायी — "तुम कौन हो और तुम मेरे घर में क्या कर रहे हो?"

[73] Translated for the word "Giant"

इससे कोई यह तो सोच ही सकता है कि वह बड़े साइज़ का आदमी उसको उसकी इस हरकत पर तुरन्त ही मार देता पर हुआ इसका उलटा।

उस स्त्री के इस जवाब ने उसको इतना खुश कर दिया कि वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और इतनी ज़ोर से हॅसा कि उसको गिरने से बचने के लिये दीवार का सहारा लेना पड़ गया।

जब उसकी हॅसी थोड़ी सी रुकी तो वह बोला — "तो तुम यह समझती हो कि यह घर तुम्हारा है? तो मैं बताता हूॅ कि हम लोग क्या करें। तुम मुझे अच्छी लगीं तो अगर तुम मेरी पत्नी बन जाओ तो क्यों न हम दोनों इस मकान में साथ साथ रह लेते हैं।"

बड़े साइज़ के आदमी को इस तरह से बोलते सुन कर लड़के की मॉ भी थोड़ा आश्चर्य में पड़ गयी। जब वह भी उस आश्चर्य से बाहर निकली तो बोली — "मैं अकेली नहीं हूॅ। मेरा बेटा मेरे साथ है। वह हम लोगों के लिये खाना लाने के लिये अभी जंगल गया है। बस वह किसी भी पल आता ही होगा।"

"तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारे बेटे को बहुत जल्दी मार दूॅगा जैसे मैंने इस शहर के दूसरे लोगों को मारा है।"

लड़के की मॉ बोली — "तुम मेरे बेटे को इतनी आसानी से नहीं मार सकते जितनी आसानी से तुम उसको मारने की सोचते हो। वह बड़े घने जंगल में पल कर बड़ा हुआ है और इस शहर के लोगों से

बहुत ज़्यादा ताकतवर है। उसकी इस ताकत के अलावा उसके पास मॉ के प्यार का जादू का कवच[74] भी है।"

"मैं नहीं जानता कि मॉ के प्यार के जादू का कवच क्या होता है। और मुझे याद भी नहीं पड़ता कि मैंने उसे कहीं देखा भी है। फिर भी मैं तुमको पसन्द करता हूॅ।

और क्योंकि मैं तुमको पसन्द करता हूॅ इसलिये मैं तुम्हारे बेटे को इस तरह से मारने की कोशिश करूॅगा जिससे उसको कम से कम कष्ट हो। मुझे लगता है कि तुमने अभी यह कहा था कि बस वह अभी किसी भी पल आता होगा।

तो तुम ऐसा करो कि यहॉ लेट जाओ और बीमार होने का बहाना करो। जब तुम्हारा लड़का आये तो उससे कहना कि तुम्हारी ऑखों में बहुत दर्द है।

और क्योंकि तुम बहुत सालों तक जंगल में रही हो इसलिये तुम यह तो तुम जानती ही होगी कि ऑखों के दर्द की सबसे अच्छी दवा जंगल में रहने वाले कोबरा[75] का तेल है।

सो यह कह कर उस लड़के को कोबरा का तेल लाने के लिये फिर से जंगल भेज देना और मैं वायदा करता हूॅ कि एक बार वह यहॉ से गया तो वह फिर वहॉ से कभी वापस नहीं आ पायेगा। मैं अब कमरे के अन्दर जा रहा हूॅ और उसको बन्द कर लूॅगा ताकि

[74] Translated for the word "Armor" – a dress to be worn for protection normally during the war.
[75] Cobra is a very poisonous large snake

लड़का मुझे देख ही न सके। पर मैं दीवार में से सुनता रहूँगा कि तुमने मेरा कहा किया कि नहीं।"

उसी समय उसने लड़के के कदमों की आहट और उसकी खुशी की आवाज सुनी। वह तुरन्त ही कमरे के अन्दर चला गया और अन्दर से उसका दरवाजा बन्द कर लिया।

लड़के की माँ अपनी आँखों पर कपड़ा ढक कर लेट गयी और ज़ोर ज़ोर से कराहने लगी। उसने सोचा कि "बड़े साइज़ के आदमी को तो मेरे लड़के की ताकत और होशियारी का बिल्कुल पता ही नहीं है।" सो वह अपने कराहने के बीच बीच में मुस्कुराती रही।

लड़का जैसे ही कमरे में घुसा तो माँ के कराहने की आवाज सुन कर उसने उससे पूछा — "अरे यह मेरे पीछे तुम्हें क्या हो गया माँ।"

उसकी माँ ने उससे वही कहा जो बड़े साइज़ के आदमी ने उससे कहने के लिये कहा था कि उसकी आँखों में दर्द हो गया है और केवल जंगल के कोबरा का तेल ही उसको ठीक कर सकता है सो उसको कोबरा का तेल चाहिये।

लड़के को पता था कि कोबरा का तेल लाने में कितना खतरा था पर उसने ज़िन्दगी में कभी अपनी माँ की बात नहीं टाली थी सो वह तुरन्त ही वापस जंगल की तरफ चल दिया। काफी खतरों का सामना करने के बाद उसने कोबरा का तेल हासिल कर लिया।

तेल ले कर वह शहर की तरफ चला तो रास्ते में उसको एक बुढ़िया मिली जो अपने कन्धे पर एक बहुत बड़ा डंडा लिये जा रही थी। उस डंडे से कई ज़िन्दा मुर्गियॉ नीचे सिर किये लटकी हुई थीं। वह उनको बाजार ले जा रही थी।

वास्तव में वह होली मदर[76] थी जो उस लड़के की मॉ की प्रार्थना पर उसकी सहायता करने आयी थी।

वह बुढ़िया बोली — "मेरे बच्चे तुम कहॉ जा रहे हो?"

लड़के ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उसको अपना लाया कीमती तेल दिखाया जो वह कोबरा से निकाल कर लाया था।

बुढ़िया बोली — "वह दिन आ रहा है बेटा वह दिन आ रहा है जब सचमुच में तुमको कोबरा के तेल की जरूरत पड़ेगी पर वह दिन आज का दिन नहीं है।

आज के दिन तो तुम्हारा मुर्गी के तेल से ही काम चल जायेगा। तुम मेरी एक मुर्गी मार लो और उसका तेल इस्तेमाल कर लो। पर यह कोबरा का तेल मेरे पास छोड़ दो ताकि मैं इसे उस दिन के लिये सुरक्षित रख लूँ जिस दिन तुमको इसकी जरूरत पड़ेगी।"

लड़के ने उस बुढ़िया की सलाह मानी और उसकी एक मुर्गी मार ली। फिर उसने अपना लाया कोबरा का तेल उसको दिया और उस मुर्गी का तेल ले कर अपनी मॉ के पास चल दिया।

[76] Holy Mother – Holy Mother is Mary, Jesus' mother

क्योंकि उसकी मॉ की ऑखों को तो कुछ हुआ नहीं था सो मुर्गी के तेल से ही उसकी ऑखें उसी तरह से ठीक हो गयीं जैसे कोबरा के तेल से होतीं। पर लड़के और बुढ़िया के अलावा एक और था जो इस भेद को जानता था।

जब लड़का बाहर चला गया तो बड़े साइज़ का आदमी कमरे से बाहर निकला और उसकी मॉ से बोला — "सचमुच तुम्हारा बेटा बहुत बहादुर है। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि वह कोबरा के तेल की खोज में जाने की भी हिम्मत भी कर सकता है। उसको लाने की बात तो छोड़ो।"

लड़के की मॉ बोली — "तुम नहीं जानते कि हम एक दूसरे को कितना प्यार करते हैं।"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "मैं तुम्हारे बेटे की ताकत और होशियारी का एक और सबूत चाहता हूॅ। कल तुम उससे अपनी कमर के दर्द की शिकायत करना कि मेरी कमर में बहुत दर्द है और अपने बेटे को अपनी कमर के दर्द को ठीक करने के लिये साही[77] का तेल लाने के लिये भेजना। यह मेरा हुक्म है।"

सो अगले दिन जैसा कि बड़े साइज़ के आदमी ने उससे कहने के लिये कहा था उसने अपने बेटे से कहा कि आज मेरी कमर में बहुत

[77] Translated for the "Porcupine". Porcupine is an animal having long and sharp needles all over his body. See its picture above.

दर्द है। और वह इसके अलावा और कुछ नहीं कर सकती कि वह उसको ठीक करने के लिये उसके ऊपर साही का तेल लगाये।

लड़का बेचारा फिर जंगल गया और उसने एक साही का तेल निकाल लिया।

जब वह घर वापस आ रहा था तो उसको रास्ते में एक बुढ़िया मिली जो वास्तव में नौसा सिन्होरा[78] थी। वह भी मुर्गियॉ लिये जा रही थी।

उसने लड़के से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो बेटे?"

लड़के ने उसको अपनी कहानी सुनायी और बताया कि वह अपनी मॉ के कमर के दर्द के लिये जंगल से साही का तेल ले कर जा रहा था ताकि उसको लगा कर उसका कमर का दर्द ठीक हो सके।

तो उस बुढ़िया ने उससे कहा — "यह साही का तेल तुम मेरे पास छोड़ दो मेरे बेटे। यह मैं तुम्हारे लिये कल तक रखूॅगी जब तुमको इसकी बहुत जरूरत पड़ेगी। आज तो तुम्हारा काम एक मुर्गी के तेल से ही चल जायेगा।"

सो उस लड़के ने अपना लाया साही का तेल उसको दिया उसकी एक मुर्गी मारी और उसका तेल ले कर अपने घर की तरफ चल दिया।

[78] Nossa Senhora – maybe some goddess of Brazilians.

उसकी मॉ को तो कोई बीमारी थी ही नहीं सो एक बार फिर वह उस मुर्गी के तेल से ठीक हो गयी जैसे वह साही के तेल से ठीक हो जाती।

अबकी बार बड़े साइज़ का आदमी कमरे से निकल कर बाहर आया और लड़के से कहा — "ओ लड़के तू तो सचमुच ही बहुत ताकतवर और होशियार है।"

अब लड़के ने तो कोई बड़े साइज़ का आदमी पहले कभी देखा नहीं था सो उसे देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। इससे पहले कि वह अपने आश्चर्य से बाहर आता कि उसने लड़के को एक रस्सी से कस कर बॉध लिया।

वह बोला — "अगर तू वाकई बहुत ताकतवर है तो मेरी इस रस्सी को तोड़। और अगर तू इस रस्सी को नहीं तोड़ पाया तो मैं अपनी तलवार से तेरे पॉच टुकड़े कर दूँगा।"

लड़के ने अपनी सारी ताकत लगा कर उस रस्सी को तोड़ने की कोशिश की पर वह उसे नहीं तोड़ सका। वह इतना ताकतवर भी नहीं था जो उस रस्सी को तोड़ सकता। यह देख कर बड़े साइज़ का आदमी हॅसने लगा।

जब लड़के की मॉ ने देखा कि उसके बेटे से रस्सी नहीं टूट पा रही है तो वह बड़े साइज़ के आदमी के सामने अपने घुटनों पर बैठ गयी और रो कर बोली — "तुम मेरे साथ कुछ भी कर लो पर मेरे बेटे को छोड़ दो।"

बेरहम बड़े साइज़ का आदमी उस स्त्री की प्रार्थना सुन कर बहुत हॅसा।

जब लड़के की मॉ ने देखा कि वह उसको अपने बेटे को मारने से नहीं रोक पा रही है तो वह फिर उससे बोली — "अगर तुम मेरी यह इतनी बड़ी प्रार्थना नहीं सुन रहे तो मैं तुमसे एक बहुत ही छोटी सी प्रार्थना करती हूॅ। कम से कम तुम वही मान लेना।

जब तुम मेरे बेटे को पॉच टुकड़ों में काटोगे तो तुम उसको अपनी तलवार से नहीं बल्कि उसके पिता की तलवार से काटना। वह तलवार हम अपने जंगल के उस घर से ले कर आये हैं जहॉ हम रहते थे।

उसके बाद उसके शरीर को उसके पिता के घोड़े से बॉध देना उसे भी हम जंगल से ले कर आये हैं। फिर उसको खुला छोड़ देना ताकि वह इधर उधर घूम सके।

हो सकता है कि वह वापस जंगल ही चला जाये जहॉ से मैं अपने बदकिस्मत बेटे को तुम्हारे पास यहॉ मरने के लिये ले कर आयी थी।"

उस बड़े साइज़ वाले आदमी ने वैसा ही किया। उसने लड़के के पिता की तलवार से उस लड़के को पॉच हिस्से किये और उनको उसके पिता के घोड़े से बॉध दिया।

घोड़ा लड़के के शरीर को ले कर जंगल की तरफ दौड़ लिया। शहर से बाहर जा कर उसको एक बुढ़िया मिली जो वास्तव में नौसा सिन्होरा थी।

उसने लड़के के शरीर के पॉचों हिस्से लिये और उन पर साही का तेल मल दिया। इससे वे सारे हिस्से ठीक से जुड़ गये।

तब उसने लड़के से पूछा — "क्या तुम्हें किसी चीज़ की कमी महसूस हो रही है?"

लड़के ने अपनी टॉगें महसूस कीं अपनी बॉहें महसूस कीं अपने कान महसूस किये अपने बाल महसूस किये फिर बोला — "मेरे पास सब कुछ है सिवाय ऑखों की रोशनी के।"

बुढ़िया ने कोबरा का तेल निकाला और उसकी ऑखों पर मल दिया। तुरन्त ही उसकी ऑखों की रोशनी भी वापस आ गयी और वह देखने लगा।

तब उसने देखा कि वह बुढ़िया तो होली मदर थी। वह तुरन्त ही उसका आशीर्वाद लेने के लिये उसके पैरों पर झुका पर वह तो तब तक गायब हो गयी थी।

अपनी नयी ताकत के साथ अब वह लड़का शहर की तरफ चल दिया। शहर पहुॅचते पहुॅचते उसको रात हो गयी थी। बड़े साइज़ का आदमी तब तक सो गया था।

उसने अपने पिता की तलवार ली और उसे बड़े साइज़ के आदमी के शरीर में घुसेड़ दिया। बड़े साइज़ के आदमी ने बिना

जागे हुए ही यह कहते हुए करवट ली "ओह आज मच्छर बहुत हैं।" और फिर सो गया।

लड़के ने देखा कि बड़े साइज़ के आदमी की अपनी बड़ी तलवार जमीन पर पड़ी हुई थी। उसने उसे उठाने की कोशिश की पर वह तो इतनी भारी थी कि वह तो उसे उठा ही नहीं सका। पर फिर किसी तरह से खिसकाते हुए उसने उसे बड़े आदमी के शरीर में घोंप दिया। इससे वह बड़े साइज़ का आदमी तुरन्त ही मर गया।

जब लड़के की मॉ ने अपने बेटे से उसकी कहानी सुनी और बड़े साइज़ के आदमी को वहॉ मरा पड़ा देखा तो उसने कहा — "मॉ के प्यार के कवच का जादू होली मदर की सहायता से लड़के को सब खतरों से बचायेगा।"

17 छोटे केंकड़े की जादुई ऑखें[79]

एक बार की बात है कि ब्राज़ील में एक केंकड़ा रहता था। उसकी ऑखें जादुई थीं। कैसे? कि वह अपनी ऑखों को बाहर निकाल कर उन्हें समुद्र के ऊपर उड़ा सकता था और फिर उन्हें वापस बुला कर अपने सिर में लगा सकता था।

बस उसे केवल यह कहना होता था कि "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।"

छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर में से निकलतीं और बाहर निकल कर समुद्र पर घूमने चली जातीं। छोटे केंकड़े की ऑखें समुद्र के किनारे पर समुद्र का रेतीला तला देखतीं और दूर नीला गहरा समुद्र देखतीं। वे मूँगे की पहाड़ियों के आसपास घूमती हुई रंगीन मछलियॉ देखतीं और और भी बहुत सारी चीज़ें देखतीं।

जब छोटा केंकड़ा यह देखते देखते थक जाता तो वह अपनी ऑखों से कहता "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।"

तो वे उसके पास वापस आ जातीं और आ कर उसके सिर पर लग जातीं। यह उसके लिये एक अच्छा खेल था।

---

[79] The Magic Eyes of Little Crab. A folktale from Brazil. Taken from the Web Site : https://www.mikelockett.com/storytelling?rec_id=200

एक दिन जब छोटा केंकड़ा अपनी ऑखों से खेल रहा था तो वहॉ एक चीता[80] आ गया। तभी छोटे केंकड़े ने अपनी ऑखों से कहा "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीते ने सुना छोटा केंकड़ा कह रहा था "ओह कितना सुन्दर है।" कुछ देर बाद छोटे केंकड़ा बोला "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।" तो उसने देखा कि छोटे केंकड़े की ऑखें वापस आयीं और उसके सिर पर लग गयीं।

चीता आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसने केंकड़े से पूछा — "केंकड़े भाई यह तुम क्या कर रहे हो?"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं अपनी ऑखों के साथ खेल रहा हूॅ। मैं अपनी ऑखें अपने सिर से बाहर निकाल सकता हूॅ और उन्हें गहरे नीले समुद्र के ऊपर उड़ने के लिये भेज सकता हूॅ। और फिर जब चाहूॅ मैं उन्हें वापस बुला सकता हूॅ। मैं जब ऐसा करता हूॅ तो मैं सुन्दर सुन्दर चीज़ें देख सकता हूॅ।"

चीते ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के यह खेल मुझे भी एक बार दिखाओ न।"

[80] Translated for the wor "Jaguar". It is like panther or Cheetah like animal.

सो छोटा केंकड़ा बोला — "ओ मेरी ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" छोटे केंकड़े की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीते ने पूछा — "अब तुम मुझे बताओ कि तुम क्या देख रहे हो?"

छोटा केंकड़ा बोला — "मुझे समुद्र के किनारे के पास समुद्र का रेतीला तला दिखायी दे रहा है। इसके अलावा मैं दूर का गहरा नीला पानी भी देख सकता हूँ।"

चीता बोला — "अब तुम अपनी ऑखें वापस लाओ।"

छोटा केंकड़ा बोला — "ओ मेरी ऑखें अब समुद्र पर से वापस आ जाओ।" तो उसने देखा कि छोटे केंकड़े की ऑखें वापस आयीं और आ कर उसके सिर पर लग गयीं।

चीता बोला — "केंकड़े भाई यह तो बड़ी मजेदार चीज़ है। ऐसा मेरे लिये भी कर दो न।"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं कर तो सकता हूँ पर मैं करूँगा नहीं क्योंकि यह बहुत खतरे वाला काम है। समुद्र में एक बहुत बड़ी मछली रहती है। उसका नाम है ऊन्हालून्का मछली।[81] हो सकता है वह आपकी ऑखों को देख ले और फिर समुद्र में से निकल कर उन्हें खा ले।"

[81] Oonhaloonka fish

चीता बोला — "मैं ऐसी बेवकूफ मछलियों से नहीं डरता। तुम बस मेरी ऑखों को समुद्र के ऊपर भेजो नहीं तो देख लो तुम्हें इसके लिये बहुत पछताना पड़ेगा।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा डर गया। वह तुरन्त बोला — "ओ चीते की ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" चीते की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

चीता तुरन्त ही चिल्ला कर बोला — "ओह यह सब कितना सुन्दर है। अब मुझे भी समुद्र के किनारे के पास के समुद्र का रेतीला तला दिखायी दे रहा है। इसके अलावा मैं दूर का गहरा नीला पानी भी देख सकता हूॅ। मूॅगे की पहाड़ियों के पास छोटी छोटी रंगीन मछलियॉ भी तैरती देख सकता हूॅ।"

कुछ पल बाद छोटा केंकड़ा बोला — "ओ चीते की ऑखें अब समुद्र के ऊपर से वापस आ जाओ।" तुरन्त ही चीते की ऑखें वापस आ कर उसके सिर पर लग गयीं।

चीता बोला — "केंकड़े भाई यह तो बहुत ही बढ़िया रहा। मेहरबानी कर के इसे दोबारा करो।"

छोटा केंकड़ा बोला — "मैं ऐसा कर तो सकता हूॅ पर मैं करूॅगा नहीं क्योंकि यह बहुत खतरे वाला काम है। समुद्र में एक बहुत बड़ी मछली रहती है। उसका नाम है ऊन्हालून्का मछली। हो सकता है वह तुम्हारी ऑखों को देख ले और फिर समुद्र में से निकल कर उन्हें खा ले।"

चीता बोला — "मैं ऐसी बेवकूफ मछलियों से नहीं डरता। तुम मेरी ऑखों को समुद्र के ऊपर भेजो नहीं तो देख लो तुम्हें इसके लिये बहुत पछताना पड़ेगा।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा फिर डर गया। वह तुरन्त बोला — "ओ चीते की ऑखें जाओ और समुद्र के ऊपर घूम कर आओ।" चीते की ऑखें उसके सिर से निकलीं और समुद्र देखने चली गयीं।

पर तभी ऊन्हालून्का मछली ऊपर आयी और चीते की ऑखों को खा गयी। चीता चिल्लाया — "केंकड़े भाई मैं कुछ नहीं देख सकता सब ॲधेरा हो गया है। मेरी ऑखें वापस लाओ।"

छोटा केंकड़ा बोला — "चीते भाई मैं आपकी ऑखें वापस नहीं ला सकता। ऐसा लगता है कि जिसका मुझे डर था वही हुआ। ऊन्हालून्का मछली आयी होगी और आपकी ऑखें खा गयी होगी।"

चीता छोटे केंकड़े को धमकाते हुए बोला — "केंकड़े भाई मेरी ऑखें वापस लाओ नहीं तो तुम बहुत पछताओगे।"

यह सुन कर छोटा केंकड़ा फिर डर गया और जा कर एक बड़े पत्थर के नीचे छिप गया। चीता कुछ न देख पाने की वजह से बहुत गुस्से में था। वह इधर उधर भागने लगा और न देख पाने की वजह से कभी किसी से और कभी किसी से टकराने लगा।

एक गिद्ध ऊपर से उसका भागना देख रहा था। वह नीचे आया और चीते से पूछा — "चीते जी। आप क्यों चिल्ला रहे हैं और क्यों इधर उधर भागे भागे फिर रहे हैं।"

चीता बोला — "मैं इसलिये चिल्ला रहा हूँ क्योंकि छोटे केंकड़े ने मेरी ऑखें ले ली हैं और वह मुझे वापस नहीं दे रहा।"

गिद्ध बोला — "मैं आपको नयी ऑखें ला कर दूँगा अगर आप मेरा खाना ढूँढने में मेरी सहायता करें तो।"

चीता तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गया और गिद्ध दो ब्लूबैरीज़ लाने के लिये उड़ गया। जल्दी ही वह ब्लूबैरीज़ ले कर आ गया और चीते की ऑखों के गड्ढों में लगा दीं। अब वह पहले की तरह से देखने लगा।

चीता बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद गिद्ध भाई। आज के बाद जब भी मैं या मेरे परिवार का कोई भी सदस्य कोई भी शिकार करेगा तो उसके ढॉचे का मॉस और हड्डियॉ तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिये छोड़ देगा।"

आज तक भी जब भी चीते या उसके परिवार वाले कोई शिकार करते हैं तो उसका कुछ हिस्सा गिद्ध के लिये छोड़ देते हैं। उधर आज तक केंकड़े भी चीते के डर से समुद्र के किनारे चट्टानों के नीचे छिपे रहते हैं।

List of Stories of “Folktales of South America”

1. The Children of the Sun
2. Fox's Warm Bargain
3. Armadillo's Song
4. After the Great Fire
5. How Brazilian Beetles Got Their Coat
6. Moonstruck
7. The Adventures of the Fisherman's Son
8. The Legend of Waterfall
9. The King of the Birds
10. 10. A Giant's Pupil
11. The Disobedient Son
12. Domingo's Cat
13. The Qwest of Cleverness
14. The Legend of Mafumeira
15. The Most Beautiful Princess
16. The Forest Lad and the Wicked Giant
17. The Magic Eyes of Little Crab

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022